शिक्षा विभाग, राजस्थान
के लिये


सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बिस्सों का चौक, बीकानेर

कोरणी कामणी

सम्पादक

अन्नाराम सुदामा



द्वितीय संस्करण 1982

प्रकाशक : शिक्षा विभाग राजस्थान के लिये सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर / मुद्रक : नाइस आफसेट प्रिन्टस दिल्ली-३२ / प्रथम संस्करण : ५ सितम्बर १९७९ / आवरण : सुकुमार चटर्जी / मूल्य : नौ रुपये चौंसठ पैसे

KORNEE KALAM REE (Rajasthani Vividha)
Edited by : Anna Ram 'Sudama' Price Rs. 9.64 P.

आमुख

मेरे विचार में अब विभाग की शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना का परिचय देने की आवश्यकता नही रही है। इस सुपरिचित योजना के अन्तर्गत प्रकाशित शिक्षक रचनाकारों की साहित्यिक कृतियों का सर्वत्र स्वागत हुआ है और देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओ मे इन प्रकाशनों की चर्चा हुई है। प्रसन्नता का विषय है कि साहित्य सृजन को गति देने मे राजस्थान ने अन्य राज्यों के समक्ष एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

योजना के प्रारम्भिक वर्षों में प्रयत्न यह रहा कि शिक्षक साहित्यकारो की सर्जनात्मक प्रतिभा को प्रकाश में लाया जाय। एक सीमा तक विभाग का यह प्रयास सफल रहा है। वस्तुत. शिक्षक दिवस प्रकाशनो ने राज्य मे शिक्षक साहित्यकारो की एक पीढ़ी तैयार की है। राज्य के इन अग्रणी रचनाकारो ने नई-नई विधाओं और शैलियो में नये-नये प्रयोग किये हैं और अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति दी है। इनकी रचनाओं ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान कायम की है। अब आवश्यकता यह है कि अधिकाधिक संख्या मे नये-नये लेखक इन प्रकाशनो से प्रेरित होकर अपनी लेखन प्रतिभा को विकसित करें।

शिक्षक दिवस प्रकाशनों को पल्लवित, पुष्पित करने में देश के लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। समय समय पर हमारे अनुरोध पर इन प्रख्यात साहित्यकारों ने प्रकाशनों का संपादन-दायित्व वहन कर अंकुरित होते रचनाकर्मियों का मार्ग प्रशस्त किया।

आज तक इस योजना के अन्तर्गत कुल इकसठ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। संख्यात्मक दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

इस वर्ष के पांच प्रकाशन और उनके संपादक हैं—

१. एक कदम आगे (कहानी संकलन) : संपा० ममता कालिया

२. लगभग जीवन (कविता संकलन) : संपा० लीलाधर जगूड़ी

३. जीवत यात्रा का कोलाज/नं० ?

(निबंध संकलन) : संपा० डॉ० जगदीश जोशी

४. कोरणी कलम री

(राजस्थानी संकलन) : सपा० अन्नाराम सुदामा

५. ये किताब बच्चों की

(बाल साहित्य) : सपा० डॉ० हरिकृष्ण देवसरे।

सम्पादकों को अपनी अपनी विधाओं मे महारत हासिल है। इन यशस्वी सम्पादको ने अल्पावधि मे ही ढेर सारी रचनाओं मे से चयन कर संपादन किया इसके लिए मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। मुझे विश्वास है इनके द्वारा संपादित प्रकाशनो का पाठक स्वागत करेंगे।

बच्चों के लिए एक अलग पुस्तक प्रकाशित किया जाना इस वर्ष के प्रकाशनो की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। विश्वास है बच्चों को बाल वर्ष मे अपने अध्यापको की यह सौगात पसंद आयेगी।

मैं सभी रचनाकारो को, जिनकी रचनाएँ इन प्रकाशनो के लिए चुनी गई अथवा नही भी चुनी गई, बधाई देता हूँ क्योंकि सभी के सम्मिलित प्रयास से ही इन पुस्तको का प्रकाशन संभव हो सका है। पुस्तकों के प्रकाशक का भी मैं आभारी हूँ।

अनिल वैश्य
निदेशक, प्राथमिक एव माध्यमिक
शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

सम्पादकीय

राजस्थान शिक्षा निभाग, आए साल शिक्षक दिवस पर, राजस्थान रै सृजनशील शिक्षका री रचनावां रा, भिन्न-भिन्न विधावा में केई संकलन छपा'र, छविवन्त करै। मन मे एक प्रश्न उठै, कै शिक्षा विभाग रै इं गोरख धन्धै सू किसा सिट्टा नीपजै है, क्यों करै इत्तो तसियो बो ? सरळ चेतना, सैंज अर जी नै जचतो उत्तर देवै कै "हाँ नीपजै है सिट्टा बीरै, मोत्यां सू ही जादा मूंघा, जिकां री आब में धरती हँसै अर मानखो मुळकै।" विभाग न ठूंठिया खोदै अर न रमतिया वणा वणा'र बजार मे वेचै। बो धरती रो उद्देश्य मूर्तिमन्त करण रो बौपार करै। आपरै बौपार नै कुण को चावैनी ऊँचो करणो ? बाळ प्रतिभा रा, सहस-सहस सूरजमुखी अंखुवा, सिट्टा वणन रै कोड मे, हर साल सरस्वती री धरती पर मूं निकाळै। बा नै खाद चाईजै, यूरिया अर फास्फेट री नही—सृजनशील खाद जिकी मानस रो निर्माण करै। विभाग वी पौध रै रुखाळै गुरुवां री मानस—धरती मे सृजनात्मक, कोई सोई खदाण सोधै। वी नै ऊपर लावण री बहुमुखी योजना वणावै, आ प्रकाशन योजना बी रो ही एक ठोस भाग है। अध्यापका में ऊपर आंवती प्रतिभा री आ खाद, 'ज्यू खरचै त्यू त्यू वढै', काईं अन्त है बीरो ?

अबार आ बरसा मे, उच्च प्रायमिक पाठशाला सू ले'र, उच्च माध्यमिक विद्यालय तांईं, बाळ प्रतिभावा री हस्तलिखित अर मुद्रित पत्र पत्रिकावां, केई जाग्या देखणी में आवै। स्कूल मे एक दो अध्यापक हो जे जागता अर वी खाद रा धनी है, तो बाळ प्रतिभा नै वेगी वधण रो मौको मिलै अर मिलै वीरै चौमुखी छिटकतै डाळां नै गुरु

री अनुभूति रो नुवों अर विस्तृत आकास। काळान्तर मे, कुण जाणै
५ किसी प्रतिभा वाड़ाबन्दी री आंधी इकाई तोड़ती कठै जा पूगै--
जिकै नै मानवता अडीकै। ईं सूं विभाग अर गुरु दोनूं गौरवान्वित हुवै, अर धरती हुवै बड़भागण। विभाग रै बौपार री साख (गुडविल) विद्या अर विवेक रै बजार में लोह लीक बणै। विभाग त्यार करै गुरवा नै अर गुरु करै शिष्या नै। प्रतिभा विकास रो ओ मंगळमय चक्र चालै जितो ही शुभ। ईं सू धरती पर प्राणदायी सुगन्ध री सृष्टि हुवै।

विविधा री सगळी विधावां, एकै कांनी जठै सृजनशील शिक्षक सू जुडी है, बठै बीरी वास आवास री परिधि--जनमानस सू भी। भिन्न भिन्न छेता मे वसतां थकां भी, परिधि बीरी आखो देश ही समझो। वो भीड सू भरयै सहरा में भी है, जठै आम आदमी मसीन बण्यो घडी रै सूइया दांई सर्म रै घेरै मे बन्ध्यो है। बठै कुठा, पीड़ा, शोषण, हत्या, आत्महत्या, ठगी, चोरी, घूसखोरी, पाकेटमारी अर बेईमानी सै मिलै। बठै अर्यचालित जीवण है, स्वाभाविक कम अर बणावटी जादा। वो प्रकृति रै खुल्लै अंचळ मे भी है, जठै स्वाभिमान सूं सिर उठाया डूंगर-डूंगरघा री धरती है, बीरी गोद मे कठै ही आरसी सा ऊजळा, अर धब्बा खावती दड़ी सा उछळता ताळ अर झीला है। सीढ़ीनुमा खेत, बांरै आसै पासै छोटा छोटा गांव अर उदास झूंपड़्या री बस्त्यां झुरमुटा मे विखरी। भील, कांजर मीणा, बावरी, आदिवास्या रा टाबर अर कठोर प्रकृति सूं जूझता वारा अपढ अभिभावक। वो बठै ही है जठै थार री धरती पर, उप-निवेसवादी सा अणमीत धोरा, अर बांसूं घिरघा गांव अर छीदी-छीदी ढाण्या। बांसू निकळ निकळ आंवता, अधभूखा, अधनागा अर उवाणा भोळा टाबर। वांरा अभिभावक प्रकृति री उदासी सू लडता, आंधी परम्परावा मे डूब्या अर गळत व्यवस्था सूं दुख पांवता जीवण यापन करै।

प्रकृति रै भिन्न भिन्न परिवेश नै ओढतै, अनुभवतै, सृजनशील अध्यापक रा चितराम सिद्धहस्तता अर गुणात्मकता लिया ऊंचा अर अनूठा हुणा चाहीजै हा। वा में जठै सहरी घुटन अर कृत्रिमता रै विरुद्ध विद्रोह रा स्वर गूंजणा चाहीजै हा, बठै ढाण्यां अर झूपडयां री कसक भी चुप नही रहणी चाईजै ही। भिन्न-भिन्न भू-भागां रा लोक जीवण अर लोक संस्कृति, आं रचनावां मे जे मुखरित हुंता तो निश्चै ही आ एक प्रामाणिक उपलब्धि हुंती। हूं सोचूं हूं विभाग री

ई विविधा रो जिया जिया प्रचार प्रसार हुसी, बहुमुखता लियां
६ सबळी सू सबळी रचनावा आसी। आयोड़ै चितरामां मे घणा ही चितराम इसा है जिका सिद्धहस्तता कांनी तो नहीं, पण गुणात्मकता कानी जरूर है बै। सिद्ध हस्त हुणं नैं हूँ इत्तो जरूरी को समझूंनी, जित्तो कै लेखक रो, आपरी रचना खातर ईमानदार हुणों है। ईमानदारी री परख आ है, कै बा रचना आसै पासै रै जनजीवण सूं जुडी हुवै। अन्याय अर अन्धविश्वास री प्रतिक्रिया मे बा कोई सळ राख'र नही, खुल'र अभिव्यक्ति करती हुवै। साधारण सूं जुड़'र सामी आवै, बा रचना असाधारण बणै—आज नहीं तो काल अर असाधारण री चिन्ता में, साधारण नैं पूठ दै, बा रचना तीन कौडी सूं ऊपर को उठैनी।

एक सिद्धहस्त लेखक आज जे धरती सू बेमनो हु'र चांद सितारां रा गीत लिखै, धर्म कर्म री मरी परम्परावां नैं कलम रो छिड़को दे'र ग्डी करै, मिनख नैं भगवान बणा'र बीरी अर्चना मे रचना करै, कूडी जासूसी रा किला खड़ा करै, आंधै अर अल्पायु प्रेम अर सस्तै सैक्स रा घासळेटी चितराम उभारै, अर आंधी राजनीति रै साकड़ै छीलरां मे छपछप करतो राग दरबारी आलापै तो बीरो सिद्धहस्त हुणों हूँ बेकार ही नही, घातक समझू हूँ कै बो अणपकी आम चेतना नैं सही दिसा देखण सूं भ्रमित कर, बाधा पैदा करै। आ सिद्धहस्तता नैतिक अपराध है।

वारी सिद्धहस्तता नैं भी हूँ ठीक को समझूंनी जिका अबार रोटी कपड़ै अर सिर घुसोवण घासफूसी आवास नैं तपै, तकै, तरसै बानै कोई निमझर, खन्देड़ो, खेजड़लो, लीलटास, उड उड म्हारा काळा कागला, बाजरी री रोटी ऊपर फोफळियां रो साग, लग ज्यासी तावडियो, मूमल अर मरवण रा गीत सुणावै। बुझतै आदमी नैं चाहीजै स्नेह शक्ति अर सही दिसा, कवि अर गायक बांटै बानै, 'कद म्हारा पिवजी घर आसी'। सन्निपात अर गुजराती आळ नैं कोई ठडाई अर रूहअफजा धामै, तो बीनै घातक ही समझणों चाईजै।

अंमरजंसी रै लम्बा दिनां मे चोटी रै अखबारां मे, आकासगमन करते साधुवांरी चमत्कारी बातां, काळभैरवी अर भूतांरा किस्सा, तन्त्रमन्त्र रा गुप्त अर अनूठा रहस्य महीना महीनां किश्तां में रूपायित हुया। आम चेतना नैं गुमराह करण रो ओ काळो बौपार हो। सिद्धहस्तता री ईसू बेसी दयनीय अवस्था और कांई हुवै ही? ई विविधा में लेखक री पीड जठै आपरी नही आम री रही है, वठै बा

आम पाठक नै दाय आसी। सिद्धहस्तता में जे कीं कमी है तौ ही
१० भविष्य बीरो ऊजळो है। सरूप देखतां सम्भावना नै सूरजमुखी आंकणी चाईजै।

'आ कोई बात है, ब्यावरो विज्ञापन, ठंडी मुळक, बाळगोठियो, दूजो चक्रव्यूह, वखत रो बेली, म्हारी उणरी बात अर तीन जाळी खाणी, कहाण्यां हैं, जिकै मैं पैली कहाणी आंगण सूं स्कूल तांई रो सैंज वातावरण उपस्थित करती एक सबळी अर जीवन्त रचना है। दूजी मे प्रवाह सैंज, भासा मुहावरेदार अर व्यंग उछळतो कूदतो फबै, पण बीमे अतिरंजना बेसी अर असलियत कम है। शब्द गठन मे स्थानीय मोह नही हुतो तो कथा और निखरती। ठंडी मुळक अर वखत रो बेली दोनू ही चरित्र प्रधान है, अर है सरल सम्वेग लियां। बाळगोठियो केई जाग्यां बे जचतै शब्दां सूं बोझिल है। अणओपती आवृत्ति अर अतिरंजना सू बचणी चाईजै ही बा। दूजो चक्रव्यूह, अर म्हारी उणरी बात, विकास खातर दोना नैं ही की-की कैनवास और चाईजै। तीन जाळी खाणी, घटना प्रधान है—कसाव मांगै है। बूजी, ठाकुर सा'ब, म्हारो भोळो भाळो गोपाळ, अर बापडो लीडर रेखा चित्र है। ठाकुर सा'ब रो स्वाभिमान और उभरणों चाईजै हो।···गोपाळ मे शब्दावळी केई जाग्यां अतिरंजित हुगी। फलक की लम्बो हुणो चाईजै हो। 'बूजी' कसाव अर संशोधन चावै है। 'बापडो लीडर' में अभिव्यक्ति स्थानीय संकडाई में कैद है। बीनैं कसाव अर सुधार दोनू ही चाईजै। मिनी कहाण्यां सरल अर प्रेरणादायक है। 'एक जन वैज्ञानिक'—झूठ साच अर अतिरंजना तो लेखक जाणै पण है प्रेरणादायक। इसी रचना में कल्पना अर अन्दाज रो निवास कम खटै। पड़दा भरम रा—वार्तालाप रा बोल, भरम पर चोट करता फिट अर फबता है।

कवितावां मे 'हूँ जनता हूँ' अर 'सूंटो' दोनूं ही बडी काया री है। नैली सबिम्ब अर सबळी है, पण वर्तमान रै परिप्रेक्ष्य मे पग पसारण नैं की जाग्यां और चावै बा। दूसरी री भासा तो मंजी है पण है शब्द जंगळ मे भटकमोडी। बार बार री आवृत्ति सू असली उणियारो ढकतो सो लागै बीरो। सूटो, आंधी, बाढ अर बिरखा जिसा सू प्रार्थना करणी कै थे गरीबां रो ध्यान राख्या, थोथी भावुकता अर अरण्यरोदन है। 'अै हाथ', हाथ सहयोगी हाथां सूं सबळा अर हावी हाथां सू दुबळा वर्ण है—हकीगत है। 'मरूधर बीच' एक तुकान्त सबळी अभिव्यक्ति है। बाकी सगळी, अरदास, आक्रोस, ओळभो,

उपदेस अर खार-खीझ लियां आप आपरो हेलो करै है।

११ गीतां में गीतकार जठै, झरूंटिया, चरूंटिया, भरूंटिया, आवड़ी अर ताकड़ी, जिसी तुकबन्दी खातर हांफळो है बठै गीत रो ढांचो जरूर खड़ो हुवै, पण हुवै प्राण हीण। वीरी पूर्ति कंठां सूं को हुवैनी। सगळां में गेयता है—सैंज है जठै सरसता चोवै है।

आं रचनावां मे सबळी, निबळी अर काम चलाउ—सव तरै री है पण शिक्षक रै बाल संसार री समस्यामूळक, अर वीरै समाव री तह तांई पूगती रचनात्मक, अर प्रेरणादायक कोई अभिव्यक्ति सजीव हु'र को चमकी नी। चमकणी चाईजै ही। घोड़ो गणगोरां नै हीं नहीं, तो फेर कद? बाळक री शिक्षक सू बेसी अभिव्यक्ति करण आळो और कुण हुसी? बो बींरी चेतना सागै रमै, वीनै टंटोळ-टटोळ देखै अर बीमे जीवण भरै ठोक बजा'र, पण बीनै टूटण को दैनी। बो जीवण आगै जा'र राष्ट्र अर विश्व समूचं रै सुख दुख सूं जुड़ै। कोई सृजनशील अध्यापक रा, इसी सिद्धि नै पूगण रा पगोथिया, जे आम अध्यापक रो मार्ग स्सोरो करै—दिसा सूचक बणै तौ कित्तो आछो। साची पूछो तो शिक्षा संसार री सफलता ही ई में है। ओ म्हारो न कींनै ही ओळभो अर न उपदेस, सुझाव है खाली। एक रै अनुभव रो लाभ अनेकां नै मिलै। विविधा, शिविरा अर नया शिक्षक ई खातर ही तो है।

केई केई शिक्षकां री तीन तीन च्यार च्यार विधावा आई, केयां फाईलां री फाईलां अर रजिस्टर रा रजिस्टर भेज दिया। बी जंगळ मे उतरण नै पूरो समै चाईजै। फेर ही कोसीस तो आ ही रही है कै जादा सूं जादा रचनाकार संकलन सागै जुड़ै। दो गद्य रचनावां, ई खातर छोडणी पडी कै बानै पढण खातर कोई सिलालेख बांचणियो चाईजै—पुराणा सिलालेख। एक घडी आंख्यां तेड़ू तो एक पानों ही पूरो पल्लै को पड़ैनी। ई अवस्था मे बानै, मैं सरधा सूं हाथ जोड़'र ही सन्तोस कर लियो। एक पद्य रचना ई खातर छोडणी पड़ी कै बीं मे शब्द पूरा, पण अर्थ सिर पटक्या ही को लाधैनी।

अध्यापकां सूं, छोटी वड़ी मात्रा री गळती री आस तो नहीं करणी चाईजै पण राजस्थानी बोलणी स्सोरी, लिखणों को अभ्यास मांगै। की कोई मोकळो ही समझो। अभ्यास रै अभाव में गळती हुणी कोई अस्वाभाविक नही, ठीक करदी बानै, पण जिकां पर स्थानीयता रो रंग खूब गैरो है बानै औरां खातर तो पछै, पैली आप खातर सोचणो चाईजै कै बांरा सृजनात्मक उणियारा जादा सू जादा पाठक ओळखै

ता वढ़िया है । रचना रो उद्देश्य ही ओ है कै बा जादा सू जादा गळां
१२ मे उतर'र आपरो इष्ट पूरो करै । आ वात ठीक है तो वांनै आम आदमी रा शब्द जिका नैं फुटपाथ रो आदमी बोलै, समझै, तोड़ना मरोड़ना नही चाईजै जियां दिन (दन) खिडकी (खडकी) मिलना (मलना) फटाफट (फट्याफट) साफ (स्याफ), इतिहास (अतहास) आधो (आदो) दूध (दूद) मे (मं) छै (छ) कै (क) इंयां ही और घणां ही शब्द है । हुयो, हुया नैं व्हियो, व्हिया, हूँ नैं म्हूँ, मैं नैं म्हैं अर घणखरै एकलै ओकार माथै 'औ' री डब्बल सवारी जियां धोवणो (धोवणौ) दूजो (दूजौ) दियो (दियौ) मुख-सुख तो कुवै मे पड़ग्यो अै नूंवै पाठक री अडचल और बधावै । बधता पाठक जे सत्तर्क नही चावै आ बात, तो लेखक रै कांई बाई रो ब्याव बिगडै है, बो अणूतो मोह करै ही क्यो ? हां कोई पात्र विसेस आपरी अभिव्यक्ति कठै ही व्हियो अर मूं सू करै तो कोई बात नी—स्वाभाविकता ही है । लेखक एकै कांनी तो संस्कृत, उर्दू अर अंग्रेजी शब्द धड़ल्लै सू काम में लेवै अर दूजै कानी इसो संकोच करै कै आम शब्द री कामा तोड़ मरोड़ ओपरी करदै ।

विभाग री रचनात्मक नीति नैं ध्यान में राखता जादा सू जादा सृजनशील प्रतिभावा नै आए साल सकलना मे रूपायित हुणो चाईजै—खाली बध्या बंधाया शिक्षक ही नही । रचनात्मक सौन्दर्य जितै जादा शिक्षका मे ऊपर आसी वित्तो ही जादा फायदो बाळकां नै पूगसी—मूळ मे आ ही मनस्या विभाग री है । शुभम् भूयात् ।

उदयरामसर (बीकानेर) —अन्नाराम 'सुदामा'

आ ई कोई बात है ?

□ डॉ० नृसिंह राजपुरोहित

टण ! टण ! टणण !

लो स्कूल री दूजोड़ी घंटी ई लागगी । मरिया आज तो । हाल बस्तो जमावणो, मूडो धोवणो अर बाळ ई ओसणा । गैर हाजरी तो लाग इज गी। कितरी ई उतावळ करूं पण ठेट पुगूं जितरै तो छोरा प्रेयर ग्राउंड मायं पूग इज जावैला । मूछंदर पी० टी० आई० हाथ में डंडो लियां मारकणा पाडा रै ज्यूं डोळा काढतो गेट मायं त्यार मिळैला ।···लेट कमरस् एक तरफ ! अलग लाईन ! क्यूं के प्रार्थना खतम व्हिया पछै आप परसाद बांटै लानी, पुरसगारी में कोई लारै नी रैय जावै ।

घर मे कितरी बार कैय दियो के टैमसर नी जागू तो जगाय दिया करो पण कुण परवा करै । उल्टी सतरै बातां सुणवानै मिलै ।···थबै आप कोई बोवो चूघता गीगा कोनी सो आपनै जगावां । सोळै बरस रा टोगड़ा व्हिया । बळद ब्यावै नी अर बूढो व्है नी । चिंता राखनै उठो क्यूं नी टैमसर । जद तो लाट सा'ब आधी रात ताई हें हें-फें फें करता रोवता फिरैला अर अबै फा फू व्हियोड़ा हड़बड़ाट करैला ।...लो बोलो आई कोई बात है ? नीद हाथै खुलती व्है तो थांरी गरज ई कुण करै । घणी ई कोसिस करू पण आख्या तो साळी खुलै इज नी । जोर कर नै माडांणी खोलू तो पाछी बंद व्है जावै । आखी रात में पसवाडो ई फेरण रो काम नी पड़ै । सूता के जाणै गळो वाढियो । एक नींद ई पूरी नी व्है के कूकड़ूं कू ! कूकड़ूं कू ! रीस तो इसी आवै के फजलू मियां रा सगळा कूकड़ा नै पकड़'र दड़बा मे घाल दू ।

दादोसा साव साची कै वै—आ उमर इज इण भातरी । वे किसी उमर कैवै इण नै ?...पनर पच्चीसी ? ना-ना गधा पच्चीसी । आप री गधा

पच्चीसी उमर रा वे कई मजेदार किस्सा सुणावैं । सुणतां-सुणतां हंस-हंस नैं पेट दुखणो भाय जावै ।...पण अबै फुरती करो नीं तो ठेट गयां पेट री ठौड़ हथाळियां दुखणी लाग जावैला ।

बो-गाले गांठाळो गंगाराम हथाळी माथै पड़तां ई सगळो सरीर कासी री थाळी रै ज्यू झरणाट करण लाग जावै । बाळ तो ठीक कर लू थोडा । पण काच है कठै ? म्हूं कंवू इण घर में कदैई कोई चीज ठामै माथै नीं लाधै । काम पड़यां पूछां तो कंधो कठै, कै घट्टी नीचै, काच कठै, कै चूल्हे लारै, पैन कठै कै, सिनानघर में । वे देखो प्पूजी महाराज काच लियां ऊभा । सूरज साम्ही राख नैं चिळकणो करै । अरे अठी दे भई, दौड़ मत । मिनकी रे तो रोळ व्है अर ऊंदरै रो घर भागै । यनैं तो मजा आवै अर अठै जीव री पड़ी । दे-दे, भाई है नीं । अर ओ काच ई कांई ठा मोहन जोदड़ो री खुदाई में सूं निकळयोड़ो के दादीसा रै दायजै मे आयोड़ो । आंख्यां फाड़ नैं नीं देखां जितरै तो पतो ई नी लागै । उण दिन सुलेमान क्लास में साची कै वै हो—अबै थारो ई होठ सावळो पड़ण लागग्यो...होठां पर रूंआळी साफ दीसै । पण ठीक है यार थारै ज्यू रोज उस्तरो तो नीं रगड़णो पड़ै । मियो एक पत्ती रोज खराब करतो व्हैला । ...उतावळ में बाळां में टाळ ई ठीकको नीं पड़ी, पण अबै पड़ी जिकीई चोखी ।

म्हैं कह्यो नीं गेट माथै जमदूत त्यार लाधैला । लो देख लो अबै । बिना बधांवणा किया मांयनै पग ई नीं देवण दे । पण आज तो राम वापरग्यो दीसै । कलेवो करनै नी पधार्‌या व्हैला । मारकणी पाडो ई भूखो व्है जितरै कोई रो नाम नीं लेवै । धाप्यां पछै इज फूफाड़ा करै । नीचो मायो घाल नैं सोकड़ मनायो जिको बात करो । इण में इज खैरियत है । पूठ में दो आंख्यां तीर रै ज्यू खुबती लागै तो लागण दो ।

हेडमास्टरजी पल्टी व्हैनैं नूंवा पधारया । नूंवो मुल्लो जोर सूं बांग देवै । कीं आपनै बोलण रो अणूंतो बळो । बोलणा सरु व्है तो श्रीमान जी बंद ई नी व्है ।...प्यारा विद्यार्थियो !...लो अबै गई आध पूण घंटा री । ऊभां ऊभां टांगड़ा दुखणा भाय जावै पण आपरो भासण पूरो नीं व्है । अर भासण पूरो व्हियो के फौजी ओर्डर त्यार—लेट आवण वाळा सगळाई मुरगा बण जावो । फौरन ! बणा सा बणां ! आप फरमावो तो मुरगा काई कबूतर ई बणांला । अबै तो बारै महीना फेर काढणा है । पछै तो थांरै लारै...

सुलेमानियो क्लास में सैं सूं मोटो गधेड़ो । फेर मुरगो बणै जद तणको तूताड़ व्हे जावै । इण हरामी रै देखादेखी दूजा नैं ई तणको व्हैणो पड़ै । नी तो प्रभात रा पोहर में ढूंगां माथै तड़ाक ! जाणै तकियो झाटकियो । अबै चम-गादड़ा ऊंधी लटकै ज्यू लटक्योड़ा टागड़ां रै बीचली बारी मे होय नै देखबो करो । वे देखो धोती रो एक पल्लो हाथ में लियां सपटक मडाक करता संस्कृत वाळा

पंडितजी पधारै । अबै यां नै पूछो के गुरूदेव कांई स्कूल रा नियम कानून फगत विद्यार्थियां खातर ईज है ? म्हे तो एक मिनट ई लेट आवां तो मुरगा बणो अर गुरू जी एक घंटो लेट पधारै तो चिड़ी बणण रो ई काम नीं । आ ई कोई बात है ? पछै कैवा के विद्यार्थियों में अनुसासन कोनी । अनुसासन तो आप इज सिखावो देवताजी ! 'विद्या ददाति विनयम्' मूंडो थांरो है, कैयबो करो । म्हारै माथै तो इण थोथी वातां रो कीं असर नी पड़ै । अर जे हिम्मत व्है तो पधारो देखांणी, बणो म्हारै भेळा मुरगा अर खमो अेकाधो डंडो । तो जाणो गुरुदेव साची फरमावै ।

"अे सुलेमानिया ! इतरो ऊंचो क्यूं व्है रे हरामी ! थोड़ो नीचो मर नी । थारै लारै सगळां नै ई दोरो व्हैणो पड़ै । अर घणो ऊंचो व्हियां कोई ईनाम तो मिळै कोनीं बेटा !"

"ओ कुण गणभणाट करै रे ? मौत आई है कांई ?...ऊभा व्है जावो सगळाई । चालो आज तो सस्ता में इज छूटा । नीं तो अबार मेंढक चाल रो हुकम व्हैतां ई मुरगा सू डेडरियो बणतां किसी जेज लागती । कईयां रा मूंडा तो देखो लाल चुट्ट व्हैग्या । सागण बांदरा व्है ज्यू लागै । पण मुरगा बण्यां एक आणंद तो है, ऊंधै माथै देखण रो मजो आवै—जाणै सिनेमा चालण लाग्यो ।"

"थैं अंग्रेजी री होमवर्क कर लियो सुलेमान ?"

"कठै कियो यार ! सिम्र्या रा तो सिनेमा देखण नै गया परा अर पछै नींद आयगी । थैं कर लियो ?"

"हां, म्हे तो कर लियो ।"

"नकल टीपी व्हैला बेटा ।"

"जा-जा थारै ज्यू ठोट थोड़ा इज हां

"अरे वाह रे हुंस्यार री पूंछड़ी ।"

"थैं किसो पिक्चर देख्यो रे ?"

"जंगळी ।"

"थूं खुद ई जंगळी है साळा ।"

"अरे यार गजब पिक्चर । कांई तो स्टोरी, कांई सीन सीनेरी अर कांई हिरोईन । बस छम्मक-छल्लो-सटकाबंद । मजो आयग्यो यार ।"

"बाई फादर ?"

"पिता री कसम ।"

"तो कालै फेर म्हारै सागै चालणो पड़सी ।"

"गणितवाळा माट सा'ब ई देखण नै आया । म्हारै अेन लारै इज बिराज्या । मार सिगरेट पर सिगरेट । दो पैकेटतो खतम कर इज दिया व्हैला ।"

"थनै ई बाड़ तो आयगी व्हैला बेटा ?"

"बाड तो आवै इज यार, कोई कनै बैठो यूं धूआधार सिगरेट फूंकै पछै कियां रहीजै बता ?"

"कह्मी कोनी गुरुजी एक फूंक अठीनै ई।"

"इंटरवेल पछै म्हूं तो अळगो जाय नै बैठग्यो।"

"क्लास मे तो श्रीमानजी किसीक मोटी-मोटी वातां करै।"

"सै ठीक है यार, थनै कई असली भेद री बातां बताय दू तो थू मानैलाई कोनी। खुद गुरुजी बैंगण खावै, दूजां नै परमोद बतावै। आई कोई बात है ?"

...अे बरडा मे कुण ऊभा रे ? घंटी सुणी को नीं कांई ? कान फूटोड़ा है ?...मरिया ! भागो ! घुसो क्लास में !

आज बीजगणित री बारी दीसै। माट सा'ब फेक्टर करावै। दूसरां में जावै उणांनै समझ में आवैला। आपानै तो की समझ में नीं आवै। क घात दो अर ख घात च्यार अजब गोरख धंधौ। पिताजी फेर जीव न्यारो खावै—थे स्कूल मे कांई पढो रे ? थां नै साधारण हिसाब ई नीं आवै। म्हे कांई पढ़ा अर कांई नी पढा जिको म्हारो जीव जाणे। एक दिन क्लास में आय नै बैठो तो उा पढ़ै। बिहारी रा दूहा ! अेकूकै दूहे रा तीन-तीन अरथ निकळै।...देखन मे छोटे लगै, घाव करै गंभीर। अर बीजगणित रा फेक्टर नै कामरसियल प्रेक्टिस रा सवाल ? भगवान बचावै। माथो खराब व्है जावै माथो। थांरै जमानै मे कक्कियो कैवळो नै खखियो खाजळो। सिद्धो वरणो नै समा मनाया। घणो जोर तो चिणायकां रट नै कटवामिति सीधी के पढ़ाई पूरी। अठै कितरा तो विषय नै कितरा दूजा अफंडा। फगत एक जणा री सगळी किताबां-कापियां भेळी करनै गधै माथै लादी व्है तो बापड़ो नीठ ऊपाड़ै। उण जमाने मे पाटी नै पैण-बस। खावण नै धापोधाप घी दूध अर माखण रा लूदा। अठै डालडा रा ई जादा पड़ै। उणदिन राम निकळग्यो सो दूध मायली थोडी-सीक मळाई चाटली तो मा ककण लागगी। इण उपरांत तुलना फेर न्यारी करै—रामलालजी रो भंवरियो थारै सूं दो बरस नैनो पण कितरो हुंस्यार ? आवगी दुकान संभाळै। पक्को दुकानदार बण्योड़ो। जवाब मे म्हूं कैय दूं के रोसन कुमार रो बाप उमर मे थासूं ई नैनो पण कितरो हुस्यार ! पूरो जिलो संभाळै। धाकड कलेक्टर बण्योड़ो। तो किसोक खारो लागैला। फालतू मे कोई री अणूती तुलना करणी। आ ई कोई बात है ?

"ओ सुलेमानियो वदमास काई करै ? कोई अंट संट किताब बांचतो व्हैला। ऊपर गणित री किताब रो कवर अर मायनै 'बंगाल का जादू'। अे इणरा रोज रा धंधा।"

"कांई करै रे ?"

"चुप रैय यार !"

"ब्रता तो खरी हरामी थूं वांचै कांई है ?"

"गुलसन नंदा रौ उपन्यास।"

"किसौ ?"

"मन का पंछी।"

"किसौक लाग्यौ रे ?"

"दूजी वात छोड़ दे।"

"थैं खुद मोल लियौ ?"

"ना, भाई सा'ब लाया।"

"...धैड ! धैड ! धैड ! सुलेमान रैं मोरां मे मुक्का उडणा सरु व्हिया। माट सा'ब बी नैं उपन्यास पढतौ देख लियौ। वे उणरैं हाथ सूं उपन्यास खोस नैं सगळा नैं बतावता कैवै—देखलौ इण बदमासां रा मजा (इणरौ मतळब सुलेमान अेकलौ इज बदमास नी है)...रात नैं सिनेमा मे रोवता फिरैला। रीसिस में बाउंडरी बारै जाय नैं बीड़ियां फूंकैला अर गणित रा घंटा मे 'मन का पछी' वांचैला। मन में तो आई के उठ नैं कैय दू के गुरुदेव सिनेमा मे तो आप ई भेळा इज हा। रही बात धूम्रपान री सो आप सिगरेट अरोगौ अर ओ बापड़ो बीड़ी पीवै—इतरौ फरक जरूर है।...नोनसेंस ! ईडियट ! गेट आउट ! मोनीटर इणनै हेडमास्टर जी कनै ले जा ! सगळी बात बताय दीजे !...पण रीसिस री घंटी लागगी अर सगळो नाटक उठै इज रुकग्यौ।"

'दिलूगै ई मुक्का पड्या बापड़ै रे अर सगळां र सांम्ही बेइज्जती न्यारी व्ही। मियै नैं राजी करणौ पड़सी। कठी गयौ ? बारै निकळ ग्यौ दीसै।"

"असलाम उलेकम खां सा' ब !"

"चुप रैय यार।"

"क्यूं हजुर री तबियत की खराब है ?"

"मजाक मत कर यार।"

"तो व्हियौ कांई साळा ? मुक्का तो कुल तीन पड़्या। बारैं तो माखी ई नी उडी व्हैला।"

"मुक्कां री कुण परवा करै यार !"

"तो पछै कांई दैण है ? क्लास में आपरी बेइज्जती व्ही थूं ?"

"ना रे आंपणी इज्जत फेर कदै ही।"

"तो पछै कांई रोग है ?"

"म्हारी वा किताब माट सा'ब कनै रैयगी। घरैं गयां भाईसा फोड़ैला।"

"कालै पाछी मांग लीजे के सर पढी व्है तो गरीब री किताब तो पाछी

वयसाय दो।"

"हूँ काई यार ! थनै तो मजाकां सूझै अर अठै जीव री पड़ी।"

"तो रोवू किणनै, थनै ? दूजी खरीद लीजै साळा। यू मरू-मरू काई करै।"

"की दिन बीडी सिनेमा बद करणा पड़सी।"

"ठीक इज है। आगलो घंटो किणरो रे ?"

"अंग्रेजी रो।"

"इणरै पछै ?"

"खेती वाडी रो।"

"आहा ! जद तो मजो आयग्यो प्यारा। माची पूछै तो इण घंटा रै अलावा म्हारो तो मन ई नी लागै।"

"नुवा खेती माट सा'व आदमी तो बढिया है।"

"आदमी काई है अणमोल हीरो है।"

"च्यार महीना मे स्कूल रै बगीचै री काया पलट व्हैगी।"

"हर महीनै सब्जी कितरी बिकै ठा है थनै ? च्यार सौ रुपियारी। वेल क्वालिफाईड है ओ आदमी—एम० एस० सी० ए० जी० पण हाथ सू काम कितरो करै ?"

"हा यार पावडो लेय नै माटी खोदण लागै तो जाणै चोधरी टिकियो। इण आदमी रो सरीर ई गजब रो। जाणे तोप रो गोळो।"

"बोली बतळावणी ई कितरी मीठी। जीकारा मिवा तो बात ई नी करै। मुळक तो जाणै मूडै छायोडी।"

"जद इज तो काम करण री मजो आवै यार। म्हा वाळी क्यारी मे मटर देखी ? ताजा करनी नुवी बीनणी रै ज्यू लुळ-लुळ नै जमी पूगी है।"

"अर म्हा वाळो पानग ई किसो फोरो है ? मोटा घर री सेठाणी रै ज्यू पसरतो इज जा रह्यो है। क्यारिया ऊफण आयगी है।"

"इण सेसन मे लागै खेती वाडी सू आपणी अकूकै रै खाते मे दोय-दोय सौ रुपिया जमा व्है जासी।

"ओ सै खेती माट सा'व रो प्रताप है।"

"स्कूल मे मास्टर नाम एक दो इज है यार। बाकी तो सगळी भगार। राज रै खजानै मे सीर है सो पडया चुगै अर गटर गू करै बापडा।"

"उण दिन श्रमदान मे याद है थनै ? खेती माट सा'व तो पावडो लेय नै आपणै भेळा आफळिया अर बाकी सगळा पैंटा री जेबा मे हाथ घाल नै तणका तूतार व्हियोडा अळगा ऊभा। समिति रा प्रधान सा'व ई खांगो पोतियो बांध नै करै त्यार। अर ऊबरड़ा साफ करवा नै विद्यार्थी। क्यू भाई, थां रै

हाथां रै मेहदी लाग्योड़ी है ?"

"अर वे ऊपरली गळी वाला सेठ जी आय नै किसाक बोल्या—म्हारी गळी ई साफ कर दीजो सा ! क्यूं सा ? गळी थांरी अर साफ करां म्हे ! आ ई कोई बात है ? गरज व्है तो पधारो तगारी लेपनै अर ढूको म्हारै भेळा।"

"...अंग्रेजीवाळा मास्टर सा'ब क्लास में गया दीसै। माथै ऊंधता ई आप घणी मोटर सू ब्यारु मेर देखैला—कुण ऊभा व्हिया नै कुण नी व्हिया ? थोड़ा जागीर रा ठाकर नै मुजरै रो अपरतो। पछै आप जोर-जोर सू नाक मे बोलैला—सिट डांन ! सिट डांन ! उगियारो इज किसो कठोरो—बदर मुगम्। म्हनै तो देखतां इज रीस आवै। ट्यूसनखोर। रोब फेर न्यारो झाडै आप। अंग्रेजी सिवा तो बात इज नी करै। पण गरज व्है जद नख मे चळ जावै।'''अरे भाई सुलेमान ! थाड़ा आपणै घरा आईजै—आंटो पीसावणो है। सुलेमान इज ए गुड बाय। आजकाल ओ मैणत करण लागग्यो है। वैरी गुड ! वैरी गुड !'''डोढ हुस्यार। दूजा नै तो आप सफा बोफा इज समझै।"

"ले सुलेमान चाल यार, उठीनै बारै छियां में बैठा। अंग्रेजी रो घंटो उतरिया क्लास में जावांला।"

"आज ए नोटिस बोर्ड कनै मास्तरियां घणी झीगै रे, काई बात है ? कोई नुवो फरमान निकळ्यो दीसै।"

"थनै ठा कोनी आज अेम० अेल० अे० सा'ब पधार रह्या है। चौथा घंटा बाद स्कूल री छुट्टी है। सगळां नै बारै स्वागत में चालणो है।"

"चुणाव नेड़ा आयग्या दीसै बाकी तो अेमले सा'ब क्यूं तकलीफ देवता। रात री बगत कागला उडणा मांडै जद समझ लेवणो के दुकाळ पड़ण वाळो है।"

"बात तो थारी साची, आ नेतावां री तो जात इज कुजात।"

"भारत में आजादी काई आई जाणै कागला नै खीर मिळी। धांनिया-भगवानिया ई निहाल व्हैग्या।"

"कैवै फेर काई—हम गरीबी हटायेंगे।"

"दूजा री तो ठा कोनी पण यांरी खुद री गरीबी तो हटगी। पांच बरस पैं'ली इण अेमले रै घर में कैवै भुआजी मक्चोड़ा लेवतो। आज पक्का मकान बणग्या अर कारां ई खरीद ली। पूछो इण चोर नै कै थारै बाप कदेई बांडो गयो ई सोनायो ?"

"अर ओ पचायत समिति रो प्रधान ? मणा बद अमल (अफीम) बेच दियो व्हैला इणै। पूरै मोगळ नै अमलदार बणाय दियो।"

"सगळा एक माळा रा मणिया रे। कोई छोटो तो कोई मोटो। अे

मन में जाणता व्हैला के ए छोरा बापड़ा कांई समझें ! पण यां नैं ठा कोनी के अे थांरा ई बाप है ।"

"'टणण ! टणण ! टणणण !

"कांई छुट्टी व्हैंगी रे ?"

"म्हैं कह्यो नी अेमले आवण वाळो है ।"

"पण अेमले तो आवै आपरो पापड़ सेकण नैं अर छुट्टी व्है स्कूल मे—आ ई कोई बात है ?"

ब्याव को विज्ञापन

□ अर्जुन 'अरविंद'

कुमारी कुसुम कळी कोरा बत्तीस बसंत देखी छी। धनवंता बाप की घणी छाँव मे बी० ए० करी, एम०ए० में भरती हुई कै बाप श्रीराम जी की शरण सिधारग्या। कुमारी कुसुम कळी का जीवण में बसंत की रुत आगी। पण वेगी ई भावुकता अर हिम्मत का फूल जीवण की डाळां ऊपर खिलवा लाग्या अर वा बी० एड० को प्रशिक्षण ले'र डावड़यां की इस्कूल में मास्टरणी बणगी।

कुसुम कळी का जीवण मे ठेंराण आयी तो सरवर-सी ठेंरगी। बत्तीस पार कर'र भी वा आपका ब्याव का बारा मे नई सोच सकी। जोवण को फळ खूब पाक'र जद खूब पिलपिलाबा लाग्यो तद कुसुमकळी ईं अणछुया अणभो ने सजोवा की बात सोची। ऊं में एक बिसेसता या छै कै जिस्या काम नै एक बार हाथ मे ले-ले, फेर सगळा गोरखधंधा छोड़'र जुट पड़ै छै अर पूरो करयां पछै ई सांस ले छै। कुसुम कळी का हाथ मे अब यो नुंवो काम आग्यो छो। पण ऊंकै सामै मुश्किल या छी के नुवा काम नै करबा वास्तै पहल कुण सूं कराती? कोई के सामै हाथ फैलाबो वा सीखी ई कोने छी। ईं वास्ते स्वावलंबण की नीत अपणा'र वा आप ई वर खोजबा को निरणै करली।

कुसुम कळी की माली दशा इतनी फोरी कोने छी कै कोई भांत की कमी ऊंका मारग मे रोड़ो घालती। फेर भी बा वर हैरबा कठी जाती? एक दन आपका ललाट का पानां ऊपर ईं उळझाण को गेलो भी वा काढली! सुबै कलेवा की टेबल ऊपर एक महीनावार पत्रिका का पाछैला पानां पळट री छी कै दीठ ब्याव का विज्ञापना की पांत ऊपर पड़ी। सावचेत एकू-एक विज्ञापन पढ़बा लागी। कँई-कँई रंग का विज्ञापण छा। कुसुम कळी आपूं आप कोई नै कामद मांड'र अरदास करबो नई चावै छी। ईं वास्ती ऊं दन की डाक सूं ई आपणै वास्ते एक ब्याव को विज्ञापन माण्ड'र पत्रिका का दफ्तर में छपाबा वास्तै पुगा दियो—

'पच्चीसेक बरस की स्नातक, गोरी-फूटरी डावड़ी मुजब एक चोखो वर चावै छै। पुराणा वोरो चित्राम की लार पुगाओ।'

कुसुम कळी की औरथा बत्तीस पण ताखड़ी-तोड़ मोटापा कारण लागै चालीस सूं ऊपर ई छै। रग अतरो गोरो कै सैव भी सरमा जावै। नाक-मूडो भी फूटरो छै। पण वा विज्ञापन मे औस्था सात बरस कम ई मांडी। आपकी एकली अणपढ नौकरणी गगा का हाथ सूं कागद पुगा'र निचीती होगी।

थोडाक दना पछै ई कुसुम कळी की डाक को वोझ भी ऊंका डील ज्यू भारी होबा लाग्यो। नित आठ-दसेक कागद विज्ञापन का पडूत्तर मे आबा लागग्या। वा आवता कागदा नैं एक फूटरी सीक फाईल मे सैंज'र राखवा लागी।

दीतवार की सुबै। कुसुम कळी आपका कमरा मे चदण-अगरबत्ती की लपटा मैंकाई। लॉन सूं सोवता फूल तोड'र गुलदस्तो बणायो अर आपकी टेबल ऊपर सजा दियो। आपणा थुल-थुल डील नै कुड़सी ऊपर ठुंसायो। कुड़सी भारी लकडी की बणी छी, फैर भी चड़मड़ागी। हिरदा का समदर में उछाळो खाती लैरां नैं समेट कागदा की फाईल काढी। पूरा एक सौ इग्यारा कागद फाईल मे भेळा होग्या छा। उतणा ई चित्राम भी। वा वारी-वारी सूं कागदा नैं बाचनी अर वा के लारै आया चित्राम गोरी दीठ सूं न्हाळती। कागद भांत-भांत का अजूबा सूं भरया छा। या आधी फाईल भी कोनैं बाच सकी। ऊंका मगज की नसा भरणा उठी। कोई चितराम सूं कार्टून को सो उणियारो झळकै छो अर कोई मे फिल्मी नौमिखियापणा की बास आवै छी। वां मे सूं कोई एक कागद अर चितराम को चुणाव करबो ऊंका वास्ते सोरो कोने छो। कोई एक को फुटरो पणो चोखो लागतो तो दूजा रा गुण भावता। ईं मुजब वा सगळा कागदा ऊपर फोरी-फोरी दीठ फैंना'र चार उम्मीदवारा का कागद अर चित्राम टाळ दिया। बच्योडा नैं पाछा ई फाइल में बद कर दिया। अब चारू उम्मीदवारा मे सूं भी एक को चुणाव करबो ऊ कै वास्तै सोरो कोने छो। ईं वास्तै वा चारा ई उम्मीदवारा को इटरव्यू लेवा की निरणै करली। चारूं नैं एक ई समै अर दन की सूचना पुगादी।

ऊनैं इंटरव्यू लेणो छो। इंटरव्यू को ग्यान अणभो ऊँनैं कोनै छो। पण आपकी नौकरी मुजब एक इटरव्यू जरूर दी छी। ईं वास्तै आपका धर को वातावरण इंटरव्यू नुमा बणायो। बरामदा भीतर इस्टूल गेरा'र नौकरणी बैठायी अर फर्नीचर नै सलीका सूं जमवा दियो।

पैलो उम्मीदवार कमरा मे घुस्यो तद कुसुम कळी का बडा लालीपुत्या होठ मुळक्या विना कोनै रै सक्या। नाव छो—शैलेन्द्र कुमार, चार फुट छै इच लाबो, इकलडो डील अर औस्या पचीसेक बरस। शैलेन्द्र कुमार आपका डील नैं आधो झुका'र मादर ढोक मेल दी। अर सामै पडया कौच ऊपर बैठग्यो।

कुसुम कळी पैलो सवाल धांकबा लागी कै शैलेन्द्र कुमार आप् आप ई सवाल सरू कर दियाः—'बात आ है माताजी, कै वा आपकी डावडी है नै ? वा···!'

कुसुम कळी अचरज मे पड़गी—'कसी मूरखता की बात करो छो ? म्हारी अर डावडी ?'

'हाँ सा, वा कुसुम कळी जी स्यान आपकी ई डावडी है नै ? ऊँ को कागद ई म्हारे कनै गयो छो।'

'·············।'

'तो कुसुम कळी जी आपकी डावडी कोनै कांई ?'

'आपने गफलत होगी छै। मैं ई कुसुम कळी छू।'

'आऽऽऽप !' शैलेन्द्र कुमार की जीभ डावांडोळ होगी। कुसुम कळी का डील को आकार देख'र हाथ-पग कीरतन भजवा लागग्या।

कुसुम कळी एकाद सवाल करणो चाई। पण ऊँकी तो जीभ ई जाणै ठठार'रै भैळी होगी। कुसुम कळी झुंझळ खा'र बारै बैठी नौकरणी ने दूजो उम्मेददार भेजवा को हुकम दियो।

रूप कुमार 'स्नेही' अब सामै विराजमान छा। वा को रूप भी बखाणवा जोग छो। माला का वणा सू भर्‌यो काळो भुसड चैरो। पान सू पीळा जरद हो'र यारै निकळ्या दात। जद सांस लेता, मूडा सू पायरिया को भभको कमरा मे फैल जातो। कुसुम कळी सवाल न्हाक्यो—'आपको काम धंधो कांई छै ?'

'शुद्ध साहित्य-सेवा। जाणै लेखण तो चालै ई छै, मैं आजकाल फूटरा पणा का बोध की एक मीनावार पत्रिका काढू छू।' रूप कुमार 'स्नेही' का मूडा सूं गबद थोडा अर बास गैरी-घणी निकळरी छी। अर हरुशी जिस्या नैण कुसुम कळी का चैरा ऊपर अस्या जमर्‌या छा जाणै भीत ऊपर बसमरी। पायरिया का भभका सू कुसुम कली नै सांस लेबा दोरो होग्यो छो। कदै आपकी नाड़ नै ऊँची फेरती अर कदै सूळी। वा ऊँ दमघोटू वातावरण मू पाछो छुडावा की गैलो हेर'री छी अर रूप कुमार 'स्नेही' रोमांटिक मूड बणाबा को जतन कर रैया छा—'आप जिसी मुततर सोच वाळी आगेलडी लुगाया की ई देस मे चायना छै। आप सू मिळ'र घणू हरख हुयो। मैं धन्न होग्यो। अरे ? आप तो कांई बोला ई कोनै ? न्हाळो, इतरी गैरी लाज भी कांई ?' स्नेही जी कांई-कांई कैता रैया, कुसुम कळी ने तोन ई नै पड़्चा। घुटण सू मुक्ती पाबा ने छोड'र या दूजी कांई नई सोच री छी। स्नेहीजी की जीभ इटवा को नांव ई नई लै री छी। वे बोल्या—'जे आप जिसी जीवण को जोड़ायत मनैं मिळ जावै तद आपरा उपन्यास ऊपर वैगाई एक फिल्म बणाल्यू। इसी धासू फिल्म कै म्हारी सगळी कल्पनावां ऊं में फिट हो जावै अर फिलम पडदा ऊपर आता ई हिट हो जावै। ऊ फिलम मे हीरो को रोल मैं खुद ई सिर्फ चाक ··· आप हीरोणी को

रोल करबा ने राजी हो जाओ तो स्टार ग्रुप का नखरा ऊपर एक आखरी थाप जड़द्यू ।' अर स्नेहीजी टेबल ऊपर इस्यो घूसो मार्यो कै फूलां को गुलदस्तो कुसुमकळी हाथ में नई थाम लेती तो फरस माथै गिर'र टूका-टूक हो जातो। चैरा ऊपर गुबरेली मुळकाण फैरा'र स्नेहीजी कैवा लाग्या—'अब आपणी ओड़ी सूं तो पूरी रजामंदी जाणो। मैं जाणू आपने भी कोई तरै की अड़चणा नइं आवैली।'

'आप औकात सू बारै की बात कर रैया छो।'

फाट्या बांस की जिसी हांसी ढाळता हुया स्नेहीजी बोल्या—'रूसबा को रोल भी आप चोखी भांत निभाल्यो छो। यो स्टाइल तो ऊं बणबावाळी फिलम मुजब इस्यो फिट हो जावेला के देखणियां एक दूजा ने कुहणी मारबा लाग जावेला।'

कुसुम कळी को चैरो रीस सूं तमतमायो। स्नेहीजी ईं तरां लट्टू हुया जावै छा कै एक-एक पळ ने अमोल जाण'र उठबा को नांव ई नै ले रैया छा। कुसुम कली झूझळ खा'र फूट पडी—'श्रीमान जी, मनै दूजां को भी इन्टरव्यू लेणो छै।'

'अब दूजा की चायना ई कांई रै जावै छै ? पण आप चावो तो कोई हरज कोनै। आपकी जो सगत मिळी ऊं की ओळयूं कैई-कैई दनां म्हारा काळजा में बसी रैवेली।' बोल पूरा कर'र ऊबा होतां ई आपको खुड़दड़ो हाथ कुसुम कळी सामै बधा दियो। कुसुम कळी झाटक्यो खा'र परी सरकगी अर भारती संस्क्रति की हिमायत करती आपका हाथ जोड़'र सनमान भी नइं कर्यो। पगत एक सबद तोप का गोळा ज्यूं दाग दियो—'धन्यवाद !'

स्नेहीजी कमरा सू कढ्या तद कुसुम कळी ने खुल'र सांस लेबा को औसर मिळ्यो। ऊ को काळजो धूकणी ज्यू चालबा लाग्यो। सोफा ऊपर पसरी दूद इसी हालै छी जाणै वडी बोझली गांठडी ऊपर-नीचे हो री छी।

तीजो उम्मेदवार सामै परगट हुयो वो भी कुसुम कळी ने अचरज मे गैर दियो। 'आप को नांव ?'

'मनै बीरेन्द्र कुमार केवै छै।' तीन सौ नम्बर का जड़दा की फोरी सुगंध को टूक सबदा की लार भेळता पड्उत्तर दियो।

एक अगरबत्ती पेलवान की काया अब सामै विराजगी छी। बार ना मायनै आता समै कुसुम कळी देखी छी, ऊ की लम्बाई साढ़ी छै फुट सूं भी वधीक जाण पड़ी छी पण बोझ भार कुसुम कळी का अनुपात में एक चौथाई भी कोनै छो।

बोली इतरी पतळी क जिस्यां गळा में कोई चिड़ी बैठा'र राखदी छो। पण बीरेन्द्र कुमारजी ऊंचा मोल का सूट अर टाई में इस्या सज रैया छा कै कोई कम्पनी का विगापन एजेन्ट जाण पड़ता। पण वे तो कोई पब्लिक इस्कूल का

प्रिंसिपल छा। बात करवा को तरीको एकूं एक साव-सुथरो छो। पण वै रसिक इतरा छा कै रूप कुमार स्नेही सूं दस पांवडा बधीक। जै कुसुम कळी थोड़ीक भी सावचैत नही रैती तो ऊंका गेंद जिस्या डील सू बल्ला की भांत सट जाता।

तीन जणा का इंटरव्यू सू कुसुम कळी थाक'र इतरी बोझली हॅगी छी'क चौथा नै बुलाबा को सास कोनै रैयो छो। पण थोड़ीक देर सुस्ता'र ऊं का मगज की नसा कळोट-फैर ली अर वा बारै ऊंघती नौकरणी गंगा नै चौथो आदमी पुगावा को हुकम न्हाक दियो।

आवता को अभिवादन झेल'र कुसुम कळी सवाल कर्यो—'माफ करज्यो मैं आपका सुपुत्तर जी ने बुलावो पुगायो छो। पण आप···?' 'हैं ऽऽऽ हं, म्हारो पुत्तर तो बारेक बरस कोई छै। बो आ'र कांई करतो ?' वे पैली हंस्या फैर हंसी नै मुळकाण मे फिरा'र बोल्या।

कुसुम कळी के वास्तै या सब सू बधीक अचरज में गैर बाळी पैळी छी। आवता को उणियारो देख'र पैली तो कुसुम कळी सैमगी छी। ऊंका सू भी सवाया आकार की दूद। लम्बाव कुसुम कळी सूं चारेक इंच बधीक। खिजाब पोरया केस अर लट्टूडा सी आख्या, डूंगर सा डील ऊपर झूलतो नीलो सूट। कुसुम कळी अचरज सूं मुन्नेलाल बजरिया ओडी न्हाळती रैगी। बजरियाजी ई मुळक'र सवाल न्हाक्यो—'पां के अठै सू ब्याव को विज्ञापन कुणसी डायडी मुजब छपायो-ग्यो छो ?'

'आप कुण कै वास्तै बधू तलासवा पधारया छो ? विज्ञापन तो मैं आपणै वास्तै ई पुगायो छो।'

'मैं भी आपणा मुजब ई आपका दरसण वास्तै आयो छू।'

'कागद में तो आपकी औस्या तीस बरस माडी छी, पण आपकी···?'

'हां, म्हारी औस्या चाळीस सू एकाध बरस ऊपर-नीची ई छैं। पण आपने विज्ञापन मे तो पच्चीस बरस ई माडी छी ?'

कुसुम कळी बजरिया जी नै न्हाळ री छी अर बजरियाजी कुसुम-कळी ने। 'छोडो आप भी औस्या की बात। यो तो संयोग छो कै म्हा दोनू नै आपकी औस्या मार मजाक करणू छो। मैं म्हारी इस्थिति आपके सामै चूं। ई सैर में ई 'माडर्न मेटल्स' नांव की फैक्ट्री म्हारी घरां-घरू छै। घराणी चारेक बरस पैली सुरग सिधारगी। एक बारेक बरस को टाबर अर छैक बरस की डायड़ी छै। ब्याव को कोई विचार भी नै छो। पण अब सोचू छू कै घर की संभाळ करबा वास्तै कोई हुवै तो टाबरां नै मां की ममता भी मिल जावै अर आपका जीवण को एकलपणों भी फोरो हो जावै। ई सूं बधीक एक सबद भी मैं कैंबो नई चाऊं। आपका निरणै की सूचना आप जद भी चावो पुगा दीज्यो।' बजरियाजी घड़ी देखता बोल्या—'अब मैं चालूं छू। नमस्कार !' कुसुम कळी

का चैरा ऊपर कैई-कैई भावा को चढाव-उतार चालर्यो छो। ज्यूई बजरियाजी उठबा नै हुया कुसुम कळी अरदास करी—'आप चाय पी'र भी नै पधार सकोला ?' बजरियाजी विनैमाक मुळक्या अर आपका भारी भरकम डील नै आराम सूं पोढ़ा'र बैठग्या। कुसुम कळी गंगा ने नास्तो लगावा वास्तै हाको दियो। थोड़ीक देर मे टेबल ऊपर कैई प्लेटा में मैंक की लपटा उछळवा लागी। ज्या मे मिठायां, नमकीन, सैव का काटचोड़ा टूक अर बिस्कूट देख'र बजरियाजी मुळक्या—'इतरी वैवस्था क्यू करी ?'

'आपका डील का आकार मुजब तो यो फौरो पड़ै छै ?'

'या बात थे आपणे वास्तै भी कै सको छो'क नै ?' बजरियाजी फेर मुळक्या, कुसुमकळी झेंपगी। अर दोनू ई नास्ता की प्लेटा ऊपर ई तरै पिळ पड़्या कै थोड़ीक मिनटा में ई प्लेटा साव-चक्कः होगी।

बजरियाजी जावा लाग्या जद अभिवादन का पडुत्तर मे कुसुमकळी इतरीक ई कै सकी—'कदे आपकी पिकी सू पिछाण करावो नै ?'

'क्यू नै ?' कदे काई आप जद चावो वा आप सू मिलवा आ जावेली।' बजरियाजी चलैग्या। कुसुमकळी खिड़की को पड़दो हटा'र न्हाळी। बजरियाजी की मूगिया कार ऊका बगला का बाडा सू निकळ'र सड़क ऊपर दौड़बा लागी छी। बा ऊबी सोच करै छी— बजरियाजी इंटरव्यू देबा आया छा पण काई'र काई लै'र भी चल्याग्या। कतरीक काई लेग्या ई को ई अनमान वा खिड़की की आड मे ऊबी लगा री छी।

ठंडी मुळक

· ☐ दीपचन्द सुथार

किलास नैं छोड'र ज्यूं ही काळू बारै निकळयो तो थोड़ैक आन्तरै उभै डाकियै उण सामी इसारो कियो। कनै आवतांईज अेक लिफाफो उण रै हाथ माय थमाय दियौ। रेसीस री वगत ही। एकान्त मे जाय'र बाचण लागौ तो उण री आख्यां मे आंसुडा भरीज गिया, गळौ गळगळौ व्हैग्यो, चेरै माथै उदासी छायगी, विचारां रै गैरे समन्दर मांय डूबग्यो अर अेडो मैसूस व्है रियो हो कै जाणै उण माथै चिन्तावा रौ मोटो भाखर टूट पड्यो। घंटी बाजतांई किलास माय जाय'र पाछौ पढ़ावण लागग्यो। पण पिताजी सू लिख्योडी ओळया रै रै उण री आख्यां सामी घूमती थकी चिन्तावां री रेखावां नै समन्दर री लैरा री भांत उभार अर मिटाय रयी ही। छुट्टी व्हैतांई सगळा मास्टरा उण नै उदासी रो कारण पूछियो पण काळू मुळक'र पडूत्तर टाळ दियौ।

काळू दुबळो-पतळो, कद ठिगणौ, रंग-सांवळो, साधुवाद रौ परतीक अर परदुखियारो। बाळपणै सूईज कोर्स री पोथ्या रै सागैइज दूजी पोथ्या बाचण रौ हृद सू घणौ कोड। बी० ए० पैलै नम्बर मू पास करी, पण पिताजी री लूठी अर घणा बरसा सू चलती आ रयी बीमारी रै कारण सगळो घर रिपिया-पईसा मू धुपग्यो। अबै भाडै रै मकान मांय रै रियो है। अेडी हालत रै कारण मन मार'र काळू नैं नौकरी करणी पडी। उणी दिना सू दोय सौ रिपिया हर मईनै पिताजी नैं बरोबर मेल रियो है। बाकी बचियोड़े सू मोरो-दोरौ आप अर छोटै भाई रौ पेट पाळ रियो है। नौकरी लाग्या हालतांई पूरो अेक बरस भी नी हुयो, पण ईमोनदारी, अपणायत, मीठी बाणी, सातरो मेणत अर परोपकार री गैरी भावणा सूं सगलै गांव मांय इण री लोकप्रियता री बेल दिन दूणी अर रात चौगणी फैलण लागी। लोग-बाग उण रै

मद्दैवार, मुळज्योडा विचार अर सीदौ-सादौ रैण-सैण देख'र दांतां बिचै आंगळी देता थका उण री बड़ाई करता नीं थाकता।

ब्याळू किया पछै काळू कदील रै चानणै भिणाई-लिखाई अर विचारा माय मगन व्हैग्यो। उणीज टैम दोय तीन मास्टर अर च्यार पांच मिनख कमरै माय आय'र मार्चै मार्थे बैठग्या। मान-मनवार अर आदर-सत्कार रै पछै इटी-उठी री बाता करता थकां उदासी रो कारण जाणणो चायो पण काळू आ बात आछी तरै जाणतो हो, कै आपरी खाज तो आपरै हाथां कुचरिया ही मिटै। इण वास्तै बात नै अणसुणी कर'र टाळ दी। घणी ताळताई फेर टाळ-मटोळ करी, पण आखिरकार बेळ्यां रो हेत, अपणायत अर आत्मीयता नै नजर दीठ राख'र हियै हेठली सगळी बाता गागर मे सागर भरतां थका—"थोड़ा-बौत भळै रिपिया भेजण री बात कैई।" आ सुण सगळा फिकर करण लागा। सोच-विचार रै पछै दूजो कोई चारो नी देख'र ट्यूशन री राय दी। पण आ बात भी उण रै सिद्धान्तां रै परतीकूळ ही। आखिर आपरै खरचै माय भळै कमी कर'र अबै ढाई सौ रिपिया भेजणा सरू किया। होळै-होळै लोगां-ने ठा पडी तो आठ-दस पूठ पाछै निन्दा करण वाळा भी उणरी प्रसंसा रा पुल बाधता थका उण रै सिद्धान्तां मार्थे चालण लाग्या। थोड़ाक दिनां बाद उण रो बाळमोठ्यो हरखू इणी गांव माय आय'र बौपार करण लागौ। बूढा-बडेरा कैता आया है कै—"पईसां-टक्कां री लाळ लाग्या पछै नीं छूटै।" ओ उणरी सगली परस्थिति सू वाकफ हुता थका भी अेक नुवै पईसै री मदद तो अलगी रयी, उल्टौ मईनै में आठ-दस दिन तो जीमण री बगत आय'र धामो देय बेवतो।

अेक दिन काळू नै ई बात रौ पतौ पड्यौ कै हरखू अेक हर्फ्त सू बीमार है। आ सुणताई उणीज टैम समाळण सारू उण रै घरै जाय'र सेवा-चाकरी मांय लागग्यो। दस-पनरा दिना मे वो पूरी तरै ठीक व्हैग्यो। इण बीमारी माय काळू री जेब सू दवा-पाणी, चाय-दूध आद रा पच्चास रिपिया खरच व्हैग्या। पण हरखू रातौ पईसो छोड'र धिनवाद रा दोय आखर भी जीब मार्थे नीं लायो। पण काळू ई बात री रत्ती भर परवाह नी की। उणनै तौ आपरौ कर्त्तव्य निभावणौ हो, सो रात-दिन सेवा कर'र पूरो कियो। इण सू उण रै हिवडै मांय घणो चैन हो। खैर—बौपार नै जमतो नी देख सेवट पाछो गांव जाय'र धंधो करण लागो। होळै होळै काम-धन्धो चोखो जमगियो अर सातरा रिपियां भी कमा लिया।

गर्मी री छुट्टियां हर बरस काळू आपरै गांव मांय बितावतौ। जद-कद मारग मांय हरखू मिलतो तद् दोनू बेली घणै हरख अर उमाव सू मिलता, चाय री दुकान मे बैठ'र मनडै री बातां करता, पण बिल रौ भुगतान तो

काळू नै ईज करणौ पड़तो। इण तरै कैई बरस बीत गिया। पण काळू दोसती मांय मीन-मेख रौ ईज फरक नीं आवण दियौ।

सगळा दिन अेक सरीखा नीं हुवै। इस्कूल खुलण आडा दोय-तीन दिन देख'र उण नै गाडी भाड़ै री चिन्ता रात'र दिन सतावण लागी। उण कनै चीज-बसतु छोड'र फूटी कोडी भी नीं ही, जिण नै बेच किराये-भाड़े रा पईसा ला सकै। आखिर हिम्मत राख'र जीवण में पैलीवार उणरी दुकान रै दासै मार्थं पग धरियो। हरखू घणै हरख सूं गळै लगाय'र आपरै कुडै गादी माथै बिठायो। घणी-ताळताई इठी-उठी री बातां करी। गिलास भर ठंडो पाणी पायो। पण आवण रौ कारण नीं पूछियो। काठो कायो होय'र आखिर पच्चीस रिपियां रै वास्तै अरज करी। आ सुणताई उणरी आंख्यां सामी अंधाळी आयगी। हाथां रा तोता उड़गया। सेवट हीमत राख'र माथो कुचरतो अर आंख्यां नीची कियां होळै'क बोल्यो—"आप जेड़ै बैली रै खातिर जान भी त्यार है।" आ केय'र हाथ मांय रिपिया थामतो पूठो बोल्यो—"कद तांई भेज दोला।" बात रौ उथळौ देवतो थको काळू केयौ—"—दस दिनां रै माय मांय मेल दूंला, आप किणी तरै री चिन्ता-फिकर मत करीजो।" धिनवाद रै मन्दा रै सागैईज काळू नै उठतो देख'र झट दूजी बार ठंडै पाणी री गिलास थामतो थको मुळक'र बोल्यो, "तीन रिपिया ब्याज रा भेज दिराइजो।" आ सुणतांई काळू री आंख्यां पळ भर रै वास्तै इण तरै थिर व्हैगी जाणै नाड़्यां मांय बेवती रगत बन्द व्हैगयो। रिपियां नै गादी माथै मेल'र कष्ट मातर माफ़ी मांग रवाना व्हैग्यो अर हरखू आंख्यां फाड़'र देखतोईज रैग्यो।

बाळगोठियो

□ कल्याण गौतम

सदा आळी दाई दिन रै डोढ बजताई चिणाई रो काम बन्द हुयग्यो। कनजी कारीगर अर तीनू मजूर आपरै कपडा री रेत अर चूनो झाडता पाधरा आणन्द-सागर कानी टुरग्या ! आणन्द सागर मे जावण री वाता आज इणा मे दिनूगै सू ई चाल रैयी ही। वात गिडकै चढग्यी अर आज दोफारै आळी चाय रो सैग खरचो कनजी कारीगर आपरै माथै ओट लीधो। तय हुयो'क चाय पीवणी तो आज आणन्द सागर मे ई ज पीवणी। आणन्द सागर इण नगरी रो नामी गरामी पण मूहगो होटल। ऊची इमारत, मूडागै चवडो चौगान, होटल री आभै वरणी दमकती छात, चिलकती कुरस्या, झमकता लोटिया, अर ठौड़-ठौड चमचमाता फिरत्यारा गा अबूवा होटल रै माय बडताई माडै मिनख रो मन मोय लेवै। होटल रै आगै पाच-सात फटफटिया, दो-च्यारेक स्कूटरिया अर कोई दस बारैक साईकिला तो अटन ऊभी रैवै। टेक्स्या अर काराई आवै, घडी'क ठमै भळै धूड नै धूवो उडावती न्हाठ जावै।

होटल रै माय जुदा-जुदा पण उधाडा केबिन। केबिन मे जोडा। फूटरा फरां। जोडा रै माय सूं केई-कई तो गाचाणीई आभै री जळवाळा नै होळी री सी झळ। दामणी ज्यू दमकै। हेमाणी आभा झळमळ करै। चौफेरी चकाचूंध। खिल-खिल हसै। खळगळ्या चालै। चायरी चुस्किया नै सिगरेटा रै धूवा बिच मोवणी माया सा मीठा मुस्कावै। आख्या सू वतळावै। भळै मुधरा मुळकै न्यारा-न्यारा जोडा।

होटल रै माय बडताई कनजी अर उण रै वेल्यां री तो आख्याई चक-राईजग्यी। काउन्टर माथै ऊभै मिनख री पैनी दुत्कार-रळियोड़ी हउन्हउ करती सवाली निजर उण ज्याग रै चौफेरी वटक्या सी बोढण लागी। पण बो होटलगो काउन्टरियो मिनख उण च्यारा गू मूडै सू की नी बोल्यो। कनजी आपरै तीन्यू बेल्या समेत मूडागै पडी खाली कुरस्या माथै बैठग्या। फूटरै

चितराम कोरियोड़ै च्यार काच रै गिलासा में वैरो पाणी ले'र आय पूग्यो। उणं रै वैरै कानी तक'र कनजी कारीगर हुकम छोडयो—"च्यार पळेट समोसा नै च्यार चाय…।" वैरो तुरत-फुरत पूठो घिरयो नै दूजै छिण स्टील री च्यार पळेटा मे गरमा-गरम समोसा, भेळै ई चाट नै हरेक पळेट सागै चम्मच अर कांटा। आप आपरी पळेटां मांय सू च्यार्ई ई बेली चम्मच-कांटे नै काढ'र पस-वाड़ै मेल्या अर समोसै नै हाथ मे झाल'र पाधरा बाकैउं तोड़'र खावण लागा। कनजी नै उण वेळा लखायो जाणै पमवाडली कुरस्यां मायला जोडा उणा नै हीण निजरया सू घूर रैया है, अर हवळै-हवळै दबी जुबानां आपरै डोळ सारू फबत्या कस रैया है। कनजी एक'र रा उडती सी पखेरू-दीठ उं सावतै होटल नै जोयो। इतरै तो एकै खूणैउं उणारै कान मे वात-चीत रो एक टुकडो उछन'र आय पड्यो—"बन्दर क्या जाणै अदरख का स्वाद…।" कनजी बठीनै झाक्या तो उणारी निजर वठैई अटक'र रैयगी। समोसो हाथ मे रैयग्यो अर बाको फाट्योड़ो। वै बावल ज्यू एकै सास उण मिनख नै घूरण लागा। उण मिनख री बगल मे तीतर-पांखी एक हूर री सी परी, हीगळू सा होट, आख्यां मायै मदछकियै कसूम्बी रंग रो मोटो चस्मो। चस्मै माय अपकती प्याला सी प्यारी अचपळी आंख्या। घडी-घडी माथै रै झटका सागै झूलती मखतूली लच्छ-सी न्हानी-न्हानी लट। पैराग उण रो मिनखा जैडोई। दोऊं जणा रै एकसाई झीटा माथै पै वधियोडा। अळगैउ देखणै पै माथै-रा केसा कानीसू तो दोया बिचै नर मादा रै भेदरो की माडोई फरक दीसै, पण उण मेमडी रा हीगळू मा राचियोडा होट नै चांद गो खिलकतो चै'रो हेला मारै हो कै सा'ब री बगल मे वैठी अकी कुण होय सकै है। स्यात आ बट-भागण उण री मेमडी ही हुवै। पण कनजी उण मेमडी नै नीं उण री बगल मे वैठे उण सा'ब नै घूर रैया हा, जका रै मूडैसूं सुणी ज्योंही 'बन्दर क्या जाणै अदरख का स्वाद।'

कनजी नै एकैई मांग यू आपरै कानी झाखता देख'र वै दोऊं जणाई अबै की लचकाणा पडग्या नै आपरी निजरया फोरली। धूडजी मजूर बोल्या—"जीमो कारीगरां! बळणयो, आप ?न निर्वै है ? इया भळै काई घूरो हो ? पे तो समोसा जीमो…।"

बिचाळै मथजी ग्यान छमकियो—'तुलसी इण संसार मे भांत-भातरा…' पण कनजी कारीगर मथै री ग्यान गुटकीरी सुणी—अणसुणी करता हुया आपरै हाथ रै समोसै नै पळेट मे न्हाख' ऊभा हुवता बोल्या—"धूडजीऽ…! बोडा ओ मिनख तो म्हनै की सैदो-सैदो लखावै, म्हारै घणै पुराणै बाळगोठिया जैडो। कठै ओऽ…सांवाणीऽ म्हारो बाळगोठियो बेलीऽ…हुंऽ…याद कोनी आवो अं…अ…हेमूडो…"

—"थारो बाळगोठियो ! ! अर अठै।

—कनजी ! गैला तो नी हुया हो । आज अँडी ओपरी बातां भळै कीकर करो हो। थारो बेली अठै-कठै सू आयो ? आपा तो आप मजूरी सारू अठै परभोम मे आयोड़ा हां, कठै आपां रो गाव, कठै देयग्या बाळक-टाबर नै कठै रैया बेली-मिन्तर। कदैई धोळी-धोळी चमकै जिकी सैंगई जिनस चाँदी···"

धूड़जी रै मूडैरी बात पूरी हुवै उणसू पैला तो कनजी कारीगर उण मिनख नै जाय बतलाया। बै आपरै होटा मायँ एक अमाप हरखरो लैं'र विसेरता, मिसरी सी मीठी बाणी मे, घणी खुशी, अणथाग आतमीयता नै ऊंचे आतम विश्वास मे उमायोड़ा बोल्या—"अरे···ऽ बाबू हेमराज ! भला मिळ्या, कैडो संजोग रळ्यो है आज बरसां पछै···। थे कद सू अठै हो···? राजी तो हो···?'

कनजी एकै सास मे ई सार-सार स्यांई की बोलग्या, पण सामलो मिनख उण कानी खारी मीटउ जोवतो थको बोल्यो—"अच्छाऽ···! तो आज दिनूगै सू अजू म्हैई मिल्यो हू थानै । फुरमाओ ? काई हुकम है ? कुण चाईजै आपनै···हेमराज···? पण कैडो हेमराज ? पधारो अठैउं, बधो आग्यूनै···अठै कोई हेमरान घेमराज नी ।"

अर बो आपरो माथो झटक'र बगल मे बैठी मेमडी कानी जोय'र नीचो आवाज में हवळै-हवळै बुद-बुदायो—'हूं अऽ···! दुनिया मे कैडा-कैडा अजूबा जन्तु फिरै है मीना ! आज की कुबेळा लियोडो गुटको फोड़ा घाल रैयो दीसै बापड़ै नै···।' भळै दोवां रै होटा मायँ मुघरी मदभरी मीठी मुळक तैरगी नै दूजै छिण दोउंजणा खारी जै'र मसेजी-मीटउ कनजी नै पगा री पगरख्या सू लेय'र माथै रै पोतियै ताईं कोझी तरै बलोळण लाग्या। कनजी ओजूई जडू—बण्या बठै ऊभा स्सोई की देख-सुण रैया हा। उण रो चै'रो अचाणचक धोनो हुयोग्यो नै तिरस्कार भरी हीणता हिलूरा लेवण लागी, अर आंख्यां पपराई ज्योड़ी ऊंडी डोब मे डूब-डूब'र की जोय लावण नै ताकड़ कर रैयीही उणा रै मन में एक उथल-पुथल माचियोडी ही। माथ नै गोटा-सा ऊछळै हा, नै भतूळिया सा चालै हा, अंधाधुन्ध विचार मतयण री आध्यां-सी ऊमटै ही पण बै अेकर रा भळै अपणै आप मायँ काबू राखता हुया बोल्या—"अरे हेमजी ? थूं अजूं म्हनै ओळख्यो कोनी···? म्है थारो बाळगोठिया हूं कानूडो··· बेतै कर दौसा री बै पोसाळां, आपा सागै-सागै भणीजण नै जावंता हा।······"

कनजी रै मूंडै री बात पूरी भी नी हुय पाई ही' क बो मिनख रीसो बळतो आपरै डील नै झटक'र कुर्सी सू ऊभो हुयग्यो, अर तेवर बदल'र बोल्यो—"अेऽ मिस्टर ! रवाना हो यहां से या पुलिस को फोन करूं। आया बड़ा बाळगोठिया···"

उण मिनख रा यू तेवर बदळियोड़ा देख'र अेकर रा तो कनजी रै मन में की ठबको सो हुयो, पण दूजै छिण बै आपै सू बारै हुवंता निजर आया।

अंचाणचक उणांरी आंख्यां अंगारां ज्यूं जगण लागी नैं दातांउं कटौड़-सा ऊपड्या। की आव देख्यो नीं ताव, बै सामलै मिनख नैं कोझी तरैं वकण लागा, "अरे बेईमान हेमूडा ! थारैं इत्तो मगेधज ! म्हनैं इण बात रो ठा नी हो, क थू अैंडो वदळग्यो। हरामी ! थू म्हारैं सागैं तो खैर नी भणीज्यो हुवैला, पण थू दौसा रो रैवणियो कोनी ? थांरो मकान डूगरी रैं हेठै ल्होडी-दौसा में कोनी…? अर बोल थू मूस्या पंसारी रो बेटो कोनी ? थन्नैं व। बात भी चेतै व्यू हुवैला जद थारैं वापरी माटगी रा दिनां मे अेकर थारैं बापरैं रात री बखत घणी दोराई ही अर आपा दोज आधी रात रा डाक्टर नैं बुलावण नैं गया हा, तद थन्नैं कुतियो खायग्यो हो, अर छव महीना ही थारी टागडी सावळ नी हुयी ही। म्है तो आज कूडो अर पीयोड़ोई सई पण थोड़ा चेतै कर वैं चितराम जद थू घर सू रिपिया गोर परो'र सुर्रामाता रैं मेळै मे न्हाठग्यो हो, तद म्है अर थारो बाप थनैं जोवता फिरया हा। बेईमान…।"

कनजी कारगर यू रीसा बळता बकै हा। अर बो मिनख तिरमिर-तिरमिर सीळी सी आंख्या सू ताकैं हो, पण अैंडो लखावैं हो जाणैं उणरी काया सुन्न हुयगी है, जाणैं उण री छाती माथै अचाणचक दासकनाग आय जम्यो हुवैं अर फुंकारा मारण लाग्यो हुवैं ज्यू।

कनजी खखार'र आप रो गळो साफ कर्यो, अर अेक दस रिपिया रो नोट काड'र आपरैं बेटा कानी फैंक्यो नैं अणबोल्याई तुरत-फुरत पूठा फिर्‌या अर टळैं उण मिनख सू नेतावणी मे बोल्या—"अैंडो मत पोमीजैं लाडी ! समै-समै री बात है। खैर जाणदै। पण ओजूई रै थू म्हनैं नी ओलख्यो तो अम्है इण भला मिनखा मे तो थन्नैं ओळू के कैवू, धोडो बारैं आव, थारा सागीडा पोत उघाडू। अर थन्नै चेतै अणाउ कै म्है कुण हूं…।' यू कैवता कनजी तुरतई होटलउं बारैं निसरग्या। उणारा तीनू बैली की समझ नी पायरैया हा, कै आखिर ओ रासो काई है ?

होटल रो मालिक, तीन च्यारेक नौकर अर केई वीजा मिनख बठै भैळा हुयग्या हा। भीड़ मे सू एक जणो पूछ्यो—"कांई बात हुई, इंजीनेरसा'व !"

—"की कोनी यार ! कोई म्हारलै गांव कानलोई मिनख है। स्यात कीं गुटको लियोड़ो लागैं जको बावळ बकै है।"

पण इंजीनेर रैं मन मे सागीडो पछतावो पछाड़ां मारैं हो। सरम सू उण री निजर छिण-छिण जमी कुचरैं ही।

कनजी नैं यू बारैं गयो देख'र उण रा तीनू बेली भी तवका तोलो करता उठ्या अर समवयोई मिरगा सा इन्नै-बिन्नै जोवंता काउन्टर कानी टुरया।

बिचाळै इंजीनेर हेमराज उठ परो'र हाथरो इसारो करतौ काउन्टरै आळै मिनख नै कह्यो—"इणारो पेमन्ट भी म्हे ई ज करस्यू। बोलो कित्ता पईसा हुया…।"

—नीं नीं बावू मा'ब ! पईसा आप भलं कांई नेग रा चुकावो ? सामलो दस रिपिया रो नोट देय'र गयो है।(धूड़जी कह्यो)

सुणतांई अचाणचक इजीनेर रै चैरै माथै होणता हिलूरा लेवण लागी, बो चमगूंगै दांई बाको फाड़तो झांखतोई रैयो। घड़ी-घड़ी माडै सहज हुवणैरी बा असफल चेस्टा करै पण, उण रै दिल माथै जाणै कोई भारी भरकम बूटां सू तक-तक'र हजारूं लात्यां जड़ रैयो हो।

धूड़जी नै लखायो जाणै इंजीनेर ने माय री माय कोई धारदार चीज बाढ्या जाय रैयी है। बै अेक छिण उण रै चैरै कानी भळै तक्या, पण उणरी *सुन्न बापरती आंख्यां सूं बच परा'र दूजै छिण होटल सूं बारै निसरग्या।* इंजीनेर भी उणां रै लारै-लारैई पग ठरडतो बारै आयग्यो अर आपरा दोऊं हाथ जोड़'र कनजी सू मांफी मागतो दीस्यो। मदछकियै कसूम्बै रंग रै चस्मै आळी मेमड़ी हाथ मे बैग डोलावती पसवाडै ऊभी ही ! मुधरो-मुधरो वायरो उणरा कवंळा-कुन्तळ मखतूली लच्छानै बरोळ-बरोळ जावै हो।

दूजो चक्रव्यूह

□ कुन्वनसिंह 'सजल'

बी रा बाप रो सुरगवास हुयां आज तीन दिन हुग्या हा। वो रोज रा किरिया कर्म सू निवृत हो की मनन सो करतो एकलो बैठ्यो हो। विचारधारा बी री मोसर (मृत्यु भोज) रा प्रश्न पर फेर जा अटकी। वो आपका यार दोस्तां नैं कैंवतो 'जब गिरस्ती री व्यवस्था बी रा हाथ में आवैगी तो वो गळत व बेबुनियाद रूढ्यां नैं पेड़ पर लागी सूखी डाली की तरां तोड़'र जला देगो। बी नै गरव होर्‌यो हो कि बो आपका बाप की मौत कै दिन बैकूंटी जिसी बेकार रश्म कोनी निभाई अर बैकूंटी न निकालबो मोसर न करबा को सूचक है। वो पक्को निश्चय कर मेल्यो हो कि समाज सू चाये कत्तो ही जूझणो पड़ै वो गळत रिवाज कोनी निभावैगो। आपरी ईं पैली जीत की याद सू बी रा होठां पै हंसी दौड़गी।

"थानैं, भीतर भाबूजी बुलावै है।" बो देख्यो बी का चाचा को लड़को वीरसिंह यो संदेश ले'र आयो है। वीरसिंह बी की माताजी नै भाबूजी ही कैवे है जियां बो भी आपरी माताजी नै।

"क्यूं के बात है?" बो वीरसिंह नै पूछ्यो।

"मनै तो मालूम कोनी, पण उठै चार पांच आदमी और बैठ्या है।" वीरसिंह बोल्यो।

सुण'र बी का मन मे कीं शंका हुई पण बीं आपरी शका ने दबा लीनी और उठ'र वीरसिंह कै साथ भीतर चल्योगो। भीतर जा'र बी देख्यो बीं री माताजी कनै बी रा तीन चाचा, एक सगो व दो परिवार रा, तीन लुगायां एक परिवार मे बीं री दादी, एक बी रा घर की पिरोतन अर एक पटवारण। सब लोग बीं री माताजी नै घेर'र बैठ्या हा। बां नै देख'र बीं रो मन फेर एक जाणकार आशंका सू धड़कबा लाग्यो पण बो फेर आपरा मन नै पक्को कर्‌यो अर आपरी माताजी नै बोल्यो "के बात है भाबू?"

बी री माताजी तो की बोली कोनी, बी रो चाचो बोल्यो, "महेश बात आ है, आज दादा भाई नै मर्‌या तीन दिन हुग्या। आज सूं गरुड पुराण रो पारायण चालू हो ज्याणू चाये।" सुण'र महेश नै आपरा मन री आशका सांच में बदळती दीखवा लागी। वो जाणै हो कै गरुड पुराण रो पारायण भी मोसर री सूचना वै है। वो बोल्यो। "चाचाजी, जद आपां मोसर नी करा हां तो गरुड पुराण रा पारायण को कांई औचित्य है?"

म्हानै तो गांव हाला जठी कै भी निकळा हा वा ही कैवै हैं कि परताप सिंघ जी रो जनाजो बिना बैंकूटी तो नहीं निसरणू चाये हो मास्टर जी आ कांई सोची? परताप जी गांव में, समाज मे पूछ वाला मिनख हा। वा को मोसर तो होवणू ही चाई जै।" बी रा परिवार रो एक चाचो बोल्यो।

"आ बात तो ठीक हे चाचाजी, पण आप जाणो हो, मेरै चार लड़क्या है इणा रो ब्याव, लड़कां री पढाई रो खरचो अर ऊपर सूं पिताजी रो छोड्योडो दस हजार रो करजो।" महेश बोल्यो।

"मास्साब, परताप जी थांकै कनै सो क्यू छोड'र मर्‌या है। थे कोकैई भरोसै कोनी। इयां का पूछ वाला ठाकर रो खरच तो होवणू ई चाईजै।" पिरोतण बोली।

"बिना बैंकूटी थे ठाकरां नै लेग्या, मनै तो घणी ई सरम आई, पण हूं तो लुगाई हूं, की कै कोनी सकी, बावळो थानै आ चाये ही? या कनै कांई कोनी? भगवान को दियोडो सो क्यू है।" पटवारण बोली।

महेश बडा धरम सकट मे हो। वो क्यू बोल ही नीं रयो हो। वो सोच्यो 'माताजी भी आज चुप है जद कि पिताजी रा सुरगवास हाळै दिन माताजी ही वी नै मोसर जिसी गळत रूढी ने तोड़वा रो साहस बधायो। महेश नै चुपचाप देख'र बी रो चाचो बोल्यो "आज आपा नै सो क्यू मिळै है। चाये जी महाजन कनां आपा बीस तीस हजार रो सामान उठा सका हां। मारो समाज आपणै ऊपर आगली उठार्‌यो है। आपा नै दादा भाई को मोसर करणू ही है।

वो आपरा ई चाचा नै आछी तरां जाणै है। एक बार वी रो भोई चाचो बी का मगाबा पर एक आदमी कनै पाच सौ रुपया ल्यार खुद बरतगो हो, बी नै पाच पीसा भी कोनी दिया। "अजी, रुपयां री थानै कांई कमी है। थानै थामें जित्ता रुपया हूं देस्यू।" पिरोतण बोली।

महेश नै जाणकारी है कि आ वा ही लुगाई है जो गाव हाळा नै सात-सात रिपिया सैकडा पर उधार रुपया देवै है। "हूं पटवारी जी नै कै देस्यू थानै चाये जित्तो सामान आपणी दूकान सू ले लेयो। रुपया थारै कनै होवै जणा दे

दीज्यो।" पटवारण बोली।

परिवार रो बो मिनख जो बी रो चाचो लागे हो, बोल्यो "महेश तू यूं कर। आपां पटवारी जी री दूकान सूं मोसर रो सारो सामान ले आवां पछै जद हीसाब करस्या तो आधा रुपया हूं दे देस्यूं अर आधा तू दीजैं। महेश ईं चाचा नैं आछी तरां जाणै है। वो मन मे सोच्यो 'ओ वो ही मिनख है जद मैं मकान बणवारियो हो तो मोहो आश्वासन दियो हो अर पछै एक काणी कोडी भी काढ़र कोनी दीनी।

महेश बोल्यो "पिताजी रो मोसर कर बा की म्हारी तो बिलकुल भी सलाह कोनी। म्हारैं सामैं जिको खरचो है आप सब जाणू हो अर जो करजो चुकाणू है वो हूं जाणू हूं। ईं स्थिति मे ईं बेकार की रूढ़ी पर हूं तो पाई भी कोनी खरचूं।"

"तू दादा भाई रो खरच नी करे लो तो हूं करस्यूं। वो मेरो भी तो भाई हो।" महेश रो चाचो बोल्यो। "थे भाई सू इसो ही नातो निभावो हो तो आप करद्यो मनैं की एतराज कोनी।" महेश बोल्यो। "क्यू कर दे ये खरच, तू कांई भीख मागै है। तेरे खनै आज तो वै सब क्यूं छोड़'र मर्‌या है। तनै की ही चीज रै विसर कोनी राख्यो।" बी री माताजी बोली।

अब स्थिति वी री समझ में आबा लागी कि ये सारा जणा माताजी नै मोसर खातर उकसाई है। वो जाणै है कि बी रां परिवार रा सारा भाई आ चावै है कि वो हमेशा कर्जदार बण्यू रहै अर कदे भी करजा सू मुक्त न व्है। ये लोग ईं मौका नैं हाथ सू निकळवा नही देवो चावै क्यूंकि यो पांच हजार रुपया खरचा रो अवसर है। माताजी री बात सुण'र महेश नै धरती आपरा पगां तळा सूं खिसकती लागी।

"लेकिन भावू तू ही तो वी दिन मनैं समझायो हो। घर रो आमद खर्च के तेरा सू छानू है। ईं स्थिति में यो पाच हजार को बेकार खर्च कीं काम रो।" वो बोल्यो।

"ओ विरथा खरचो कोनी, समाज मे म्हारी नाक कटै है। हूं मरूं जणा चाये तूं मनैं मना करजे पण म्हारै सामैं थारैं बाप रो मोसर तो कर।" माताजी बोली।

"महेश, परताप पूछण हालो मिनख हो, आज ईं मौका पर जै कीं कोनी करां तो आपणा परिवार री हळी होवै। सो तू सोच अर बो काम तो तनै करणा ही सरसी।" बी का परिवार मैं लागण हाळी दादीजी बोली।

"हूं एक सू लाख भी यो काम कोनी करूं। के मैं सारी उमर करजा मे पिसतो रैवूं। म्हारी तनखा भी इत्ता करजा का ब्याज वास्तै कम पड़सी। फेर टाबर कांई खावैला, कांई पैरैला।" महेश जावा खातर उठवा लाग्यो। बी नैं

उठतो देख'र बी रां माताजी वी रां चाचा नैं कैयो "गिरधरजी, टहर में म्हारी जो तीन बीगा जमीन है चाई बी नै बेच'र ठाकर रो खरच करो। औ नी करै तो जाणद्यो। ईं का टाबरां नैं पाळबाद्यो ईं की तनखा सूं।" सुणकर साव्या ईं महेश की आख्यां आगै अंधेरा छायगो। वो धम्म सूं उलटो बैठग्यो।

"थे सोचो मास्टरजी, ठाकर के बार-बार मरैला। समाज मे जकी रिवाजां है बै तो निभाणी ही पड़सी अर थे डरो क्यूं हो, थारै जमीन रही, नौकरी रही।" पिरोतण बोली।

"गांव में इसो कुण मिनख है जका कै करजो नहीं है। करजा सूं काई घबराणूं। करजो मिनखा कैई होवैं है। अगर टैम पै म्हे की काम सूं चूकगा तो समाज में म्हारी नाक कट जासी।" महेश का परिवार रो एक चाचो बोल्यो।

"हूं कैरी हूं, थैं सारी बिवस्ता करो। मिसरजी नैं गरुड़ पुराण बांचण री कहैवाद्यो अर सारो इन्तजाम करो। थो पीसा देसी तो ठीक है नहीं तो वा जमीन बेच'र हूं देस्यूं खरचो।" महेश री मां बोली।

"पटवारी जी नैं कै'र हूं दो तीन दिन में सामान मंगा देस्यूं, खाड, घी, बेसण सो क्यूं। थे तो ठाठ सूं होवणद्यो ठाकर रो मोसर।" पटवारण बोली।

महेश सोच्यो बी की आज वाही गति होरी है जकी सात महारथ्यां रा चक्रव्यूह रा चंगुल में फंस'र अभिमन्यु री हुई ही। बीं नैं नैं 'हां' कैवतां बणी न 'ना'। धर्नै-धर्नै सारा जणा एक-एक कर जावण लाग्या। अंत में वो भी हार्‌योड़ा सिपाही की तरां पग बढ़ा तो बठा सूं चल दियो।

बखत रो बेली

□ मुरलीधर शर्मा 'विमल'

शिवरातरी नै घर-धणियाणी अर टाबर बास-मोहलै री लुगाया अर टाबरा सागै शिववाडी चल्या जावै। म्हैं म्हारै कमरियै मे ठालै पंसारी रै उठावै-मेल ज्यू, म्हारा पोथी पानडा रो उठावो-मेलो करूं। उणीज टेम म्हारा एक घणां नैड़ा साथी शर्मा जी आय जावै। मांय नै आर बैठता थकां कैवै—"एकर तो परबारो ही निकळ' हो, फेरूं सोच्यो मिलतो जावू तो ठीक रैवै, नईं जणा थे ओळमो देवता म्हारी गैळ को छोड़सो नी।"

"म्हैं आज रात री गाड़ी सू जैपर जा रैयो हूं, कीं मंगावणो हुवै तो बोलो?"

"हणै जैपर कांनी किया?"

"बीस तारीख नै भाणजी रो ब्याव है।"

"आज तो चवदं'ईं'ज हुई है, इतरा बेगा जार कांई करसो?"

"म्है कोई भांणजी रै नातै तो जा को रैयो नी! आ म्हारी सगी भांणजी भी कोनी। जा इण खातर रैयो हूं कै इण रो बाप म्हारो लंगोटियो यार है।"

"लिख्यो है, सागै रैयां वरस बीत ग्या, इं मिस सागै रैवणों भी हो ज्यासी। ब्याव तो म्हैं, बखत रो बेलीयो निभावतों, भाईपै सू अळगो होंवतो, एकंदम नूंवै तरीकै सूं, वैदिक परम्परा सूं करवा रैयो हूं। सामलो भी भलो आदमी है, एकंदम नूंवा विचारां रो। दहेज-परथा रो लूठो विरोध करणियो। सोनै में सुहागो है। काम-काज की नईं है। बस यारी ओळू आय रैयी है।"

"ओ देखो कांईं सांतरो कागद माड्यो है?"

मात-भासा मे लिखियोड़ै कागद रै मोती जैड़ा आखरां मे नवा विचारां नै बांच'र म्हनै घणो हरख हुवै। उण टेम शर्मा जी रै चै'रै माथै बापर्योड़ै

चैनकै नै लख'र म्हारी उवारै जूनै बेली मे घणी रुची जागण लागी ।

"थारो भायलो हुणै कांई करै है ?"

"जैपर मे एक बैंक में मैनेजर है । मीनै रा हजार डोढ़ उठावै है ।"

"कांई नांव है ।"

"नाव तो दीपचन्द है पण हूं उणनै यारी रै नातै दीपू कह्या करूं हूं अर वो भी म्हनै मूळचन्द री जाग्यां मूळो कैय'र बतळाया करै है ।"

"मिनख कांई है देवता है देवता ! लाखां में एक ।"

म्है शर्मा जी नै और खुलण री गरज सूं छेड़ूं—"पीसै आळी मोटी आसामी है, इण खातर तारीफां रा पुळ बांध रैया हो ।"

"श्याम जी थे भी जबर बात बणाई, बेलीपै रो पीसै सूं कांई नातो ? वो तो खैर पीसै आळो है पण म्हारै अठै तो घर में भुवाजी थड्यां करै है ।"

"बो म्हारो भायलो तो खैर हैईंज पण उण रो एक बीजो रूप भी है, जकै रो आज म्है ही नईं; जाणे जका सगळा घणो मान करै है ।"

"ऊमर मे थारो साईनो ही हुवैला ?"

"हां सांईनो ही समझो । म्हा सूं कोई बरस दोय एक छोटो है । म्हा दाई उणरै भी दोय छोर्‌यां अर दोय छोरा है ।"

"हाल तो आ पैलड़ी छोरी ही परणीजती हुवैला ?"

म्हारी बात सुण'र शर्मा जी कंई ताळ तो म्हारो मूंडो जोंवता रैवै फेर चेरै माथै की संजीदगी बपरांवता कैवण लागै—"हां पैलडी ही समझो !"

"क्यू, इण सूं पैला रो टाबर हाथ कोनी लाग्यो कांई ?"

"भगवान करै इसो टाबर कंई रै भी हाथ नी लागै अर जे लागै तो दीपू जैडी छाती भी देवै । धन है उणरी छाती नै ।"

"कोजी छोरी पानै पडी हुवैला ?"

"छोरी तो घणी फूठरी है । दाग तो छोरी री मां में परगट्यो हो पण दीपू री ऊंडी सूझ अर माहं वखत रै बेलीपै रै कारण बो चादड़लै रै दाग ज्यू बण नै रैय ग्यो । खैर, छोडो उण बात नै !"

"इयां नईं शर्मा जी, बात सरू कर ही दी है तो हमैं पूरी तो थानै करणीहीज पड़सी ।"

"आ छोरी सुची जकै रो पूरो नांव सुचित्रा है अर जकै नै दीपू ए०ए० ताईं भणा-गुणा'र अबै एक डाक्टर सागै परणाय रह्यो है आ है तो म्हा'रा बैन री बेटी पण केई और सूं ।"

"थांरो दीपू लव-मैरेज करी हुवैला ?"

'नईं जी साईं नै धोखै सूं परणाय दियो ।"

"ब्याव हुवण रै कोई छव एक मीनां पछै सातवो लागतांई आ छोरी

हुयगी !"

"जणा तो घणो रोळो-रप्पो हुयो होसी ?

"रोळै-रप्पै में कांई कसर रैंवती ? दीपू रो बाप तो खबर सुणतांई किसनगढ जा पूग्यो ! किसनगढ में ई तो दीपू रो सासरो है। पाछो आवतांई कह्यो-पूरी-माठी छोरो है। सतमांसी री बात बणा रैया है। आपा नै इसी छिनाळ राड नै घर मे पाछी को लावणी नी !"

"फेर कांई हुयो ?"

"हुयो कांई, दीपू रै दूजै ब्याव री त्यारयां होवण लागी। मोटी-मोटी आसाम्या चोखो देज-न्हैज रो लालच देय'र दीपू अर उणरै बाप रो घेराव करण ढूक्या। दीपू रा माईत तो त्यार हाईज। एक जाग्यां बात भी पक्की होयगी। पण दीपू साव नटग्यो—एक लुगाई होंवता थकां दूजो ब्याव नी कर सकू !"

"घर आळा घर सू नातो नी रैंवण रो "अल्टीमेटम" दियो पण दीपू टस सू मस नी हुयो।"

जात बिरादरी आळा आप-आप रो सिट्टो सेकण सारू दीपू सूं मिळता, म्हारी बैन रो चरित्तर लून-मिरच लगा लगा'र बखाणता। दीपू कैई दिन तो सुणी-अणसुणी करतो रह्यो। एक दिन पंचायती करणिया उणरै अठै जा ढूकै। उण रै बाप री भी सै ही।

"दीपू उवां लोगा री ऐड़ी रांत काटी, कै पूछो मत। लोगां रै कानां रा कीड़ा झड़ग्या। सै जणां आप-आपरो सो मूढो लियां टुर-बहीर हुया।"

"इतरो कैय'र शर्मा जी म्हारो मूंहडो जोवण लागै ! मैं पूछू—दीपू उवांनै कांई कह्यो ?"

बो पैला तो पूछ्यो—जात री पंचायती लोगां माथै आगळी उठावण सारू ही हुवै है, कै जात री भलाई री भी चेतै है।"

आज ई मूंगीवाड़े में लोगां रा दिन कटणा मुस्कल हो रैया है। पंचायती औसर-मौसर, देज-न्हैज, जीमण-जूठण आली किणी कुरीत नै छोड'र अणूतो खरचो कम करा'र लोगा रै भलै री चेती हुवै तो बताओ ?"

समै रै सागै बैवण री खिमता कैई मे जागी हुवै तो बताओ। नई जणा म्हारै निजू मामलै में पंचायती करणे री कैई नै दरकार नई है।"

"जात आळा कुण किसा भळ-माणस है म्हासूं छाना नी है। अंधारै उजाळै मे जिका मिस्टा चाटता फिरै उवांनै आज कोई की कोनी कैय रह्यो। एक लुगाई जात सू भोळ-खण भोळ में कुठोड़ पग पडग्यो तो सगळा जणा उण माथै आंगळी उठावण लाग ग्या। बा छोरी म्हारी है, म्है ब्याव सूं पैला म्हारी लुगाई सूं मिळ्यो हो। बोलो अबै कांई कैवो हो ?"

"थांरो दीपू घाकई जोरदार बात कैयी। गाभा में सै नागा है। दीपू

इतरी ऊंडी नी विचारतो तो थांरी बैंन री जिन्दगी खराब व्है जावती।"

"आ तो दीखती बात ही। दीपू रै छोड्या पछै उण रो धणी धोरी कोई नी हो। का तो जलम भर रंडापो भुगतती का वेश्या जैड़ो जीवण बितावती।"

एक'र तो दीपू में भी कमजोरी बापरगी ही। बो म्हनै आ'र कह्यो—मूळा म्हारो सासरो थारी भुवा रो घर है अर बै लोग आपां रै रसूक सूं भी वाकफ है। तू उठै एक कागद लिख दै—कै बै लोग की बात रो सोच नी करै। म्है खुदो-खुद जा'र म्हारी लुगाई नै लिआसूं पण उणरी छोरी नै उवां नै आपरे कनै राख'र पाळणी-पोसणी पड़सी। बांनै भी तो कीं दण्ड भुगतणो चाईजै। सगळा सूं बेसी गळती तो थारै भुवाजी अर फूफोजी री है जका आपरी छोरी नैं कंटरोल में नी राख सक्या। टाबर जणनो तो सैंज है, टोरो तो पाळनो है।

"दीपू रो कैंवणो वाजब हो। म्है उणीज दिन पूरी बात नै चोखी तरिया मांड'र लिख देवू।"

पण थे तो उणीज छोरी रै ब्याव मे जो आ रैया हो जकै नै थांरो दीपू आपरै कनै राखण री मां दीवी ही।

शर्माजी म्हारी बात सूं आपरै चैरै नै एक सांतरी मुळक सूं भरता कैवे—उण छोरी नै कांई समझ'र दीपू पाछी आपरै कनै लिआयो ईं परसंग में हीज तो दीपू रै चरित्तर रो सांगोपांग ऊजळो पख उघड़ै है।

"अच्छया !"

"हां, जकै दिन बो आपरी लुगाई नै ले'र पाछो आयो मैं उणीज दिन सिंझ्या पड़ी'सीक उणरै उठै जा पुगूं। आंगणै मे छोरी नै रमता देख'र म्हनै घणो अचूंभो हुवै !"

"बैठक में जा'र बैठ्या पछै मैं दीपू नै पूछूं—ओ पांचो क्यूं घाल्यो ? म्हारा फूफो जी तो साव लिख्यो हो कै छोरी नै म्हे राख लेस्या। जणां दीपू बोल्यो—बै तो राखण नै त्यार हा, म्हारै ही उठै छोडण री को जंची नी।"

"पण क्यूं ?"

"म्हारै ईं क्यूं रो जको उथलो म्हनै मिल्यो बस उण रै कारण ही म्है उण नै देवता जैड़ो मानूं हूं नईं जणा आज बखत री बाथां में अमूंजते मानखै कनै कठै इतरो टेम है कै बो आपू-आप सूं बारै निसर नै खुद रै अर समाज रै बाबत कीं विचार सकै। समै रै पावंडा सागै पावडा उठा सकै। ठरडीजणो बात बीजी है। समै रै सागै चालणियो दीपू जैड़ो बिरळो ही हुवै है।"

"बो कह्यो—पैली बात तो आ है कै म्है ऐलाण कर चुक्यो हो कै आ छोरी म्हारी है। नीं रांवतो तो लोगां री निजरां में गिरतो। अर लोगां री

निजरां सूं बेसी म्है म्हारी निजरां में गिर जांवतो।

"लुगाई लायो तो किण माथे किरियावर कर्‌यो ! खुद रै सुवारथ तांई लायो। लुगाई नैं छोड़ देवतो तो आ छोरी मतई छूट जांवती, पण खाली ई छोरी नैं छोड्या तो गुणंगारी मी होवता हुया भी भोत बडो पापी बण जांवतो। पापी मन नैं ढोवण जैंडी सामरथ कठै सूं लांवतो ?"

आ छोरी साव अनाथ हुई जावती। म्हारा सासू सुसरा आपरी जायोड़ी नैं नी सांभ सक्या जणा ई छोरी नैं संभालण रो तो सुवाल ही को होनी।

"मा रै लाड बिना एक ऐडो पिराणी पळतो जको सगळै समाज नैं गाळ्यां ठोकतो। उण रै सखरै अन्तस री दुरासीसां सूं न मालम कितरां जणा होमीजता !"

शर्मा जी रै चुप होवतांई मैं कैवूं—"वाकई शर्माजी, दीपू थांरो एकलो रो ही बेली नई है बो तो ऊंडी विचारणियो बखत रो बेली है। एक म्हारो साढू है जको बैम-बैम मे आपरी लुगाई नैं घासलेट न्हाख'र बाळ दी अर उडायदी कै स्टोव सूं बळ'र मरगी।

अरे राम-राम ! ई माथे तो हित्या रो मुकदमो दायर कर'र करणी रो चोखो मजो चखावणो चाई जैं।"

"चाईजै तो घणोई पण म्हारै सासरै आळा बापडा गरीब आदमी है। मुकदमैं बाजी मे की आणी जाणी नई है, पीसै रो खोगाळ करणो है।"

"आईज बात सांची है।" इतरो कैवता शर्मा जी उठ जावै। फेरूं कैवे—लो अबै इजाजत हुवै, पांच बजगी है, सात ताई ठेसण नी पूग्यो तो जाग्या मिलणी मुस्कल हो ज्यासी।"

बात रै आगै म्हारै हिरदै री पीड कुण जाण सकै ! टाबर पालै पड्या है··· कांई इणां रो ध्यान राखणो नीं चाइजै ? कांई मैं ओ नीं चावूं कै म्हारा छोरा फूठरा-फूठरा गाभा पैर'नैं इस्कूल जावै ! पण कांई करूं ! म्हारी आ आदत कोनी कै दूजां मास्टरां री तरिया मैं भी छोरां रै घरै जाव'नैं उणां रै मां-बाप सूं मिलूं अर ओ कैवूं कै—आपरो छोरो ठोट है, सा···अगर ओ कैय भी देवूं तो ओ हर्गिज नीं कैय सकूं कै—छोरा नै म्हारै कनै भणवा भेजो "क्यूं कै ओ कैवण सूं म्हारै स्वाभिमाण में की फरक पड़ै है। अगर कोई छोरो पिता री मरजी सू म्हारै कनै भणवा आवै परो तो मैं उणनैं भणाय देवूं ···पण छोरा रै लारै-लारै फिरणो म्हारै बस रो रोग नी है। पण छोरा इया पढ़ण नैं कद आवै है ! वे तो खासकर'नै उण मास्टर सा'ब रै घरै जावै हैं, जिको उणां नैं इस्कूल माय डरावै-धमकावै अर इम्तहाण माय कम नम्बर देवै···पण अंड़ा कामां सू म्हारो मन घणो दुखी हुवै है।

आज सूं अेक बरस पैला इम्तहाण री टैम मे अेक छोरो म्हारै घरै पढ़ण'नैं आयो हो। उण छोरा रै बाप म्हनैं कह्यो, "इण साल छोरो निकल जावै तो ठीक व्हैला, सा···"

"पास री गारंटी तो म्हारै कनै कोनी, सा···" मैं कह्यो, "पण भणावण मांय की कसर राखूंला नी।"

फेर कांई हो ! दूजै दिन बाप बेटे नै भणवा भेजणो ई बन्द कर दियो।

···पण अबै म्हनै वे सब बाता करणी व्हैला, जिको मैं हालतांई नी करी ही···नीतर लुगाई सूं माथा-फोड़ी हुवती ई रैवैला। ठीक है काल सूं मैं आ कोसिस ई करूंला कै ट्यूशन मिळै ! अर कहाणिया कवितावां बंद···अर मैं खाट माथै आराम सूं सोग्यो।

पण आज इस्कूल आयो तो डाकियो म्हनै अेक लिफाफो देय' नै ग्यो। लिफाफो खोल'नै कागद बांच्यो। अेक पत्रिका सारू सम्पादक म्हारै सूं अेक कहाणी री मांग करी है। सम्पादक कागद मांय लिख्यो कै मैं आले दरजे रो कहाणीकार हूं···अर मैं कहाणी नी भेजूं तो सम्पादक कांई सोचैला ! पण मैं कांई करूं ? अेक भी कहाणी लिख्योड़ी नी है···आफिस माय कुर्सी माथै बैठो बैठो मैं सोचूं हूं···अेक कहाणी लिखण सारू कम-सूं-कम दस-पन्दरै दिन लाग ई जावै···पण घरै बैठ'नै कहाणी लिखण लागूं तो लुगाई सूं मगजमारी करणी पड़ैला···वा ट्यूशन सारू म्हारो भेजो खावैला···पण म्हारी आ आदत नी है कै मैं भी दूजा मास्टरा री तरिया छोरा नै ओ कैवतो फिरूं कै थांनै पास करूंला, भणवा परा आवज्यो, नीतर काल थांरी-म्हारी बात···अैड़ी बातां म्हारै दिमाग में आवै तो घणी, पण छोरां रै सांमी कैवण नी सकूं। सायत म्हारी आतमा रो ओ असर व्हैला···अबै आतमा रै खिलाफ मैं पग आगे कीकर

घर्ड ! अे बाता म्हारी लुगाई नै किण तरिया समझावूं ! अगर इण बातां रो खीच रांद'नै उण रै आगै परोस देवूं तो भी वा ओ हीज कैवैला—कमावण री नीयत कोनी है'''कागदा माय आख्या फोड़णी हुवै तो आधी रात रा भी त्यार हो'''भला पड्या म्हारै ही'ज पानै ।

कीकर भी हुवै, म्हनै अेक कहाणी तो लिख'नै भेजणी व्हैला, क्यूं कै अेक तो कोई कहाणीकार री कदर कर'नै उण सूं रचना मंगावै अर अेक रचनाकार खुद भेजै'''दोयां माय की फरक पड़ै है !

कहाणी भेजण री बात तो ठीक है, पण कहाणी लिखूं कठै ? घर मांय तो लुगाई नै कहाणी सूं वैर है। घरै म्हारै हाथ मे कागद देखतां' ई वा कहाणी लिखण रो सक ई करैला'''अेकाअेक म्हनै तालाब मायं हनुमानजी रै मिन्दर रो ध्यान आयो। उठै बगीचो भी हैं। उठै बैठ'नै कहाणी लिखणी ठीक है। पण सवार री टैम घर सूं बारै जावण सारू की बहाणो तो चाइजै !''' ठीक है, लुगाई नै कै देवूला कै अेक सेठ रै घरै छोरा नै भणावण जावूं हूं। वा मोत खुश हुय जावैला'''पण महीणो पूरो हुवतां'ई वा पईसा रै बारा में पूछैला तो'''तो कांई ! झट म्हारै दिमाग मे बात आई कै एरियर बिल आवण आळो है'''आ रकम उण नै दे देवूला। आ बात ठीक जची है ! अर मैं चौथी क्लास री हाजरी रजिस्टर लियो अर क्लास री तरफ चालतो रह्यो।

सांझ रा इस्कूल सूं मैं घरै आयो तो लुगाई नै कह्यो, "सुणै है ?"

"कांई ?"

"कालै सवार री टैम अेक छोरै नै भणावा जावूला।"

"भलै जावजो, कित्ता रुपयां तै करिया हैं ?"

"सित्तर रुपया।" मैं कह्यो, क्यूं कै एरियर बिल सित्तर सूं कम नी है।

"यैं कहाणी लिखो तो भी थानै इतरा रुपया नी मिलै है अर आंख्यां फोड़ो वे अळगी !"

"यूं ठीक कैवै है।" अर पाखती पड्या मांचा मायं मैं लांबो हुआ अर कहाणी रो प्लोट बणावण सारू मगज नै झटको देवण लागो।

तीन जाळी खागयी

□ ईश्वरसिंह कुलहरि

वी दिन, मैं सुनियां ही उठ्यो। उठ्अर घराळी नैं कह्यो कै दो रोटी तावळी सी बणा देई। म्है पैल्याळी मोटर स्यू ही स्कूल जाऊंगो। घराळी वी दिन क्यू ज्यादा ही चेळ पर ही। पटापट दो रोटी बणा दी। घी सू चोपड रात की बाटघोड़ी लसण की चटणी घाल मी नै थाई। बोली ल्यो जीमो। घड़ औरत्याऊ हूं। म्हैं डेड रोटी अर आधो कीतो धई स्या की झट थेनो हाथ मे लियो अर तावळो-तावळो चाल पड्यो।

गेलै मे मोटर को घर्राट सुण्यो, तो जोर स्यू भाग्यो। भागतां-भागतां हाफन्दै भरग्यो। जद स्टैंड पर पूच्यो तो पतो लाग्यो कै बा तो कोई बरात की मोटर ही। खैर! बीस मिनट पाछै म्हारली मोटर भी आग्यी। मोटर मे पग टेकण नै भीज गा कोनी ही। म्है तो म्हारो चुपचाप ऊपर जाय की छात पर बैठग्यो। रामगढ आता ही मोटर मे नीचै जगां होग्यी। म्हैं भी नीचै आ ड्लेवर कै पीछै आळी सीट पर बैठग्यो।

वठै स्यू म्हारी स्कूल का एक मास्टरजी भी मेरै बराबर आळी सीट पर आकरो बैठग्या। बैठता ही बोल्या आपणै भी काल की छुट्टी करस्यो के? म्है बोल्यो क्यांकी? मास्टर जी बोल्या म्है सुणयो है कि कलेक्टर खाटू श्यामजी कै मेळै की छुट्टी करदी। मैं बोल्यो सुणनै स्यू काम कोनी चालै। आडर आसी तो आपां भी कर देस्या।

मोटर पैल्या की तर्‌या फिर खूब भरग्यी। कण्डेटर अर ड्लेवर चाय पी की आया र् मोटर फिर चाल पडी। मोटर पाच मिनट ताईं तो सड़क पर चाली। पाछ्अ कच्चै रस्ते पडगी।

मैं देख'रयो हो कि यो ड्लेवर बार-बार आपकै सामनै लाग्योड़ै काच मे के देखै है? म्है भी झुककी बी काच मे देख्यो। म्हानै एक जवान सो मुखड़ो दीख्यो। मेरै ड्लेवर की बात समझ मे आग्यी।

म्है भी म्हारलै मास्टर जी की नजर बचाक्की पीछै आळी जनाना सीट कानी देख्यो। म्हनैं बो गोरो सो मुखड़ो आधो ही दीख्यो। फिर एक बार फुर्ती स्यूं पीछै देख्यो। अबकै पूरो दीखग्यो हो। कुल मिलाक्की बा मो फूटरी लागैही। एक मनचल्यो छोकरो भी बार-बार बी कानी देखर्‌यो हो। बो होळै-होळै गुणगुना'र्‌यो हो "पल्लो लटकै गोरी को पल्लो लटकै जरा सो···।"

म्है विचारां मे डूब'र्‌यो हो। शायद ड्रलेवर मेरै स्यूं भी ज्यादा डूबर्‌यो हो। अतै में दो कोस आळो स्टैंड नेड़ो भी आग्यो। अठै स्यूं भी म्हारी स्कूल का एक मास्टर जी बैठ्या।

मोटर थोड़ी सी दूर ही चाली ही कै एक छोटै सै रेत कै टीबै में फंसगी। घर्र-घर्र। ड्रलेवर बोल्यो जाळी लगाओ। खलासी अर कण्डेक्टर जाळी लगावै लाग्या।

इतनैं में पैल्याळा मास्टरजी दूसरा मास्टरजी नैं बोल्या "देखो? थे बैठता ही कुसूण होग्या, मोटर टीबै मे फंसगी।" दूसरा मास्टरजी हाजिर जबाव हा। बोल्या, "म्है हूं जणां आ निकळ तो ज्यासी। नईं मे अठै ई फंस्या पड़्या रहता।"

मोटर चाल पड़ी। एक आदमी बोल्यो, "देखो? अतीसी दूर मं ही, तीन जाळी खाग्यो। एक छोरो जीनैं पतो कोनी हो कै जाळी के होवै, बोल्यो, "एक जाळी कतै की आवै?" खलासी बोल्यो, "तीस रिपियां की। "ईं पर वो छोरो बोल्यो, "ईं को मतलब आ नब्बै रिपियां की जाळी खाग्यी।" ईं बात पर मुसाफिर मोत हंस्या अर बो बिचारो शरमायग्यो।

म्हैं सोचण लाग्यो कै मोटर फंसगी ही अर जाळी लगाक्की निकाल ली। फिर चालै लाग्यी। अंयांई आपणै ग्रहस्थ की गाड़ी चालै है। जद ग्रहस्थ की गाड़ी कठै फंस जावै तो हर आदमी जाळी लगावणै की कोशिश करै। जै कै कनै छोटी-बड़ी सब जाळ्यां हैं अर जाळी लगाणो जाणै हैं बै तो आपकी ग्रहस्थ की गाड़ी आराम स्यूं निकाळ लेज्यां। कइयां कनै जाळी तो हैं पण लगाणो कोनी जाणै। मोतसा कनै न तो जाळी हैं अर न बै लगाणो जाणै है। अइयां की ग्रहस्थ्यां को के हाल होतो होगो? भगवान ही जाणै।

आ विचारां में म्है डूब'र्‌यो हो कि पाणचकै ही आवाज आई—उतरो भाई ठाठण।

म्हैं वेनो मेक्की नीचै उतरग्यो। पास मे ही स्कूल मे आ पूंच्यो। बी टाइम छोरा प्रापना कर की क्लासां में जार्‌या हा।

मिनी कहाण्यां

□ डा० उदयवीर शर्मा

पेड आपरै फळां सूं लडालूम होयो खड़्यो हो । फळ भी रस भरया डाळी पर झूमता जीवण रो रस लूटै हा । एक दिन एक फळ आपरो मून तोड़तां बोल्यो, "मन्नै लटकता लटकता घोळा दिन बीतगा । मैं इब डाळी सूं अळगो होस्यूं । दुनिया मे जीवण रो रस लूटस्यूं । तेरो मेरो काई लेण-देण ।" पेड पडूत्तर दियो, "जा, मैं तन्नै पूरो रसदार बणा दियो, पका दियो । इब कठेई जा । पण याद राखिए तू मेरै सूं अळगो नी हुई सकै । मेरो बीज तेरै मैं है । इण सूं मेरो तो वधेवोई होसी ।" बात पूरी होता होता ई फळ 'टप' दे तळै आपडयो ।

□

भायला री मण्डळी गैर-मपाटै पर निकळयोडी ही । मारग मे भांत-भात रा प्रश्न उठै हा, अर मिटै हा । एक रगीलो वातावरण होरयो हो । जणा एक जणो बोल्यो, "जिनगानी सघर्ष सूं सफळ हुवै ।" दूजो आपरो प्रभाव जमावतो बोल्यो, "जिनगानी दिवळै री ज्यूं बळणै सूं सफळ हुवै ।" ईं बात पर एक साथी तावणो सो आ'र बोल्यो "परिस्थितिया री चोट खा खा'र घडावळ री तरिया बाजणै सूं जिनगानी उजागर हुवै ।" जितणा साथी बितणा ई तरक सामै आया । जणा एक जणो जोर देंवतो बोल्यो, "ये सैग बाता तो 'भोगिया' री है । जिनगानी तो बीज री तरिया माटी मे मिल'र बलिदान होवण सूं अमर हुवै, त्याग सूं जिनगानी नै अमरता मिलै । भोगण नै तो मैं ई त्यार हूं ।" सुणता ई सै चुप ।

गांव मे एक नुवैं मन्दिर मे मूरती री थरपना होण आळी ही। एक जनसो मनरथो हो। भगत आवैं हा'र जावैं हा। भगती रो रमझोळ होरयो हो। घणी फूटरी अर मूंडै बोलती मूरती मन्दिर मे विराजमान होगी ही। वग पट खुल्लण आळा हा। मैं भी बी भीड़ में बैठयो दरसण रैं आणंद री वेळा नैं घणैं चाव सू उडीकै हो। मेरो नाम भी लोग भगतां मे लिख राख्यो हो। ई कारण मन्नैं आगली पांत मे बैठण रो आमण दियो गयो।

टेम पर पट खुल्या अर जै जै कार री धुन घणैं जोर सूं एक साथै होई। बा धुन रुकी कोनी, गूंजती रई। मन मोवणी मूरती रा अग अंग घणैं चाव सुघड़ता अर निपुणाई सूं बण्या हा। सैरो चित आपो-आप भगती भाव सूं भगवान कानी खिच्यो जारयो हो। सै भाव सागर में गोता लग्यारया हा। मूरती रा दरसण करता ही मेरैं मन में भगती भाव रैं साथैं एक भाव और जाग्यो कै इसी मूठी मूरती नैं बणाणियो कुण हो? बो भगवान सूं बड़ो कै भगवान बीं सू बडो। इतणै मे अचाणचक मन्नै एक दरगाव होयो, "सै चन्नण होगो, मूरती मे सैं भगवान रो साचल रूप परगट होयो अर बो रूप मे रूप मिलाया हाथ में हथोड़ी छीणी अर टांकी लियां एक जणो और दीख्यो" आंख खुली अर मेरो भ्रम मिटगो। मन हळको हळको लागै हो।

□

त॰ ॱाग्यो, "नदी! तेरैं वगतै निरमळ जळ मे मन्नैं भगवान रा दरसण होवै। तेरी आतमा तो घणी ऊजळी है।"

नदी पडूत्तर दियो, "आतमा तो तेरी अर मेरी एक ही है। यो तेरैं तप रो ही फळ है। तू ठोड गड़यो तपै है। जिसो आप होवै वैनैं दूजो भी विसोई दीखै।

□

गैनार्थी चालतो-चालतो गैले नैं पूछ बैठयो "अरैं गैला! तेरैं पैं देखां जठै ही धूळ ही धूळ पडी देखा। यो काई ढंग है। तू सदीव बगतो भी रैवै है है फेर भी धूळ ई पाती आई।"

गैलो बोल्यो "तेरे सरीखा चाल्या तो धूळ ही रैमी। मैं तो सत-पुरसा, वीरा अर सत महातमावां रै पाण ही जगमगाट करतो रैऊ। मेरी सोभा तो आं सूं ही बधै। ऐरा-गैरा तो घणाई बगता रैवै है पण सतपुरसा रैं वणायेड़ै गैला मे ई इमरत री बरखा होवै है।" गैनार्थी रैं घणो चिणगो लाग्यो पण

नोर कांई ? बात साची । गैला नैं देखें तो धूळ उड़री ही ।



एक सूंठो, जाण्यो मान्यो अर पीसा आळो मिनख बैस्या रै घरणां गयो । बठै लेण देण मे झगडो होगो । बात आगै बढगी । जणा वो बोल्यो "तू पापण है, कुलटा है, मेरो मूडो देखण रो धरम कोनी ।" इण बात पै वा बोली "मैं तो मेरी पेट री भूख मिटावण तांई यो धधो करूं पण तू तेरी मन री भूख मिटावण ताणी अठै क्यू ढूक्यो। बता पापी तू कै मैं ?" मिनख री मांयली आंख खुलगी अर वो पगां पड़गो ।



खेत री मीव पै ऊभो एक कूंचो मस्ती में लहरां लेरयो हो। बीं पै आयोडा छिरगा पून रै झोका मे नाचै हा । छिरंगा री मस्ती में आपरो हरख मिलावती एक चिडी भी पून रै पाण झोटा लेवै ही ।

झूमतो झूमतो कूंचो बोल्यो, "अरै चिड़ी तू मेरै पै बैठ'र मेरै मनरा सै भाव जाणगी । इब तू जा र दूजै कूंचै नैं ये बातां मतना बताई । नई तो तू आपसरी मे लडाई करा'र कूंचा रै घर मे लाय लगा देली ।"

चिडी झट दे पडूत्तर दियो "ये काम तो मिनखां जूण रा है। मैं तो 'पांख पखेरूवा' री जूण मे हूं । मैं तो आजादी सूं विचरूं, मस्ती सूं रोही मे रमू । मन्नैं इण दंद फंदा सूं कांई सरोकार । तू निरमै झूम ।" या सुण र कूचो घणो राजी होयो अर बी रै मूंडै सूं निकळी 'तू घणी भोळी अर सूधी है ।"



एक दिन मैं मळ मळ न्हायो धोयो, तेल फुलेल लगायो, सोवणा सरूप रूपड़ा धारया, घणो सज संवर'र एक बुकाव साधण ताणी त्यार हो'र मुखड़ो देखण दरपण ठायो। दरपण मे मुखड़ो जोवतां ही दरपण में सूं आवाज सी निकळ'र मेरे काना मे पडी "अरे तू नित हमेश मुखड़ो ही मुखड़ो जोवतो रैवै कदै तो तेरो मनडो भी देख लिया कर। जीसू मन रो मैल-माथ दिख ज्यावै ।"



मिन्तरां री मंडळी जुड़ी, विचारां री गोठ चालू, बातां रा कलेवा

उडण लाग्या । भांत भांत रा विचार आवै अर जावै । एक जणो प्रश्न करयो, "कोयल लोगां सूं दूर बागा मे रमै, सोवणी लागै । कागलो घर घर झाकतो फिरै पण खारो लागै । कोयल री 'कूहू कूहूं' मीठी लागै अर कागलै री 'कांव कांव' खारी लागै । ईं री कांई कारण ?"

दूजो मिन्तर लगतो ई बोल पड्यो "जे कोयल रै जगत री हवा लाग ज्या, तो बा खारी बोलण लागज्या । ईं में पखेरूवां रो कांई दोस ?" सै गम्भीर हुग्या ।

बूजी

□ बृजलाल स्वामी

बूजी सारै गाँव मे, ई नांव सूं ही जाणी पिछाणी जावै। मोटयार लुगाई, टाबर अर बूढ़ा सगळा बीनै ईं नांव सूं ही बतळावै। बूजी लोगां नै कदेई बजार मे चीज-बस्त लेवती, कदेई तलाव सूं पाणी ल्यावती, कदेई आटो पीसा'र ल्यावती सगळां री निजरां में आवती रैवती। चालती-चालती सगळां सू राम-राम करती, चावै जाण-पिछाण हो या न हो। कठैई मेळ मुलाकात हुंतो बठै घडी आध घड़ी बैठ'र घर बीती, पर बीती भी कर लेंती।

बूजी बरस सत्तर नैड़ी ही। पण कड़क ओजूं सांगोपांग ही। ईं ऊमर मे भी डोकरी न कुड़ी अर न हाथ में कोई लाठी राखती। हमेस घाघरो ओढणो अर झीणी सी कांचळी पहर्‌योड़ी राखती। हाथां में काळी-काळी सी एक-एक दो-दो चूड़ी, जिण में सोनै री तांत ही। कानां में सोनै रा मुरलिया राखती। पगा में टायर री चंपल, जको बारह मास रैवती। ईं रहन-सहन में ही बा हरदम रैवती। सियाळे मे पाळे रै आवतै वास्तै एक बोदो सो घूसलियो लपट्योड़ो राखती।

बूजी वास में सगळां सूं पैली उठती। उठती पाण जोर-जोर सूं राम-राम, राम-राम करती, जको आसै-पासै ताणो सुणीजतो। हाथ मूंडो धो दाणा पीसती। बूजी कदेई कळचाकी रो पीस्योड़ो नीं खायो। आटो पीस्यां पछै सालटेन रै च्यानणै घर रै मांय अर बा'रै बुहारी काढ़ती, पण मूंडै सूं राम-राम री रट लगायां राखती। हाथ अर जीभ दोनू सागै चालता, जाणै दोनू होड कर राखी है। वास री लुगायां वास्तै बूजी अलारम घड़ी ही। बूजी री चट्टी अर राम-राम री अवाज सुण, लुगायां उठती अर धन्धै लागती। लुगायां

कै'वती—उठो ए डावड्यों, बूजी जागगी। बूजी राम-राम के करती बास आळां वास्तै कूकड़ो ही बोल ज्यातो।

बुहारी झाड़ी कर, डोकरी दिसा जावती अर पाछी आ, तळाव सूं पाणी ल्यांवती। गाँव में वाटर सप्लाई री टंकी ही। गळी-गळी में टूंट्यां भी लाग्योड़ी ही। बूजी रैं सा'मलै घर में ही टूंटी ही। टूंटी रो पाणी पीवण में घणोई आछो हो, नीरोग हो। पण बूजी नैं तो पीवण वास्तै तळाव रो पाणी रूच्योड़ो हो। ईं वास्तै एक टोकणी तो रोज मूंडै अंधारै ही तलाब सूं भर ल्यांवती। तलाव भी साव नैड़ो कोनी हो। कि'तो आंतरै ही हो। तळाब सूं पाछी आवती जद ताणी की'कीं' ब्यानणो होवण लाग ज्यांवतो। बूजी नैं गेलै में लुगायां मिलती जकी बूजी नैं टोकणी भर ले ज्यावती देखती जणा घणो अचंभो करती। केई लुगायां टोकती थकी बोलती—बूजी, ईं ऊमर में इती बडी टोकणी, इती दूर सूं कियां ले आवो हो? टोकणी रैं ऊपर एक गूणियो न्यारो मे'ल राख्यो है। कमाल ही करो हो बूजी। पण बूजी कदेई पाछो ऊथळो नी देवती। बोली-वाली सुणती रैवती। घरां आय के जरूर आपरी मन री बात कै'वती कै लुगायां मनैं क्यूं टोकै है। लुगायां रो मैं काईं लेऊं हूं।

तळाव सूं पानी ला, डोकरी दो-तीन मटक्यां अर घड़ा टूंटी रैं पाणी सूं भरती। पाणी रो जापतो पूरो राखती। कदेई-कदेई टूटी उत्तर दे देवती पण बूजी रा घड़ा उत्तर नीं देवता। तलाव रैं पाणी री माटकी एक तिपाई पर न्यारी राखती। ज्यारूं मेर कपड़ो लपट्योड़ो जकै नैं गमियां में सारो दिन तर राखती। ईं कारण माटकी रो पाणी घणोई ठंडो रैवतो। दिन में कई मोव्यार अर लुगायां बूजी कनै आंवता, वा नै भर-भर गिलासा पाणी पावती। बूजी पाणी री ईं माटकी रैं की नै ई हाथ नीं लगावण देवती। खुद ही लूजै लोटै या गिलास में घाल'र देयती। कोई निस नीं लागण री बात कै'वतो तो बीं' नै भी धिगाणैं ही एक गिलास तो पिलाय ही देती। जको एक गिलास मतै पीयतो बीं' नै दूजी गिलास धिगाणै पावती। कोई पाणी नी पीवतो तो बूजी री आतमा दु:ख पावती। ओ ठंडो पाणी बड़ै जापतै सूं राखती। ईं वास्तै वा सगळां नैं वडै चा'व सूं ओ पाणी पावती, मन में मोत राजी होवती। डोकरी पाणी री बड़ाई करती बोलती, —"पाणी क्यूं नीं पीवो। इस्यो पाणी थानैं घरां नी मिलै। ईं में तो कैवड़ो घाल्योड़ो है, कैवड़ो। एक गिलास पी के तो देखो, किस्योक काळजो ठंडो होवै है।" अर आपसै मिनख री हा था ना थूं पैली ही मुळकती-मुळकती झट पाणी रो गिलास पावण वास्तै त्यार कर लेवती तिस नीं होवती तो भी पाणी तो पीवणो ही पड़तो।

पाणी रो पूरो जापतो कर, सिनान करती। सिनान कर मिंदर जावती। मिंदर में घणी देर ताणी भजन-भाव कर भगवान नै रिझावती। मिंदर सूं पाछी

सारी तुळसी अर चिरणामृत लावती जको गेलँमें बाँटती चालती। मिंदर सूं आय के गोबर पोठो चुग कर लावती, थेपड़ी थापती। घर में थेपड़ी रा ढिगला कर राख्या हा। पछै रोटी पाणी में लागती।

डोकरी कदेई चाय कोनी पीवती। लोग-लुगाई बी' नैं चाय रा न्यौरा घणाई काढता पण बूजी तो सोनैं रो टको दियो ही चाय नी पीवती। रोटी-बाटी खाय डोकरी थोड़ी घणी देर भी आराम नी करती। कदेई सूई-भूणियों ले, टाको-टेभो देवती, कदेई टूटी-फूटी भीत ठीक करती, कदेई मांचै या मांचली री दावण खींचती। भयंकर गरमी में भी डोकरी एक घड़ी चैन नी लेवती। गरमी में जद सगळां नैं नीद रा झोटा आवण लागैं। सगळा जठै माचो तकावै अर की रो भी काम करण रो मन नी होवै, बी' टेम भी डोकरी रो मन काम करण में रैं' वै। कदेई-कदेई तो काळै-उन्याळै भी घोलै दोपारे दाळ या दळियो दळन बैठ ज्यावती। एक हाथ में पंखी अर दूजै हाथ मे घट्टी रो हाथो। पून खावती अर घट्टी चलावती रहती। जीभ सूं राम-राम करती रैवती। तीन-तीन काम सागै करती। राम-राम करणो तो सारै दिन मे भूलती ही कोनी। सोवता, उठता, बैठता, फिरता अर धन्धो करता राम-राम तो करती ही। भगवान कृष्ण गीता मे जको उपदेश अर्जुन नैं दियो है कै तू कर्म भी कर अर मनै भी हरदम सुमिर। जाणै आ डोकरी ईं उपदेश रो आखर-आखर पालन करै।

बूजी आपरै घर में एकली ही रैवती। घर आळो कोई भी सागै कोनी हो। अणजाण तो आ जाणतो कै डोकरी रै आगै-लारै कोई कोनी। पण डोकरी रै बेटा-बेटी, पोती-पोती, दोहिता-दोहिती सगळा हा। डोकरी रै दो बेटा हा जका जोधपुर ही रेवता। जोधपुर में ही आपरो काम-धन्धो करता। सारो परवार कनैं राखता। डोकरी नैं दोन्यूं बेटा कह्यो, "मा, तूं भी जोधपुर चाल। शांति सूं रोटी खा अर भजन भाव कर। एकली पड़ी दुख पावै, फोड़ा भुगतै। पण डोकरी नैं तो ईं घर अर गाँव सूं अणूंतो लगाव हो। ईं गाँव बिना डोकरी नैं कठई आवड़तो कोनी। डोकरी साल मे एकाध बार बेटां-पोतां सूं मिलण वास्तै जोधपुर चली ज्यावती अर दस-पाच दिन रह आय ज्याती।

डोकरी पैली मास्टरां नैं आपरै घर मे भाड़ेती राखती। कदेई एक अर कदेई तीन-तीन, च्यार-च्यार। सगळा नैं रोटी बणा देवती। सगळां वास्ते बापड़ी पाणी भी भरती अर सेवा चाकरी पूरी करती। पण बदले में मास्टर रोटी बणाई रा भी पूरा पीसा नीं देवता। कई मास्टर तो पीसा खाय खाय रै चल्या गया। कोई जोर तो चालतो कोनी। इसी सेवा भावी लुगाई रो पीसो खावता भी लोग नीं हिचकै।

मैं भी मास्टर बणकै पहली पोत ईं गाँव में लाग्यो। मैं गयो बी' टेम डोकरी एकली ही रैवती। मास्टर पीसा खाय-खाय'र धोखो देय-देय'र जाता

रहता, जके सूं डोकरी रो मन खाटो पड़ग्यो। की' नै ही राखण रो जीव नीं कर्‌यो। संजोग सूं म्हारै रिश्तेदारां रै मारफत मनै बी' डोकरी रै घर में ठौड़ मिलगी। डोकरी बोलणं में घणी ही आछी। दो च्यार दिनां मे ही मनै बीं' रै सभाव रो पतो लागग्यो अर बा' भी म्हारो चाल चलन जाणगी। मैं भी म्हारो डोकरी रैं सागं ही वेगो उठतो। न्हा, धो, पूजा पाठ करतो, गीता रामायण बांचतो अर पछै लिखण पढण नैं बैठ ज्यावतो। एकलो तो हो ही। एकलै मिनख रैं रोटी पोवणी सगळां सूं मोटी आफत होवै। पण अठै आ' आफत टळगी। डोकरी न्याई-न्याई रोटी बणार खिलाय देवती बदलै में बापड़ी दस रिपीड़ा ही लेवती। डोकरी री तो मनस्या रिपीडा लेवण री नी ही, पण कि मजबूरी रै कारण ले लेवती।

दस रिपियां रै बदलै तीस रिपियां रो काम करती। बरतण मांडो मांजणो पाणी ल्यावणो, झाड़ू काढणो, सिपाळै में पाणी न्यायो कर न्हावण घर में राखणो बगैरा सारा काम बूजी ही करती। मनैं तो बेटे सूं बेसी राखती। मा सूं घणो प्रेम राखती। खुद कि चीज बणावती या बा' रै सू ल्यावती तो मनैं दियां बिनां नी खावती। बा भी म्हारै विचार सू राजी होगी। बास में मेरी बडाई करती-फिरती, कै मिनख कोनी देवता ही म्हारै घर मे आयो है मनैं रामजी कह'र बतळावती। कदेई नांव लेयके नीं बतळायो। बिना जी-कारो दियां कदेई नी बोली। म्हारै सू पैली जित्ता भी मास्टर रैवता सगळा दारू खोरिया नसा करणिया हा, पण म्हारै मे ईं तरीकै री की लत कोनी ही, ईं वास्तै डोकरी म्हारै पर घणी राजी ही।

मनैं डोकरी कनै घरां जीस्यो ही आराम मिल्यो। म्हारी सगळी चीज-वस्त डोकरी ही ल्यांवती। डोकरी ही धान-धात ल्यांवती, साफ करती अर कळ्चाकी सूं पिसा'र ल्यावती। ईं सूं बेसी और के आराम हुंतो। मैं घरां कदेई-कदेई ठंडी रोटी खावतो। पण डोकरी मनै कदेई ठंडी रोटी नी खुवाई। जिस्या कदेई इस्कूल मे मोड़ो हो ज्यावतो तो डोकरी चूल्है रै सारै रोटी री रुखाळी करती बैठी मिलती। मनैं घर में बड़ता ही ओळमो सो देती, बोलती—राम जी, मोड़ो घणो कर दियो नीं। रोटी ठंडी हुगी हुवैली। ठंडी रोटी सुवाद कोनी लागै। ल्यो बेगा सा जीमो। म्हारै हां या ना रो ऊथळो दियां पैली ही रोटी थाळी मे परोस देवती। मनैं पूरा गाभा भी नी उतारण देवती। बेगो सो थाळी कनै आ'र बैठणो पड़तो। डोकरी एक-आधी रोटी रोज बेसी खुवाय देवती। धाप्यां पछै आधी रोटी और थाली में घाल'र कैवती—रामजी, रोटी तो थोड़ी ही खाई है। इत्ती रोटी सूं काईं होवे है। पाछी भूख लाग ज्यावैली। धान तो पूरो खाओ रामजी। मेरै कनै कि जबाब नी मिलतो। बोलो-बालो रोटी खाय लेवतो।

बूजी जद रोटी बणावती होवती बी टेम मेरै कनै या डोकरी कनै कोई भी आवतो बी'नै थोडी घणी रोटी खुवायां बिना नी जावण देवती। डोकरी रै घर रै आगै बैठ्यो कुतियो भी डोकरी रै घर रो सदस्य हो। रोटी पोवती जद पैली पोत कुतियै वास्तै रोटी वणावती। रोटी बणाय, टावर नै जिया हेलो मारै ज्यूं ही कुतियै नै हेलो मारती—छोरा, आव रे रोटी बणगी। न्याई-न्याई खाय ले। कुतियो भी बूजी रो हेलो सागोपाग समझतो। हेलै रै सागै ही आय ज्यावतो। घर री पेड्या पर रोटी खा, पाछो भाज ज्यावतो। डोकरी टाबर नै ज्यू लाड करै या वदमासी करया झिडकै उण भांत ही कुतियै नै कदेई लाड करती अर कदेई झिड़कती भी। कुतियो भी जाणै बूजी री सगळी बाता समझै है। बो' भी कदेई पूछ हलावतो, कदेई होळे-होळे घूं-घूं री आवाज करतो अर कदेई डोकरी रै पगा पडतो। डोकरी भी बी सागै ई तरीकै सूं बोल बतळावण करती रैवती।

कुतियै पछै एक गाय री बारी ही। बी नै भी न्याई-न्याई रोटी खुवाय'र आवती। पछै म्हारै जिस्यां रो नम्बर हो। छेकड़ आप जीमण नै बैठती। डोकरी री खुराक भली चगी ही। भूख भी सांगोपांग लागती। घी, दूध अर दही रो नाव कोनी हो, पण छाछ जरूर मांगर ल्यावती। फेर भी ऊमर सारू हाड ठीक ही चालै हा। ई ऊमर मे भी किण रै भी सारू नी ही, उल्टी दूसरां री सेवा और करती।

डोकरी सगळै गांव में लोकप्रिय ही। ब्यान-सा'वै, एढै-मेढै डोकरी नै सगळा बुलावता। डोकरी भी बडै चाव सूं जाती। राजी मन सू काम करावती। मीठो धान खायर आवती बी रो हक देयर आवती।

ब्याव सावा ही नी दुखण पाछण अर ताव-बुखार मे भी डोकरी आडी आवती। पतो लागता पाण डोकरी झट पूग ज्यावती। आप सूं होवतो बिस्यो मा'रो ममावती।

वास आळा तो डोकरी नै घर रो सदस्य ही मानता। डोकरी नै आधी घडी बिठायर बात नी करता तो वा री रोटी नी पचती। डोकरी भी हँसती-मुळकती बैठ ज्यावती। दो च्यार आछी-मंदी करके फेरू आपरै घर्यं पर लाग ज्यावती।

रात नै डोकरी कठैई नी जावै। दिन छिपै ही मांचो मैडो ले सेवै अर नींद नी आवै जिती देर घडी-घडी राम-राम करै। सियाळै मे डोकरी मांचै पर नी सोवै। एक दिन डोकरी आपरी बतीसी मूढै सू काढर सिराणै राखी। रोज ही सोवती टैम सिराणै राखै। दिनूगे पाछी चढाय लेवै; दिन मे एक मिन्ट भी नी काढै। बतीसी भी इसी सागै जाणै साचला दात है। बी दिन जद डोकरी दांत सिराणै राख्या तो दिनूगै रौ डोकरी नै दात लाध्या कोनी। मैं भी डोकरी

नैं दांत ढूंढण में सा'रो लगायो। डोकरी घणी देर फिरोळा लिया। साळ रो खूणो-खचूणो सम्हाल लियो पण लाध्या कोनी। सेवट ढूंढता-ढूंढता ऊंदरै रै बिल रै ऊपर पड्या लाध्या। बिल छोटो हो, ईं वास्तै दांत माय गया कोनी, नीं तो डोकरी रै भारी आफत आय ज्यावती। मैं डोकरी नैं कह्यो—बूजी, दांत कोई डबड़ी में घालर राख दिया करो। ऊंदरो अर कुत्तो जात कुजात होवै है। खावै नी तो दूळाय जरूर देवै। डोकरी बोली—राखणा ही पड़सी नी तो हांडी हेठ हो ज्याऊं। नागड़ै खाधो ऊंदरो किया लेग्यो। गंडक नारेळ रो के करै। आज ताणी तो कदेई छोड्यो ही कोनी। मैं तो हमेस सिराणै ही राखू। मैं बोल्यो—बूजी, नालो रांड एकर ही होवै। डोकरी कि कांनी बोली। पछै रोजी नैं सोवती टेम एक डबड़ी में दांत घाल'र राखती। ऊंदरै वाली बात डोकरी कदेई नी भूली।

ईं तरीकै सूं बूजी आपरी जिंदगी रा दिन ओछा करै ही। वा कर्मवीर मिनख री साक्षात मूर्ति ही। कर्म मे ही पूरो भरोसो राखती। ईं कर्म रे पाण ही डोकरी इती उमर में भी सुख-चैन री बंसी बजावती। भगवान करै ईं डोकरी नैं माचो नीं झालणो पड़ै अर चालती-फिरती नैं ही रामजी बुलाय लेवै तो बापड़ी री काया सुधर ज्यावै। मैं डोकरी कनै बा'रा महीना रै यो। पूरा बा'रा महीनां बाद म्हारी बदली म्हारै गांव रै सा'रै होयगी। डोकरी जद म्हारी बदली री बात सुणी तो घणी ही बेराजी अर दुखी हुई'। मूडो उतार लियो। मनै भी घणोई दुख आयो। डोकरी जकी म्हारी सेवा चाकरी करी ईं रो बदळो मैं पांच वस दे'र नीं चुकाय सक्यो। ईं डोकरी री सेवा मनै जिनगी भर याद रहसी अर ईं डोकरी नै मैं जीस्यूं जठै ताणी नी भूल सकूं।

इस्कूल सूं बिदाई आळै दिन मैं इस्कूल सूं सीधो ही बस-स्टैंड गयो हो। पण डोकरी भी बस स्टैंड आयगी ही। आंख्यां में आंसू भरेडा, बोली नी नीसरी। मेरी भी आंख्यां मे आंसू पड़ण लागग्या। बोल नीं सक्यो। मैं जेब सूं दो रिपिया रो नोट काढ़'र झलायो। पण डोकरी हाथ जोड़ लिया। रिपिया नी लिया। थोड़ी देर में मोटर आयगी। मैं डोकरी रै पगां रै हाथ लगा'र चालण लाग्यो, डोकरी गळ-गळा कंठा सूं बोली—रामजी, थे तो थांरै टाबरां कनै जावो हो। भगवान थानैं नीरोगा राखै। मोह लगाय, म्हानैं दुखी करके जावो हो।

मैं पाछो को उथळो नी देय सक्यो। गीली आंख्यां सूं एकर डोकरी कानी देख्यो अर मोटर में आय'र बैठग्यो।

आज भी मेरी आंख्यां आगै बूजी री स्टैंड आळी मूरत ज्यूं री ज्यूं है। ईं मूरत नैं मैं भुलाय नीं सकूं।

ठाकुर सा'ब

□ भीखालाल व्यास

टेसण रै प्लेटफारम माथै पड़ियोड़ी चौथी बैंच, जिकी के उण मोटोड़ै नीबड़ै रै नीचै पड़ी है, उण माथै म्हैं उणां नै रोजीना सिझ्या रा बैठ्या देखूं। धोळी-फट्ट मूंछां, माथा माथै छोटा-छोटा धोळा वाळ, खवर माथै अंगोछो, धोती अर बायां हाळी बनियान। वै रोजीना ठंडा पोर रा अठै आय जावै अर जठाताई अंधारो नी व्हे, अठै बैठा रैवै। अंधारो व्हैं जरै अठा सूं बहीर व्है जावै। मैं जदै सूं अठै आयो हूं, उणानैं अठै नित बैठा देखूं। म्हैं सिझ्या रो खेलण नैंजावूं जरै ई उणां नै उठै बैठा देखू अर पाछो वळूं जरै ई। म्हैं पैली तो उणानैं नमस्कार कर'र बहीर व्है जातो, पण एक'र वठै थम्यो।

'आओ, बेठो !' नैंनोसिक उणा री बोल सुण'र म्हैं खाली जगै माथै बैंठग्यो।

'खेल आया।' पाछो हल्कोसिक मूंछां री कंपन।

'हां सा।' अर उण पछै घणी देर ताई री चुप्पी। ओ म्हारो उणां सूं पिछांण रो पैलो मोको।

उणां पछै तो म्हैं उणानैं मिळतो इज रैवतो। पण हालताई उणा सूं म्हारी कदैई घणी बात नी व्ही।

उण दिन म्हैं निरात मे हो, क्यूं के हवा तेज चालण सूं उण दिन वॉली-बॉल री खेल व्हियो कोनी। म्हैं उणा खनै आय'र बैठग्यो।

'आप ठाकुर सा'ब रोजीना ई अठै आय'र अकेला इज बैठा रेवो।' म्हैं बूझ्यो।

उणां नै साराई मिनख ठाकुर सा'ब इज कैवे, हालांकि उणां री नांम मोवनसिंह चवांण है।

"हाँ विद्या री टैम बारै निकळ जावूं। कठै फिरण नै जावौं, सौ अठै आय'र बैठ जावू। अंधारो व्है जितरै अठै इज बैठा ठंडी हवा खावां।' उणां र मूंढा मांय एक ई दांत नी हो जिण सूं पोपळा मूंडा सूं व्है बोलता जरै होठ थोड़ा मुड़ जावता।

—ठाकुर सा'ब, आप नो घणा बरसां ताई नौकरी करी। म्हैं बात नैं आगै बधावू।

—हा, म्हैं सन् १६०६ मांय नौकर व्हियो हो। सिरफ सोळा बरस रो हो जरै। उणणचाळीस बरसां ताई म्हैं मास्टर रियौ। जिणरा बाप नैं पढायौ, उण रा बेटा अर पोता नै ई पढ़ाया। अर व्है पोपळा मूंढा सूं हुंसण लाग्या।

उणां री हुंसी माय म्हैं ई साथ दियौ। बोल्यौ—यूं इज है सा, चाळीस बरसां माय तीन पीढ़ियां तो व्है इज जावै।

—हां, जरै इज तो केवू। चालीस बरसा पैली रै टैम अर आज र टम मांय घणो फरक पड़ग्यो। काई वौ टैम हो। हमे तो व्है इन्दरलोक री बाता बणगी। उण टैमरा मास्टर री घणी कदर ही। छोरां नैं ठोकता तो हाड-हाड बोल जावता पण मजाल है के छोरै रै मूंढा सूं 'चूं' ई निकळ जाय, के उणरो बाप सामी आंख करने ई देख लै। आज तौ नी व्है छोरा रह्या है, अर नी व्है मास्टर।

—हां सा, हमे तो छोरां रै हाथ ई नी देय मका। म्है हुंकारो भर्‌यो।

—उण टैम तौ केवता हा के—छड़ी याजै छम-छम र विदिया आवै घम-घम। पण एक बात है, उण टैम री पढियोड़ो छोरो घणो हुंसियार व्है-तो। हमें छोरों रै मार नी पड़ै है तो छोरा ई किमाकसु धरै है, जिको, दिखै इज है। आजकल री सिखा तांई उणां रै चैरा मार्थे गुस्सौ फिरग्यौ।

—और कांई, पण यू है ठाकुर सा'ब, छोरों रै हमें तो, हाथ लगावां तो ई छोरों हेठो पड़ै। म्हैं मुळक्यौ।

—आ बात आप साची कैवो, हमें डालड़ा खायोड़ा छोरा अर मास्टर। हिम्मत ई कोनी। कांई व्हो जमानो हो'''रिपिया रा मण गऊं मिळता। म्हैं पैली वार नौकर व्हियो जरै आठ रिपिया तणखा मिळती, पण आठ ई मो-कळा व्हैता। उण टैम तेरै रिपियै मो'र मिळती अर देसी घी'''पांच आनै पक्को सेर, पैंताळीस पइसां भर रो। कैवता-कैवता ठाकुरसा'ब विचारों मांय खोमग्या।

—हां सा, व्है तौ सस्तीवाड़ै रा दिन हा। हमे तो पढ़ण सुणन नै मिळै।

—म्हैं व्है दिन म्हारी आंख्यां सूं देख्या है। छोरों रै घरै पढावण जावतो जरै बिदांमां रो सीरो अर दूध नास्तै मांय मिळतौ। पण एक बात है मास्टर सा'ब, उण टैम जितरो सस्तीवाड़ो हो, मिनख उतरो ई भलो हो अर आज जितरो मैंगीवाड़ो है, मिनख उतरो ई पक्को बणग्यो है।

—हां सा, हम तो चाळीसें'र सुभ्भा-लफंगा बणग्या है। कुए भांग पड़ी है।

—आं आ इज बात है, जदै इज तो म्हैं चाळीस बरसां ताई छोरां नैं पढाय नैं भी मिनख नैं नी ओळख सकियो।

म्हनैं लखायो, ठाकुर सा'ब की गंभीर बात कैवणी चावै है। उणां रै चैरा माथै हमें रै जमाना री हालतां जाणी मैं'रो रोष दिखै। म्हे उणां रै कथण नैं नी समझ सक्यो हो सो। मैं'लो म्हे यूं उणा कानी देखण लाग्यो।

म्हारै मन री बात स्यात् व्हे समझग्या हा। व्हे स्यात आज आप रै मनरी बात खोल'र कैवणी ई चावता हा।

--म्हारै जवानी री टैम खूब आराम सूं खावण-पीवण मांय निकळोड़ी है। जितरो कमायो उण सूं सवायो खरच कियो। म्हनै म्हारा छोरा रो पूरो प्रेम मिळियो। आज वी म्हारा पढायोड़ा छोरा घणी ऊंची जगां मायं है। म्हैं उणा नैं उपदेस देवतो अब आज म्हनैं लागै म्हारो दियोड़ो उपदेस अकारथ को गियो नीं। व्हे म्हनैं मिळै, म्हारा सूं आसीरवाद लेवै, घणी-घणी ऊंची जगां उणा नैं म्हनकार बणोड़ा देखूं तो म्हारो जीव राजी व्हे, पण पाछो फिर'र देखूं तो यूं लागै जाणै म्हैं जो उपदेस देय रह्यो हूं, जो उपदेस दिया है, जो सीखामण दीनी है, वा सफा झूठी है। केवता-केवता व्हे सांमी देखण लाग्या।

सिंझ्या होय री ही। सूरज भगवान आपूणी दिस मांय आराम करण जावता हा। आभै मांय ललाई फैल री ही।

--क्यूं सा ऐ'ड़ी कांई बात है! म्हैं उणा रो ध्यान भंग कियो।

स्यात् आज व्हे आपरै हियै री सगळी बात म्हनैं केवणी चावता हा। बोल्या—म्हारै टाबर नी व्हियो। बस धणी-लुगाई दोय जीव हा। लुगाई रै केवण सूं म्हैं म्हारै भाई रै छोरै नैं गोद लियो। छोरो इनकम टैक्स विभाग मांय बाबू है। म्हारै ग्रेचुटी पइसा, बीमा रा पइसा अर पेंसन री रकम मिळी जितरै तो वो मीठो-मीठो बोलतो, कदै-कदै उणरी लुगाई म्हारै घरै रैवती, पण जदै उणानैं विसवास व्हेग्यो के म्हारै घरै फूटी-कोडी ई कोनी, उणं म्हनैं टरकाय दियो। हमें वो तो म्हारै कनै फेर कदै-कदै आवै पण उण री लुगाई तो कदै ई को आवैनी। इण सारला दिनां मांय इसो विचो पहैला आ तो म्हैं कदै ई सोची ई कोनी ही। जद इज तो केवूं कै जिणां नैं मिनख बणावता उमर निकाल दी, पण जद घर कानी देखूं तो यूं लागै कै म्हैं म्हारै जीवण मांय कीं सफळता को पाई नी। सफा फिजूल इज मिनख पणो गमायो। उणां रै आंख्यां री कोरां मांय नैना-नैना दोय मोती चमकया, उणां ए धीरैसिक पोंछ दिया पण अधारो व्हे जावण सूं म्हैं तो उणा री हाथ इज आंख तक आवतो-जावतो

देख सक्यो।

—आ तो इण जमांना मांय सगळी ठौड़ दिखै। मिनख पइसा सूं मोह राखै। म्हैं बोल्यो।

—आज इण उमर मांय जद म्हनै आराम चाहिजे, म्हैं तीन-चार टाबरां नै पढावूं, उण सूं मिळै जिण सूं म्हैं दोन्यूं जीव पेट नै भाड़ो देवां। सरकार म्हनै मांन दियो, राष्ट्रीय इनाम दियो, म्हारो जगै-जगै सनमान व्हियो, म्हारै सनमांन मांय जुळूस निकळ्या, म्हारो अभिनन्दन व्हियो, पण आज कै दिन जद म्हैं घर मांय बैठ'र इण टाबरां साथै माथापच्ची करूं, जरै इसो लागै, जाणै ए सारा ई सनमान, मांन, अभिनन्दन अर पुरसकार सारा री आधरी जगै, आपरी ठौड़, एक इज है, वो है पइसो—पइसो। माया—माया—थारा तीन नाम—फूसो, परसो, परसराम। इण घुटण री जिन्दगाणी सूं ऊब'र म्हैं अठै अेकांत मांय आय'र बैठूं।

अठै बैठ्यां सूं म्हनै सांति मिळै, अेकांत मांय सोचण री मौको मिळै अर म्हनै उण दिनां री याद आवै जद म्हारो जगै-जगै सनमान व्हैतो। इण आवती-जावती गाडियां मांय कई मिनख मिळै, म्हनै नामसकार करै, म्हैं उणा रा हालचाल बूझूं। कोई कैवै आपरी दिया सूं कलेक्टर हूं, कोई कैवै मैं सोलदार हूं, कोई कैवै डागदर हूं, म्हारो जीव घणो राजी व्हे। म्हैं उणा नै 'बेटा' कैय'र बुलावूं। म्हनै लागै इतरा सारा म्हारै टाबर है, म्हारा घर-ढाळा है, म्हैं अेकलो नी हूं, म्हारो परिवार घणो लांबो-चौड़ो है, अर मन मांय इण उमर नै काटण री हूंस व्हे।

म्हैं उणां रै चैं'रा कांनी ध्यान सूं देखण लाग्यो। म्हनै उण चैं'रा माथै महानता रा दरसण व्हिया—ओ चैं'रो, ओ सामी बैठो आदमी कितरी बड़ी बात सोच रह्यो है, कितरा ऊंचा विचार है इण रा, विसालता री मूरत, परतख 'वसुधैव-कुटुम्बकम्' रो उपदेश देतो कोई महांन रिसि।

अंधारो वधग्यो हो। ठाकुर सा'ब अर म्हैं दोन्यूं ई उठ'र बहीर व्हिया।

म्हैं रोजीना उणां नै उण बैंच माथै बैठा देखूं, पण नमसकार कर'र बहीर व्है जावूं। सांच्, काई ठा ठाकुर सा'ब री आइया आगै इण टैम किण बगत रा विसराम आयोड़ा व्हैला।

म्हारो भोळो भाळो गोपाल

□ ओमदत्त जोशी

बेणीगोपाल दीखण मे फूठरो रूपाळो है। पण भगवान उणां रा जीमणां पग मे खोट वाड़ दी। इण में भगवान नै दोस देओ अर चावो उणा री पूरबला जनमरी करणी मान ल्यो। अणूतो गोरो गिचाक तो नी है, पण हां उणां नै किसन जी रो साळो भी नी कै सकां। चालती टेम एक पग हिलोळो लेवै, ज्याणे बळद गाड़ी ऊचा-नीचा गेला पर चाल री होवै।

मा-बाप री एकली औलाद, आख्या रो तारो, अधारा घर रो उजाळो, मन रो प्यारो, वंश बढ़ावण वाळो, घणो प्यार, हेत, हमलास रा पालणा मे पळ रियो हो। बेणीगोपाल नै देखण सू आप अनमान नी लगा सको कै ओ आठवी मे पढ़ण वाळो टाबर है। उणा नै आप चौथी सूं ऊची किलास मे पढ़ण वाळो नी जाणोंला। पोथ्या अर कोप्या रा बोझ सू उणा रो जीमणो मोंदो दब ग्यो जो आंधा नै ही आठ कोस सू दीख जावै। उणां रा गांव मे पाचवी सूं आगे इस्कूल नी ही जिण सू उणा नै डोढ कोस आणो अ'र डेढ़ कोस पगांरा पांण जाणो पड़तो हो। पढ़ण में कदेही नागा नी करतो, उणा री माथा ऊपरली फिर जाती सो बात दूजी ही।

बेणीगोपाल रो मूडो गोळ, काठा गेहू रा पतळा फलका ज्यूं उपसेरो, आख्यां मोटी पण ऊण्डी बैठेड़ी ज्याणे पांच कोस पर सो वाट रो बिजली रा लट्टू जुतेड़ा हुवै। आंख्या उण टैम आख्यां रै चारू-मेर पाच-सातेक सळ पड़ जावै, सळ री ऊपरली चामड़ी काळी अर सळ मे भेळी होवण वाळी चामड़ी गोरी ही। माथा पर केसां री कटिंग अणगण कुवास सूं करायेड़ी ही। दांतां री पूरी ऐरनी करतो हो जिण सूं उणां पर पीळा रंग री रेख मंडगी ही ज्याणे पीतळ रो पतरो चढ़ा मेल्यो हुवै। आंख्यां रा भूंवारा में कदेही कदेही गीड चिपकेड़ा रह

आवै। गाभा पेरै तो मूगा है पण दरजी उणा नै बिगड़ [illegible]
पैरण में बूट भी है पण हाकादरवड में नित पैर'र नी आवै [illegible]
जीमणों पग थोड़ो जियादा ही डोडो पड़न लाग ग्यो हो।

एक दिन इस्कूल मे मोड़ो आयो तो म्हैं कारण जांण बा तांई हमसास सूं पूछ लियो—"क्यूं रे गोपाल इतरो मोडो क्यू आयो आज ?"

बेणीगोपाल डरतो डरतो केवण लाग्यो—"मा' छाब म्हाला पीताजी नो जीव सोगो कोनी जिण सूं मोड़ो होग्यो।"

'कांई बात होगी थारै पीताजी रै ?"

"गोपाल पाछो याद करतो करतो केवण लाग्यो—"अजमेल में डाकटल घाल बीमाली बताई, एक···एक तो बलड पेसल, अल···अल-दूजी हाल-टेक, अल···तीजी गैस ली, अ···ल ··चौथी डील बिखल वाली।"

म्हैं मन ही मन हंसरियो हो, उण हसी नैं बारै नी निकळवा दे रियो हो, क्यू कि बारै निकाळतो तो गोपाल री बोली बन्द हो जाती। इण गू मू इस्यो दुखी मुडो बणार सुण रियो हो ज्याणं वे सवळी मांदगियां म्हारे हीज लाग री हुवै। बेणीगोपाल री बोली ही इसी है क सुणबा वाळा नैं आपू आप हंसणों आ जावै। छोरा जद उणरी बोली पर हसे तो मू वानैं घणा हेला करु अर गोपाल नैं भी केह दियो कै थारी बोली माथै कोई भी छोरो हसै तो तू म्हनैं कह देबो कर। पण भोळो गोपाल आज दिन तांई कांई छोरा री ओळमो म्हारा तांई नी ल्यायो भले ही छोरा उणां नैं खूब हसो अर चिडाओ।

गोपाल म्हारा हिया मे रमग्यो। इण री कारण आप ओ मत जाण-ज्यो के हूं बासदो हू। पण फेर भी म्हारै समझ मे नी ऐठी ? उण री थोडोक दरद म्हारी जबरी मुसीबत बण जावै। गोपाल कांना सूं भी थोड़ो क ऊंचो सुणै। थोड़ा दिनां पछे म्है उणां नै पूछ्यो—"क्यूं रै गोपाल अबै कयान है रे थारा पिता जी रै ?"

गोपाल गेल्या ज्यू होर गाबट नैं होळा होळा हिलावण लाग्यो पण मूंडा सूं कोई उथलो नी दियो। अर एकण ओर सुणवा तांई कांना नैं ऊंचा कर तियार होग्यो। इयां देख'र मैं पाछो जोर सू केकायो तो गोपाल मुरज्यायोड़ा मूंडा सू बोल्यो-- "मानछाब कालै सकवाली मांदगी होगी पछै म्हाला गांव मे माता जी रै थान माथै सेग्या। उठै भोपानै भाव आयो जो···जो···विमो क···म्हालो ही दोष है, तीन दिना में ठीक कल देस्यू, म्हनै लाजी कल दीजो, पछै उणा नैं जोल उवाली अन···अ···ल आदा डील लैं भभूत मयली, पण हाम तांई म्हनै कोई फलक नी दीखै।" केता केता गोपाल रै आंख्यां में आसू चमकण लाग्या, म्हारो भी हियो भरग्यो। गोपाल नैं पूछ र म्हैं गलती करग्यो, ज्याणैं मैं उणा पाकेड़ा दूखणा री पाटी उखाड़ली, उणां री दुखणों सोयो जाग होग्यो। उणां

नै मैं हमलाम सूं समझायो क जियादा सोच नी करणों, जो भगवान करसी सोई खरी है। उणां नै हुसियार डागडर नैं दिखाओ, तियार हो जासी। पण सपूत बेटो बाप री मांदगी सूं आधो रैग्यो, दुबळा नै दो असाढ़। म्हनैं उणां री नानीक जान मे हजार दुख देख'र इचरज होरिया है, भगवान उणां रै दुख नै झट मेटे।

बापड़ो लीडर

□ सेवाराम सोनी

एक गाँव में एक लीडर रॅवतो । बी नैं सारा गाँवगा लीडर कॅवता, जिकै सूं बी' नैं थोड़ी कब्जी हुगी । बण देख्यो कै सगळा मनैं लीडर कँवै है तो फेर इस्यो मौको कद आसी । ईं लीडरी गो फायदो उठावणो चाहीजै अर आजकल सगळै लीडरां गी चालै ई है ।

आ' बात विचारगे बण भाषण देवणां सरू कर दिया । जठै भी दो चार आदमियां नैं भेळा होएड़ा देखतो बठै ई राजनीति अर राज गी बातां करतो । सगळां सूं घणो बोलतो अर दूसरा गी सुणतो ई कोनी । पचायत घर में जासगे आसण जमा देवतो अर आपगो दळियो दळतो रॅवतो । मारवाड़ी में आ का'वत भी है कै बोलै बीगा बोरिया ई बिक ज्यावै अर नी बोलै बीगा आम ई पड़्या रॅ'वै । अनपढ़ अर भोळा आदमी बीगी बातां सुणन नैं बीगी चौकी पर जा पूगता । कई जणां तो चिलम तमाखू पीवण वास्तै ई पूग ज्यांवता अर बो' आपगी लीडरी गो घासो पांवतो रॅवतो ।

बो' नैं लीडरी थोड़ी घणी फळापी भी । बो पंचायत गै चुनावां में पंच बणग्यो । एक तो करेलो अर फेर नीम पर चढ़ग्यो । अब तो लीडर आपगी लीडरी गा रंग दिखावणा सरू कर दिया । सरकारी करमचारी जे बी' नैं सलाम नीं करता तो कि करड़ो करड़ो रॅवतो अर सलाम न करणियां गी सिकायत कर देवंतो । कुम्हार बो कुम्हारी पर तो जोर चालै कोनी तो गधियै गा कान मरोड़ै । गाँव आळा पर तो लीडरी घणी चालती कोनी तो बिचारा करमचारियां नैं सारै पटग्यो । करमचारी भी बीगी लीडरी सूं तंग आग्या । पंच बापड़ा के करै । बां'गी कुण सुणै । बिचारा सरपंच कनै पुकार करी तो सरपंच बोल्यो—बारो के लेवै है, बो' बकै है तो बकण देवो । बक के रै जिसी । कई करमचारी तो

चुप होग्या पण कई वीं'गी हाजरी देणी शुरू करदी। पाजरी देवणियां गी लीडर साव वडाई करनी सरू करदी।

एकर वण सोच्यो कै ईं गांव गी इस्कूल गो एक भी मास्टर मेरी तिय कोनी बांचै। मास्टरा मे वडी आयड है। बां' नै पतो कोनी कै ओ' लीडरा गो जमानो है एक आध लीडर गी जी-हजूरी आच्छी हुवै। मैं भी पूरो लीडर हूं। मेरी भी की तो पावली पांच आना मे चालै ई है। फेर के देर लागणी ही, वंग आपगी लीडरी गो पक्को रंग मास्टरा पर दिखावणों सरू कर्‌यो। जद भी वीं' कनै दो चार आदमी मेळा होवंता, तो कंवतो कै यानै वेरो है के इस्कूल मे टाबरां गी पढाई किसीक होवै है? मास्टर एक आंक कोनी पढ़ावै। बै तो रोज मण्डी चल्या जै, अर गांव आळा मास्टर आपगै खेत चल्या जै। हेडमास्टर सगळै मास्टरा सू डरै। राज तो सम्हाल करै कोनी। इस्कूल मे तो गोधा छोड़ राख्या है गोधा!

वंण लिखगे ईं बात गी शिकायत करदी। इन्सपैक्टर गै दफ्तर सूं कई दिनां बाद मास्टरां नै पतो लाग्यो। दफ्तर गै एक बाबू मास्टरा नै बतायो कै थारी तो शिकायत होगी। शिकायत कण करी है आ बात बाबू भी कोनी बताई।

आ' बात सगळा जाणै है कै लीडरां गै दो च्यार चमचा (जी हजूरिया) भी होवै। लीडर साब रोज इन्सपैक्टर साव गै दफ्तर मे चमचा समेत पूग ज्यावतो अर रोळा करतो, कंयतो थे म्हारै इस्कूल मे गोधा घाल दिया। न तो छोरां न पढ़ावै अर न पूरा इस्कूल ई आवै। मास्टर तो रोज पिक्चर देखण मण्डी चल्या ज्यावै।

वीं' लीडर सूं तंग आएड़ा इन्सपैक्टर साव छोटियै अफसर नै मौकै'गी जांच पड़ताल करण वास्तै भेज्यो तो पतो चाल्यो कै मास्टरां'गो कि कसूर कोनीं। पंण लीडर किया मानै। वो' बोल्यो औ अफसर तो मास्टरां कनै सू घूस खायगे इया कैवै।

आखरकार इन्सपैक्टर साव खुद लीडर'गै कैवण सूं जांच करण वास्तै आया। आयगे देख्यो तो इस्कूल में आदमी मेळा हो रैया हा अर घणा लोग मास्टरा गै' पख में दीस्या। इन्सपैक्टर साव कै आवता ईं लीडर बनै आर आपगी लीडरी भाषा मे बात करणी सरू करदी। खुद'ई बोलतो गयो पंण दूसरां'गी सुणै ई कोनी। खासा देर साव सुणता रैया। भीड़ सू एक भी आदमी कोनी बोल्यो। पछै इन्सपैक्टर साव कैवण लाग्या कै लीडर साहब अब थोरो-घणी वीं म्हारी भी सुणो। थानै तो कांव-कांव करता एक घंटो होग्यो। म्हारै कनै इत्तो फालतू टेम कोनी।

लीडर बोल्यो सा'ब जनता गो राज है, लीडरां गो राज है। लीडरां

गो न मुणस्यो तो फेर कीगी सुणस्यो। म्हारे कैवण सूं गांव आळा मास्टरां गी बदली तो जरूर कर ई देवो।

सा'ब बोल्या, नेताजी बात थारी सोळहा आना साची है। राज जनता गो, राज लीडरां गो, थारी नी सुणस्या तो फेर कीगी सुणस्या। पण गांव'गे मास्टरां सूं तो थानै फायदो ई है। अै' न तो मकान मांगै, न लकड़ी मंगावै, न दूध मंगावै। दूर'गा आसी जिका लकडी, पानी, दूध सब मंगासी।"

लीडर कै'वण लाग्यो—"सा'ब, म्हानै अै, मास्टर कोनी चहिअै अर ओड़कानी ईसारो करतो बोल्यो—क्यूं भाईडो, मेरी बात ठीठ है या कोनी?" पंण एक भी आदमी लीडर'गी हां में हां कोनी मिलाई।

इन्सपैक्टर साब समझ गया अर रीसां मे बोल्या—लीडर सा'ब थानै अै' मास्टर कोनी चहिअै तो मैं तो इस्कूल मे मास्टर ई भेजस्यू, तसीलदार थोड़ाई भेज देस्यूं। इस्कूल गी जांच पड़ताल'गो काम म्हारो है, थारो थोड़ो ई है। थे आ' लोडरी थारै घरै जा'र करो।

बापड़ो लीडर आपगोसो मूंडो लेगे, घरा उठग्यो।

आविष्कारा रो विधाता : पूनमजी मिस्त्री

□ अर्जुनसिंह शेखावत

तखतगढ़। राजस्थान रै पाली जिला रो एक गांव। जठै एक गजब रो वैज्ञानिक अंगरेजां रै टेम सू लगा'र आज तांई साधना करे। बासठ बरस ही उमर मे उणा बावन आविष्कार करेने मानखां री घणी सेवा कीदी है।

ऊँची धोती, खादी रो कुर्तो, सागणा सावटा काळा अंगरेजी बाळ, दाढ़ी मूछा साफ, गेहूंवा रंग, ढोगो कद, भरीये डीलै—ओ है मिस्त्रीजी रो होळीयो। इणा रै पंचमुखी हड़ूमान रो इष्ट है। आपरो जनम १९१४ मे सुथारा रै घरे हुयो। उणारे बाप लकडी नै मकान बणावण रो काम करता था। इयां रो पूरो नाम पूनमजी लखाजी मिस्त्री है अर पी० एल० मिस्त्रीजी रै नांव सूं ओळखीजै, सरीर नै दूद सुथार रो है। आपरी भणाई-पढाई तखतगढ़ मे इज व्ही, मिस्त्रीजी रो जीव ठेट सू इज मशीनो रै काम मे हो। अणा बाळपणा में इज दो बीसी मण बोझ री एक मोटी तिजुडी बणाई ही, जिणने गलत कूंची लगा'र खोलवा री कोशिश करै तो उण चोर रो हाथ तिजुड़ी में इज गिरफ्तार व्हे जातो। इणी भांत एक रेल रो इंजिन भी आप बणायो थो पण अंगरेज ये चीजां से सीदी अर नाबालिग समझ नै कोई पण ध्यान नी दीनो। अंगरेजा रै राज में इज आप एक आना प्लेटफारम टिकिट री मशीन बणाई जिणरी खासीयत हेती कै असली नकली सिक्का री पिछाण करणी अर भार रो टिकट देवणो। नकली सिक्को जे नाखै तो टिकिट नी देवै। अंगरेज सरकार छः मीना तक इणरी जांच कीनी पछै विलायती मशीनां री जगा मिस्त्रीजी री मशीनां सैंगा पैली बम्बई रै ठेमण मांयं मेलीजी अर मिस्त्रीजी नै अंगरेज सरकार मान पत्र दीनो अर ७० मशीनां फेर तावड़ तोबड़ बणावण रो हुकम दीनो। पण उण

टेम स्वराज सारू 'भारत छोडो अंदोलन' जोर में हो नै अंगरेज भारत छोड़ण आळा इज हा, इण खातर आप ओ ओडर मंजूर नी करियो।

मिस्त्रीजी री जिन्दगी में म्हा नेकेई खासीयतां दीसै। उणारी जिन्दगाणी सतरंगा इन्दर धनक रै ज्यूं विज्ञान रा आवा में पसरतो जायर्‌यो है। सिसार में शायद इज कोई ऐड़ो वैज्ञानिक व्हेला जिको इत्तो भगत भी व्हेला। मिस्त्रीजी हड़मानजी रा पक्का भगत है—दो डोरा रोज दिनूगै पूजा करै। पंचमुखी हड़मान आपरा इष्ट देव है अर सगळा आविष्कार आप इणांरी पुन-परताप अर दया-महरबानी इज समझे है। केई बार सुपना में हड़मानजी खुद इणा नै आविष्कारां रो इशारो करै अर मारग बतावै, भेद बतावै। आप एक साथै वैज्ञानिक अर दार्शनिक है, आविष्कारक अर भगत है—एड़ो दाखलो दुनिया में फेर कठेई शायद इज मिळै। दूजी बात, इतरो मोटो लूंठो वैज्ञानिक व्हेता थकां पण भणाई-पढाई खाली पाचवी किताब तांई इज है। इण सूं ऐड़ो लागै के कवि इज नी जनमे वैज्ञानिक भी जनम सूं व्हे सके है, आ भी कुदरत री देण है। इण भात सादगी, आध्यात्मिकता अर वैज्ञानिकता री त्रिवेणी संगम मायं गांव रा वातावरण ने तीर्थराज तखतगढ़ बस्योडो है। सै'र री भाग दौड़ नै हाका दरबड़ सूं आगो, एकांत, शांत गांव री गोदी में बैठो ओ तपसी मून झाल'र छानो मानो बैठो-बैठो कितरा गजब रा काम काट दीना है, के केबा रो काम नी। केई बार मिस्त्रीजी नै दिल्ली अर बम्बई रा बुलावा आया पण इणा रो पडुत्तर हो के— "म्हाने म्हारी जनम भौम सूं घणो लगाव है अर भगवान जे म्हारी उण सै'रों में जरूरत समझतो तो म्हने उठे जनम देतो, गांव मे क्यू देतो। इण वास्ते अठै जिको साधन सुविधावां मिल सकै उण सूं इज म्हनें मानखां री सेवा करणी चाइजे। म्हने इण माटी सूं प्रेम है अर सै'र रो वातावरण म्हारै यूं भी माफक नी व्है।"

मिस्त्रीजी घणेरा उपयोगी आविष्कार कीना है—जिण मे खास खास नीचे मुजब है :—

(१) चलती साइकिल मे हैण्डिल मे लागोड़ो बटन दबावण सू अपणे आप हवा भरीज जावै। पूरा खाली ट्यूब में बीस सैकिण्ड मे हवा भरीज सकै है।

(२) एक बळद रै भार सू चालण आळा एक पाणी काढ़ण रा पम्प रो भी आविष्कार कीदो। १६ फुट व्यास आळा पेड़ा मायं बळद जेड़ो कोई भी जिनावर रै खाली गोळ गोळ फिरण सू निकळ जावै, भलई बेरो कित्तो ई ऊंडो क्यूनी व्है। एक बळद रै भार सूं ३५०० गैलन एक कलाक में अर ६००० गैलन पाणी दो बळदां रै बोझ सू निकळ सकै गर, जे बैरो से ७० फुट तक

उण्डो व्हे ।

(३) एक हाइड्रोलिक जळ निकळवा री मशीन भी बणाई है जिण सूं बिना सक्ति नै मेंणत रै आपी पाणी बारै आय जावै । मशीन अपणे आप आवी खुले नै बंद व्है ।

(४) मिस्त्रीजी एक अपणे आप चालण आळा पंखा नै उजाळा रो भी बन्दोबस्त कीनो । इणमे भी चलावण मे बिजळी बीजी किणी सक्ति री जरूरत कोनी । जद कोई आगदी किणी भात विछावणा माथै बैठे तो अपणे आप लाइट लाग जावै अर पंखो चालू व्है जावै और पाछो उठता ही बंद व्है जावै । जे पाछो नी उठे तो तीन कलाक तांई चालती रेवै । गर जे फेरूं चालू राखणो व्है तो पाछो उठ नै बैठणो पडेला ।

(५) इणी तरै एक रोबोट री आविष्कार कीदो । जिण सू कोई कार या जोम फाटक सू २५ गज आगी रेवै जद को द्वारपाल ऊभो व्है आवै अर सीटो बजावै, सलामी देवै, साइड बतावै अर फाटक अपणे आप खुल जावै । गाडी निकल्यां पछे अपणे आप बंद भी व्है जावै । ए सगळा काम-काज अपणे आप व्है जिको कार रै पाछी जावण री वेळा नी व्है ।

(६) एक फोल्डीग चेयर कम बेड विथ फोल्टिंग टेबिल बणायी है, जिण मे कुरसी, टेबल नै पलंग तीनी है । चावो तो टेबल कुर्सी लगा'र लिखो पढो नै सुवारी मरजी व्है तो पलंग बणाय नै सुई जावो ।

(७) एक दो-सीट आळी अपणे आप चालण आळी कार भी बणाई है जिको बिना पैट्रोल कै गैस रै चाले है जिण मे चाबी लगावा की भी जरूरत कोनी । इण में खर्च होवण आळो सक्ति सू अपणे आप मिलण आळी सक्ति घणी भेळी व्हेती रेवै । सक्ति भी अपणे आप चालण री क्रिया सूं इज भेळी व्है ती रेवै ।

(८) एक आविष्कार इण तरै रो है कै जिण रै पांण सड़क व्यवस्था सू बिजळी पैदा कर सकै है ।

(९) एक ऐड़ी घासलेट री बत्ती बणाई है कै जिण टेम लाइट परी जावै उण टेम अपणे आप लाग जावै ताकि अंधारो नी व्हे सकै अर काम नी रुकै । इण लैम्प मे घासलेट अर ड्राई सैल व्है जिको बिजळी जावता ही अपणे आप बळै नै बिजळी आवता ई अपणे आप बुझै ।

(१०) एक खास आविष्कार गो चमत्कार है कै दो रेलगाडियां एक

इज लैण मायँ आय जावै तो बीमेक पांवटा आगी दोनूं रेल-गाडियां अपणे आप रुक जावै, किणी भांत टक्कर व्है इज नी सकै, इणरी मिस्त्रीजी गारंटी लेवै । इण रै वास्ते रेल्वे लाइनां नुंवी विछावणी पड़ै ।

(११) अबार आप एक "हॉरिजेन्टल ऑटोमेटिक पावर प्रोडेक्शन मशीन" रो आविष्कार कर रया है, जिण नै चलावण सारू किणी भांत री सक्ति, तेल, कोयला के ईंधन री जरूरत कोनी-पड़ेला अर मशीन रै चलण सूं जिकी सक्ति पैदा व्हेला उण सूं ट्रांसमीटर सिस्टम सूं केई तरै रा मानखां रै उपयोगी मशीनां अर यंत्र चलावण रै खातर काम मे लीयो जा सकेलां, ज्यूं कै विद्युत जनरेटर्स चलावणो, बेरा सूं पांणी काढणो नै पावर लूम वगैरा चलावणा वगैरा ।

इण आविष्कारों रै अलावा ऑटोमेटिक कम्प्रेशन कनेक्शन, मोटरगाडी रै पेड़ो फुलावां रो यंत्र, चोर पकड़बा रो यंत्र, पुड़िय नै रोटियो बणावण री मशीन, एक खास टिफिन केरियर, कलम कर्न ले जातां ही अपणे आप खुलण आळो नै बंद होवण आळो दवात, लगातार बेवा आळो पांणी रो कनेक्शन वगैरा-वगैरा मोकळी मशीनां अर यंत्रों रो आविष्कार कीनो है ।

सगळां आविष्कारां री मोटी खासीयत आ है कै करीब करीब सँग अपणे आप चालण आळा (ऑटोमेटिक) हैं, उणां रै चलावण सारु कोलचा, बिजली, तेल कै ईंधन री जरूरत कोनी ।

रेडियो रूपक

पड़दा भरम रा

□ सुरेन्द्र 'अंचल'

पात्र : मिन्दर, मजीत, गिरजाघर, कवि, सायर

[संगीत रो सुर उभरै अर होळै-होळै ढबै]

मिन्दर : मजीतऽऽ ! सूतो है क' जागै ! अबै तई कांई ऊंघै। उठ ! सिझ्या फूलरी है। अे मजीतऽऽ !

मजीत : कुण म्हेला ! अमां मिन्दर ! कांई केवै भाई बुतपरस्त !

मिन्दर : ईद रै दिन थूं गुमेज मे आवसियोड़ो हेतो, पण अबै आंख्यां फाड़'र देख, दिन भर मे कतणा लोग सुगाया, म्हारी इण देळी पै नाक रगड़'र आतमा ने सान्ती दीवी। म्है थ्हारे सूं किणी बात मे कम न्हीं हूं।

मजीत : ला होल बिला कूवत ! क्यूं कूड़ो घुमेज करे रे मिन्दर ! थोथा चनां बाजै घणा। इं बातां मे सार को हे न्हीं। म्हारै सारली भींत तो निरख ! इस्कूल रा छोरा टाबर मूती कर कर'र जावै ! किती गिधावैं। नाक फाटै !

गिरजो : (गूंजतोड़ी आवाज) वाह मजीत वाह ! दूजा री खोट तो झट दीसै, पण भूद री मां ने डाकण कुण केवै ! म्हारै सारली भींत तो निरख मे ! रमजान री बीबी दिनुगैई छाणा थेप जावै।

मजीत : (झुंझला'र) थो कुण ! दो जणे री बातां रै बिच्चे टांग अड़ा-वणियों। अपूठो !

गिरजो : (तीन बार घण्टा घरणा'र) म्है हूं गिरजो। प्रभू यीसू रो इबा-
दातगाह।

मजीत : क्यूं घण्टा बरणा'र माथो चढ़ावै ! ईसामसी रै पवित्तर नांव सूं
कितणो कोतग रचायोड़ो है थूं। सो कुण न्हीं जाणै ? छानो मानो
बैठ जा।

गिरजो : अरे अफंडी ! म्हारा अफंड जग में चावा। देख, म्हारै पैं ऊबो
मौलवी जी क्यूं हाका करे ? खुदा, थोड़ो थोड़ो ना सुनै।

मजीत : देख भई गिरजा ! तन्नै बात करण रो सळीको ईज न्ही। जाणै म
बीर्णं। अरे मूरख, मौलवी तो खुदा इबादत करै है। इण नै 'अजान'
केवै। क्यूं भाई मिन्दर। ठीक है न्ही ?

मिन्दर : कई धूड़ ठीक है। कबीर सायब री साखी उडीक—

काकर पाथर जोरि कै—
मस्जित लई चुनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे—
क्या बहरा हुआ खुदाय।

मजीत : तो काई म्हारा राम जी बतरा ठाला है क' हरदम इण भाटे री
मूरत में ईज बैठ्या रैवै ! उणां रै और कोई काम ई न्ही ?

गिरजो : म्है दोन्यू ई अफंडी हो। अबै तई सगळै इतिहास ने म्है लोई सूं
रातोचट्ट रग राखियो है। मिनख-मिनख में खाईयां खोद राखी है।
अबै तई म्हारो पेट न्ही भरियो ?

मिन्दर : ओ हो ! अरे, गिरजा सा'ब, आप तो अबै तई अखन कँवांरा—
दूधां न्हायोड़ा ईज विराज्या हो ? क्यूं ? पोपलीला रा दिन लद
गिया। पोप तो सुरगां जावण रा सर्टिफिकेट भी देवणां सरू कर
दिया हेता। भूल गियो उण रो नतीजो ? दूजं ने सीख दिया पैला
अपणं खुद रै गिरेबान मे झाँक'र देख।

मजीत : (धीरप सूं) भायां, लड़ाई में लाडू को मिलै न्ही। धीरै बोलो।
आज रो मिनख सैं समझै। उवौ तो आजकल "वसुधैव-कुटुम्बकम्'
री बातां करै। सुणो, उवो कवि काई गावै—

[संगीत रो सुर उभरै अर होळै-होळै दबै]

कवि : मंदिर मस्जिद गुरुद्वारों ने
बाँट दिया इन्सान को !
धरती बांटी, अम्बर बांटा—
मत बाँटो इन्सान को।

[संगीत रो सुर उभरै अर होळै-होळै दबै]

गिरजो : (ऊँची सांस ले'र) हाँ भाई। बात तो साव सांची। आपै इण मिनख नाव रै जीव ने कठा तईं बिलमायोड़ो—बांटयोड़ो राखांला। अबै भरम रा पड़दा फाटणै लाग गिया है। कठां तईं टांका दे दे'र टांग्योड़ा राख सकांला।

मजीत : चुप ! सूर जी आथूंणै चाल्या ! नमाज रो टेम व्है गियो।

[संगीत रो सुर उभरै—डबै]

मौलवी (अजान की तीखी आवाज) अल्लाहऽऽऽ !

(संगीत रो सुर उभरै-डबै)

समूह रो सुर : (घण्टा अर नगाड़ा रै सागै ऊँची आवाज)

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन,
हरण भव भय दारुणम् !
नव कंज, लोचन कंज मुख-
कर कंज, पद-कंजारुणम् !

[संगीत रो सुर उभरै-डबै]

दूजो समवेत सुर : वन्दना करते हैं हम !
वन्दना करते हैं हम !

[संगीत रो सुर उभरै—डबै]

मिन्दर : (फुसफुसातोड़ो) देख्या म्हारा ठाट ?

मजीत : वाह रे मिन्दर, वाह रे म्हारा ठाट ! औ ढोंग ? देख, उवो सेठ जी अबै हाल अेक गरीब बळाई री गाय ब्याज पेटे छीण'र ल्यायो है, अर अठै सवा रीप्या रा पतासा बांट'र भगत बण गियो है। अर, उवो देख, उण धरम रै नजीक ऊभ्योड़ो पुजारी रो चेलो, उण विधवा सिणगारी ने घूर घूर'र कांई देख रियो है ?

मिन्दर ना मजीद था ! छानो रै ! थूं धोळो धप्प फरिस्तो है, जिको जाणूं हूँ। बोल, खोलूं म्हारी पोल ?

गिरजो : मिन्दर चुप ! मजीद तू भी चुप। अतरै जोर सूं मत ना लड़ो। म्हनै तो डर लागै है। आपस में लड़णा काम को नईं। लो सुणो, उवो सायर कांई फुरमावै है—

[संगीत रो सुर उभरै—डबै]

राम वालों को रहमान से बू आती है।
अहले इस्लाम को भगवान से बू आती है।
किस तरह करे ख़िदमते इन्सां कोई—
जब कि इन्सान को, इन्सान से बू आती है

[संगीत रो सुर उभरै—डबै]

मिन्दर : सुण्यो के न्ही ! कान रो मेल सफा कर'र सुणो। अबै आपां रो जादू इण आदमी री जात पै न्ही चालणो। आपां री बातां इणा रै काना पड़गी तो आपां तो आपा, पण छोटा मोटा सगळा आपणां भायां री जिनगी खतरे में पड़ जावेली। पछै न्हीं तो राम बचावण ने आवेला, न खुदा, न ईसा मसीह। अबै तो ओ मिनख भीतर ई भाखरां-नांगळ, भिन्दरी, हीरा कुण्ड, राजस्थान नहर, जेड़ी जाग्यां ने मिन्दर, मजीत, गिरजा अर गुरुद्वारां रै ज्यूं पूजणो सरू कर दियो है। जिकण सूं काळ री कमर टूट री है। खेतां में दूणो धन धान होवण लाग्यो है। भरम रा भाखर ढह रिया है। वा, अबै, घणी गी अर थोड़ी री। थोड़ी में छिण-छिण जाय। आदी रात रो गजर बाज गियो। अबै निमस्कार सुणाण दयो।

मजीत : सलाम !

[संगीत उभरै—दबै]

म्हूं जनता हूं

□ भगवतीलाल व्यास

जन्म जन्मान्तरां री कांणी सूं
एक राजा'र एक राणी ने
काढ़'र
लारै जो बचे अजाणी
पोथ्यां में न्हीं मळै जिणरी विगत
अलोप पण घट-घट रम्योड़ी
अदीठ पण
मनख री गंध रे सागै बस्योड़ी
जुगां-जुगां री ठोकरां झेलती
मे'ळ माळिये री धजा न्ही
गांव-गोठ री धूळ
कदै आकासां उड़ती
तो कदै पाताळां पोढ़ती
सगळै ही अंधकार नैं ओढ़ती
म्हूं हर जुग रे
मुंडै सूरज री तिथता हूं
म्हूं जनता हूं।

म्हैं देख्यो है कौरव-पाण्डव जुद्ध
रगतां रा खेयाळ

हण्डा रा अड़ावळ
दिसावां नैं चीरतो हाहाकार
धरती नैं धीजतो जै जैकार
अर इण सब रै बीच सूं
निपरतो गीता रो ग्यांन
कृष्ण रो विज्ञान
काम न्हीं आयो
म्हारी लटां खेंचता दुशासन रै
म्हूं निरगन्ध गांधारी

माटी री बेटी
माटी में रुळगी
राम रावण रै बैर री
अणूती सैनाणी
निरदोस सुळगती लंका
हड़ूमान नैं हाथ जोड़ पूछती
म्हारो दोस कांई ?
म्हनैं क्यूं जाळो ?
हड़ूमान कांई कैवें—
उणनै तो राम रै अभियान री
पुष्टी करणी ही
आपरै सरीर बळ री तुष्टी करणी ही
म्हूं खुद आग ही
पण मूण धार जळगी
म्हूं इण भारत रै कण-कण धणी
महाभारत री अबूझ भासा
लंकारी राख में दव्योड़ो
अचपळो सवाल
म्हूं आदकवि री
अणलिखी कविता हूं
म्हूं जनता हूं ।

तुरक-पठाण फिरंगी रो पगफेरो
सत्ता रो

सिधामण रो
अणथक निरत
कतरा ही कतले थाम
म्हारी पुतळयां में बन्द है
घोडा री टापां तळै
ममळघोड़ी फसलां रा उसांस
म्हूं हियड़ै मे सहेजू हूँ
बिळखता टाबरां री चीतकारा

कंकू री ओघां ने काटता
दुधारा
धामण्या रो उतरतो पाणी
कंचन रा कलस भरै
मद रा छलकता प्याला
ऊंचा-ऊंचा गढ़ कोटां रो
मन मोवनो जोबण
एक मूग री दो फाड़ बीच
ठगी अणबण
कतरी ही पनास्यां'र
कतरी ही हळदी माट्यां
थर कतरा ही धावळा रै
रगत रंग्या माटां सू
मूछ री मरोड रो मोल तो
पूछ देखो
शायद न्हीं बता सके
म्हूं बताऊं
इण मरोड रै खातर
अरप्या म्हैं करोड़ां मुण्ड
फेर भी म्हूं निपूती न्हीं
म्हूं गरभ गंगा हूँ
सागमान ममता हूँ
म्हूं जनता हूँ ।

यो म्हांरो देस छै

□ श्रीनन्दन चतुर्वेदी

यो म्हारो देस छै
ईं को मुकट छै हिमाळो
ललाट पै छै' तरपुंड
जेहळम, चनाव, रावी को
बीदी छै मोट्यार डल झील
ईं की नाड़ पै पड़ी छै
चाँदी की चमचमाती कणठ्यां
सतळज अर ब्यास
ईं की छाती पै मंड्यो छै अतहास
वीरता को जोहर को।
काँधा सूं कम्मर तांईं
पड़ी छै मनी होई अनेव
जमना अर चामल की
कम्मरबंद छै नरमदा की धार
गंगा सींध अर बरमपुत्तर छै—
उत्तरीय
पगां पड़्यो छै
मोत्यां का थाळ सं'र
हींद महासागर
ईं धरती को कण-कण छै तीरथ—
ईं नै बांट्यो छै इमरत

जणा-जणा सूं कै'र
कै—जीवो अर जीबा दो
जुगां-जुगांन सूं जगत का कणा मं
घोल्यो छै सदेसो—
तू इमरत को बेटो छै
सोवै मत मनखड़ा
चालबा सूं चालै छै भाग
तू चाल !
चाल रै चाल !
ईं नै परनाम म्हारो छै
यो देस म्हारो छै

अै हाथ......

□ म० ना० कौशिक

अै हाथ......!
किस्तयां चलाता
पाणी री गति नै चीरता
मन मुजब
गेड़ा काटता समुद्र री छाती पर
पण—आज
कट्योड़ा हाथां कनै
टूट्योड़ी डांडां है
सुपना तो बै'इ है
पर दिन दूजा है।

अै हाथ......!
कदैइ
सस्तर अ'र सास्तर उठावता
आज
परायो परसाद पावण नै
मजारां पर खड़्या
मिन्दरां रै सामै बैठ्या
अै कतारां साम्बी'इ साम्बी है
पण—हाथ
आधा पड़दा है।

अ हाथ……!
सूरज उगावण नैं
रातां रा पहाड़ काटता
दिन विसूजण री बाट देखैं
उमर रो एक दिन और बीत्यो
जाण--चैन री सांस लेवैं
आज—आ'रा मूंडा
आपरैं'इ
हाथां स्यूं ढकयोड़ा है।

अैं हाथ……!
जद जद ऊंचा उठता
आसमान आसीरवाद लेण नमतो
पण आज—आस्यूं
बैसाखी रो सा'रो'इ झलैं कोनी
हाथा रैं दुःख स्यूं हाथ
आंधा हुयोड़ा है।

अैं हाथ……!
सिन्धु रैं गरभ स्यूं
अणमोळ मोती ल्यावता
आज—खूंट्या पर कपड़ा ज्यूं
ककाळ पर लटक्योडा
हाथां री संझा'ऊं बत्ती
भी लागै कोनी
सरीर रैं सागैं जावैला
जिनगी रैं सागैं आयोडा है।

अैं हाथ……!
महावीर, मसीह, गौतम—गाधी बण्या
दूजां री पीड़ सहळावता
कदेइ थक्या कोनी
आज हाथा मैं'इ पीड इत्ती है—कि
हाथा रा'इ
आंसू अण-पूछ्योड़ा है।

लाज

□ श्यामसुन्दर भारती

जद उण दिन
धान तोलती वेळा
दुकानदार
म्हारी आंख सूं बचायनै
ताकड़ी रै डाटी मारी,
जद म्हारलै मित
म्हारै मुंडै मायै नी
म्हारै सारै म्हारी मूंड बखाणी,
नै जद
उंण दिन दफ्तर में
रिश्वत लेवण सारू वो
टेबल रै नीचे कर
हाथ लाम्बो करियो,
तद म्हूंनै लखायो
कै लोगां री आंख्यां में
हाल तक
लाज बाकी है।

रुवायां

आज आई है जकी बार आ ढळ जावैला
बात ही बात मे सब बात बदळ जावैला
मानखा चेतणो चावै तो चेतजा नीतर
बगत रो जातरू हबकै सू निकळ जावैला ।

□

बिणज बौपार ताईं सगळी रात जागै है
फिकर मे डूबियै री आंख ई नी लागै है
हाय पण खोटियो टक्को ई साथ नी चालै
मानखो सगळी उमर जिण रै लार भागै है ।

□

गीता नै कुराण रो झगडो क्यूं है,
हिन्दू नै मुसळमान रो रगड़ो क्यूं है
क्यूं मानखै री हालत है बिगड़योड़ी
राकसियो अठै देव सू तगड़ो क्यू है ।

सूंटो

□ डॉ० उदयवीर शर्मा

सागीड़ो सूसातो सूंटो, पूण पाण बगतो आवै ।
रूंख धुजीजै पौधा कांपै, पांख पखेरू बिलखावै ॥
रोही रूंखं धूळ उडावै, जीव जिनावर डरपावै ।
तन होणो धाड़ी सो सूंटो, रोही नै लूटै खावै ॥

सूंटै रो सरूप कुण भाखै, कुण खींचै इं रो चितराम ।
सूसाणो सरणाटै जाणो, रूप हीन निरभीक निकाम ॥
प्रलय सरूपी जबरो भाळो, निरमोही पंछ्यां रो काळ ।
घणो कुकर्मी राकस धर्मी, बेमोकै आणो विकराळ ॥

बिरखा ओळा घणै बेग सूं, चढ़ चालै जद पून विवाण ।
रोही कांपै खेती धूजै, आवै फोफां बेपरवाण ॥
डांडा बिलखै रूंखा तिड़कै, पड़ै पखेरू हो विदरूप ।
जद करतो अट्टहास रावणी, सूंटो प्रगटै असली रूप ॥

छान झूंपड़ा मना रूळाए, दीन टापरां रो रख ध्यान ।
रूखायो खावै, काड़पो पीवै, करै गरीबी मे गुजरान ॥
पै गुदड़ा बारै सूकै सो, मना भिगोवै फेरू माग ।
काढै रात गरीबी बैठी, गीला गुदड़ा तन मे माग ॥

दीन हीन जै दुख सूं दाझै, उथळै भूखो नंगो डील।
तो सूटा मत छांट छोडिये, छोड्यां चुभसी जाणै कील॥
दुखिया रा तू छोड़ आसरा, समता रो फटकारो मार।
दुख देवणिया रळै धरा पर, मरकोड़ी बैंज्या री धार॥

पड़या धरा पर सरकी ताण्या, गूड घसीया दुबळा दीन।
बा नेडै जै गयो सूटिया, सै भरज्यासी राख यकीन॥
अध नंगा भूखा दुखियारा, नित उठ अपणो करै जुगाड़।
बा हीणा रो राम रूसरयो तू मत हुमरै चरण बिगाड़॥

खून पसीनो कर दिन तोड़ै, ल्याणो-ग्राणो नित रो काम।
बा कूडा में क्यूं सिर फोड़ै, दया दिखा क्यूं मनड़ो थाम॥
रोटी पोतां बठै न जायै, खाती बेळा नैं तू टाळ।
करम चांदड़ा देख गरीबी, बणी रोटियां गेरै काळ॥

जै सूटा खिमता तेरै में, ऊबड़-खाबड़ नै दे पाट।
डूंगर ढहज्या खाडा भरज्या, सगळी धरती बणै सपाट॥
समता री बरखा तू कर दे, दीन दुख्यां रा दुखड़ा मेट।
मुसरचा, सुसरचा, दबरचा, चिपरचा, पड़्यो कढा्डा भूखो पेट॥

बडा ढलेचा रो के बिगड़ै, सह लेवै वै सगळा ताव।
दीन घरां री उड़ै छानडी, मुरगी रै ताकू रो घाव॥
छाना टपकै आसू टळकै, दोन्यां रो तू दरद पिछाण।
मतना करिये छुंरो राग में; मोटा घर तू काढ श्पाण॥

टाबर जद रोटी नैं कळपै, देख दसा उमळै मां बाप।
रुदन करै बी घर रो कण-कण, कुण देखै मो मूक विलाप॥
बीं घडिया जै तू बढ निकळै, थमिये, मत करिये पद-चाप।
हिवडो है तो बूंद गेर दो, मता वढ़ा बां रो संताप॥

मूंदै माथै पड़यो दीनड़ो, सूंटै चक्कर चढनी छान।
करज कढा कर ग्वाडी बांधी, ढहगी, रुळगो सो सामान॥
ज्यू मंगतै री झोळी मा सूं, लेज्या कोई टुकड़ा चोर।
हाथ साफ करगो ज्यू सूंटो, सुबकै दीनो पड़यो निजोर॥

ठसक छोड़ दे सामन्ती री, पवन-कुळी इब हुवा पिछाण ।
जन मन रै नेहै आ सूटा, मत पीवै दीना रा प्राण ॥
समता रा बादळ ल्या नभ मे, मंगळ रो बरसादे नीर ।
मिटै गरीबी, बचै दीनड़ा, उजळै निखरै राष्ट्र-शरीर ॥

जनहित ध्यान जगा तू सूटा, सुण दीनां री टीस उसास ।
सेवा कर बी लोक-प्रभू री, मन्दिर जी रो दीन-निवास ॥
या जीवन री सार कमाई, करी जिका रो उजळो रूप ।
मठरी चाल, चाल तू प्यारा, जग नै लागै घणो सरूप ॥

वैम

□ रामेश्वरदयाल श्रीमाली

सपनां रै हाथां में बिक म्हे
म्हांरो खुद रो मोल घटायो
जिको ऊजळो सो निकळ्यो हो
वो तो निकळ्यो सफा अन्धारो।

मै'लां री पीड़ावां मिटगी
छैलां नै मिळ गई जवानी
पण गैला में सूवण वाळा
बांधै हाथ भूख रो भारो।

ज्यांरै सोना रा पिलंग है
वै पीवै बिलायती दारू
पण भारी लावण वाळां नै
आटो कोनी मिळै उधारो।

पैला तिकड़म पांण मिळै ही
तिकड़म पाण अजै ऊभी है
चेहरा बदळ्या तो कांई हुवै
नीं बदळ्यो कुरसी रो ढारो।

वै री वै लच्छाळी बातां
वो हंस-हंस नै आगत-सागत

नर को बैरो रब हकीकत
है, है रो रह गई पारो।

नैणां रोटी री आजादी
का किणरी हुवी आजादी
भूखां री कोठड़ियां चालै
आजादी रो टेर पुकारो।

हर भूखै नै रोटी दे दै
हर नागै नै दे दै कपड़ो
बेरुजगारां नै रोजी दे
इतरो कठै राज है थारो ?

कठै तक ?

कठै तक कवि झुर-झुर नै गावै ?
आखरा सू कठै तक भरमावै ?

कुरसियां में जरूर जादू है
जिको बैठै, वो ई बदळ जावै ।

जमानै री हवा रो रंग इसो
जिको देखै, वो ई गंभळ जावै

देवता थापवा रगत चाढ़ां
वो ई परसाद गैल दळ जावै ।

लोग भण्डार भर दुबळा दीसै
नै म्हानै वातड़ी सू पोमावै ।

पाँच ल्होड़ी कवितावां

□ सांवर दइया

अरदास

आभै री अणंत कोरां तांई पूग
टाबरां खातर चुग्गो भेळो कर
सिझ्या पाछो वावड़ सकूं आळै में
वा पांख दीजै म्हनै

जुगां सूं अंधारै मे गम्योड़ा
सुखां रा मारग सोध सकूं
भावी मानखै खातर
वा आंख दीजै म्हनै

नींतर ओ मालक !
मैं'र रै नांवै
मैं'र कर'र
कोई मैं'र मत करीजै
म्हारै माथै !

दो रूप

कठैई तो
भाग फाटताई
मोतिनिया बिखरै है

गुलाब रै फूला पर दमकतो
टोपा-टोपा ठंरघोड़ो पाणी
—आ जिन्दगाणी !

अर कठैई
अभावा री भट्ठी मे
नितूकी जरूरतां रै तवै माथै
टोपा-टोपा पड़तो पाणी
—आ जिन्दगाणी !

जात्रा

धरती-दफ्तर री पैली शिफट सू
छूट'र आवतै
तप्यै-थक्यै सूरज री अगवानी खातर
सिंदूरी साड़ी पैरयां ऊभी मिंझ्या
हेताळू हाथां सू परसती बीरो डील
लेयगी समन्दर-महलां में
रातवासै खातर

दिन ऊग्यो तो
भोर रो बुक्को लेय'र
सूरज टुरग्यो पाछो
सागी आवा माथै
उजास बांटण खातर—
घर कूचां : घर मजलां !

घाणी में जुत्यां पछै...

उमर रै जादूगरियै
केसां रै कर न्हाखी
चांदी री कळी
पाण आयोड़ै डील माथै—
पड़ग्या सळ
ढीता हुय'र लटकग्या—
डूंगरिया उरमा

इण घाणी में जुत्यां पछै
कुण जाणै किसी गळी
नाठग्या उमाव
सींवणा सुपनां सजावण आळी आद्या मे
हेरो म्हाख्यो परबिद री चिन्तावा
भांत-भांत री
राग रागणियां री जग्या
गीतां मे बसग्या—
आटै दाळ रा भाव !

बदळाव

सुण भायला
बै दिन गया
जद थारै आवण री खबर सुणतांई
म्हारो मन करण लागतो पड़ी
अबै तू आवै जणा
मुळक र मिलूं तो सरी
पण मन में सोचतो रंवू—
आछो अळयत गसै पड़ी !

म्हूं अर म्हारी भोम

□ सुरेश पारीक 'शशिकर'

कतरी आछी लागे म्हनै या भोम
इं पर उगेड़ा हरया हरया रूंख
बादळा सू बाता करता
ऊंचा ऊंचा डूगर
कळ कळ करती
बारा मास बैवती नद्या
झरमर झरमर झरता
निरमळ पाणी रा झरणा
जे मिनख सुरग रा मोटो मोटा
सपना संजोवै
वानै किया समझाऊं
या बात वा रे हिवड़ा म्हैं
कणी भांत रमाऊ
कै जठे जिनगानी रा मीठा
नत नुवा गीतड़ा गूंजे
मिनख मिनख रे मागे
माटा नै भगवान वणा पूजे
मन जणी ठोर पैठ
आंख मीच खुशी रो हिंडोळो झूलै
मन रा बागा म्हैं परेम रा

फूलड़ा फूलै
म्हैं, सांच पूछो तो
उण ठौर नैं ही सुरग जाणूं हूं।
उठै ही राम राज मानूं हूं॥

जग री चावना

□ गिरधारीसिंह राजावत

आज
ओ आखो जग
चोर है, भ्रष्ट है
लुच्चो है, लफंगो है
अर स्वार्थी है।
पणं थारं में
आमे सूं एक भी अवगुण
मोजूद व्है;
आ समाज नै
फूटी आंख ही नी सुहावै।

जग
कसो' ई बुरो है
पणं तनै तो
निष्ठावान, विश्वासजोग
नेक, शरीफ, त्यागी
अर सेवा-भावी
यानि दूध रो धोयो'ड
देखणों चावै।

बात कुछ अटपटी है
पण वाजिब भी है

क्यूं'क---
आं काची कूपळां पर
थारै ही व्यक्तित्व रो प्रभाव
घणो पड़ै है !

अंधारो अर उजाळो

□ जयसिंह चौहान 'जौहरी'

अणचाया अँधारा खिण मोकळो दुख बिखेर देसी,
सिन्ध्या ढलता उपरान्त ऊँघाणी आंख्यां पै पलक पड़ जासी
नीदड़ल्यां सपना में दुखती दरद भर जासी
सुणसाण आब पै सन्नाटो तिर जासी
अर कुन्दण कोरां पै काळी ओळां फिर जासी
इण रै विपरीत—
दुरासाऊँ भरी चाँदणी ने रूँद र
जिण बेळां भभक तो भाण ऊगसी
उण वेळां उजळा जासी मन री घेरी घाटियां
सुळग जासी आसा-रूँख री रातोड़ची कूंपळां
पिगळ जासी हिवडा-हिमाळा री हेम कुम्हियां
अर हुळस जासी ज्ञान-माटी री मोवन मणियां
घणी टणकी विथा करे आंथूणे अँधारा सू
उजळ उगाण री वेळां।

अमरोष

□ नन्दकिशोर चतुर्वेदी

म्हें जाण्यों हो कै
कटगी अबे अन्धारा री काळ रात
आकाश मे उग्यो
नवूं सूरज नुवीं रोशनी सागे
अबे सूना आंगणा
वैरान बगीच्या
अर सूखा खेतां में
बेवेला सावणी पून
टूटेला सरणाटा री मून
काल तक ज्यां नामा रो जादू
चमके हो सूरज ताईं
गमके ही व्हासूं भारत री तरुणाई
मोटा शहर रा राजकीय बाग ज्यूं
सबै और चरम सुखां री
अणहद नाद रा आनन्द सी
अनुभूति गमकै ही
कै अब सुखिया रा खेत मे
पटवारी पुलिस रा अड़ंगा नी लागै
न चक्कर लागै
कचेरी रा हाकमां री कुर्सी रे
क्यूं के बदलग्या है

लोग अर व्हांका चेहरा
व्ही अणचीत्या तूफान मे
पण ओ काई
भरया दोपेरा पड़गी धुंन्ध
गेरो अन्धारो
चालगी लूट, चारूं खूट

मियानो कुण देव ?

□ दूर्वासिंह काठात

जेठ री घू घू करती
'लू' मांय तपै,
चोटी सूं एडी तांई पाणी झरै
जाणे स्वांत बूंदों झरै ।
घणेरा फागण आया अर गिया
पण
घूघरों री घमरोळ
अर चंग माथै थाप
रै साथै
थिरकणो कद भूल्यो ।
सिंच्या खेतों पर पूगै—
अर देखै
वा पाणी पी भूख बुझाती मरवण
पण
कुळ्ळाट करता भूखा टाबर
वांनै हिवड़ा
रै चेप
संतोष री गुटकी दै ।
अस्यो सन्तोष अर टाबर
आकास-पाताळ मांय
नी दीसै ।

जाणै उण रा खेतों मांय
संतोष नीपजै,
क्रान्ति री ठौड
गाँधी रा
आखर उगै ।
खेती सूखै
धन चूकै
घर-बार ढसै
पण ओ लाडलो
साबरमती रा
'राम-राज' रा गीत गावै ।
वो किण रै आगै हड़ताल करै
वो किण रै आगै माग करै
वो किण रै आगै परदरसण करै
इण सवालों रो मियानो
कुण देवै ?

पंखेरू

□ ज्ञानसिंह चौहान

सुणज्यै भाई सांची वातां,
कान लगाज्यै काठा ।
गरज पड़ै तो हलवो हालै
नी तर कोरा रोठा ॥

बोल्यो बोल्यो' रे पंखेरू मनमौजी बोल्यो ।
बोल्यो बोल्यो रे सयाणो मतवाळो बोल्यो ॥
मतलब मीठो, स्वारथ सांचो,
गरज गूजरी बोलै ।
मौकै मौकै मूंडै ताळा,
'लिछमी' मूंडो खोलै ॥

बोल्यो बोल्यो रे···
बोल्यो बोल्यो रे···
दही दूध माखण रो लोभ्यो,
'कान्हो' नाचै गावै ।
जूण बदळतां जुग जुग जावै,
धूणी धणा तपावै ॥

बोल्यो बोल्यो रे···
बोल्यो बोल्यो रे···

बल द्वारे बावन बण बोल्यो,
''नान्हो कान्हो द्वारे ।''
गरज नहीं मुख फूल्ये बोलै,
''काम कंई है थारे ?'' ॥

बोल्यो बोल्यो रे···
बोल्यो बोल्यो रे···
माखण बाँट्यो, ग्वाल्या भेळा,
खम्या खेंखरा, नाच्या भेळा ।
सुण रे कान्हा कान लगाज्यें,
भारत में कद मेळा ॥

बोल्यो बोल्यो रे···
बोल्यो बोल्यो रे···
दूजां नै ओ 'दूदो' दाखै,
तिल रो ताड़ बणावै ।
काँख उघाड़ो मैंरा भाई,
हाथी गोता खावै ॥

बोल्यो बोल्यो रे···
बोल्यो बोल्यो रे···
भूखो बांध्यां पाटी सूतो,
धाप्यो जगत जगावै ।
मूख पसीनो देय बणावै,
धाप्यो आग लगावै ॥

बोल्यो बोल्यो रे···
बोल्यो बोल्यो रे···
नेम धरम भूखां रै पाँती,
धाप्यां रै गळियारा ।
साँचै काळिख, रंग्या मिलै है,
धाप्यां रा अणियारा ॥

बोल्यो बोल्यो रे···
बोल्यो बोल्यो रे···

सांच लबरका पैर्यां डोलै,
झूठ 'सूट' में सोवै ।
नहीं सांचनै चणा चबीणा,
झूठ जलेबी खावै ।।

बोल्यो बोल्यो रे···
बोल्यो बोल्यो रे···
मैं'ल माळिया माल मलीदा,
दो 'नंबर' री यारी ।
जळक जळक झांकै झूंपी सू,
खरी कमाई खारी ।।

बोल्यो बोल्यो रे···
बोल्यो बोल्यो रे···
नीर छीर मतळब रा बेली,
तप आयां उड जावै ।
सांची बातां तीखी तीखी
मोर पांख यू गावै ।।

बोल्यो बोल्यो रे···
बोल्यो बोल्यो रे···

अजूबो

□ मगरचन्द्र दवे

किता अजूबा होवे है ए लोग…!
चोर ने केवे
तू चोरी कर
कुत्ता ने केवे
सावचेत हो'र भूंकतो रीजे
ने, रखवाळिया ने केवे—
चेत'र रीजो—गड़बड सुणीजे है…!

बूआल्डी ने केवे
डोसी खूसट है…
बावा आदम रे जमाना री वार्तां करे
आखो-दिन गाडियोडा मुर्दा उखाडे
आगे ही जाय'र सासु ने बतळावे—
बीदणी ने लाज-शरम कोनी
बडा-बुजुर्गां री मे
की नी समझे…
गांवडा री रीत-भांत सु तो—
उण रो की नी लेणो-देणो…

कैसा होवे है ए लोग…!
जिण नें—

मिनख-मिनख ने लड़ावण में इज—
आणन्द आवै !
घर उजड़ता देख
वाँ री छात्यां ठंडी होवै…
कित्ता अजूबा होवे है ए लोग…?

थांरो सूरज तूंई उगाव

□ वासु आचार्य

इंयां-किंयां पार पड़ैला
नीं पड़ैला
उखड़ जायला
म्हारा भायला
जमणे सूं पैली ही पग।

थोथी थाप्यां रै विसवास
फूरण्या फुलायां
डोळा घुमायां
और भवारां ताण्यां
लपर चपर जीभ चलायां
कोई चोळको नीं हुवेला

उखड़ जायला
म्हारा भायला
जमणे सूं पैली ही पग

ई खातर
जे चावै ऊगणों
मंजल माथे
चावै पूगणों
तो फूल पत्ता डाळयां सूं पैली

बीज कांनी निजर पसार
बीरी पीड़ जाण पिछाण

इं खातर
हिये मे ठावस
माथै में मजबूती धार
सुणनी सबरी
करणी मनरी
माईतां री इयै सीखरी
बांध गांठड़ी
पैर पगरखी
वार निसर

सनै उडीकै—
गांव—
गांव री पगडान्ड्यां
कांटां भरिया जां रा रस्ता
बे झूपड़ल्यां अर बे ढाण्या

निजू आशा मति भरोसै
नूंई चेतणां
तू फैलाव
अमूजै मरियै आभै में
थारो सूरज तू ही उगाव
थारो सूरज तूंई उगाव

थे

रूपसिंह राठोड़

हूँ...तो
दूध रो दाज्योड़ो
छा नैं
फूंक-फूक नैं पीऊं
एक रै हो
कै वळै टै पर
लूण और बुरको
इण वास्तै—
कै हूँ सदा—
इस्योई लादूं—
नैं मरूं नैं जीऊं।
हूँ नी जाणतो—
कै—आ पांगळी डाकण—
धरकां नैं इज खासी
सांप रा पग—
अलाय इज जाणै—
म्हानैं के बैरो हो—
रै कंकैई मां—
ईंडा दे जाळ मां।
खैर ! कोई बात नीं—
टकै री हांडी फूटी—

गंडक री जात गई—
म्है तो इस्याई लादांना
थारी इज वात गई ।
किता कांइया हो थे
खुद इज फंसाय
जमानत वी लेल्यो
उणासूं—
पुचकारो वी थे
अर जरको वी देल्यो ।
चींमटाऊं रौकणियो
भेख वदलण मा
थे हो पूरा भांड
म्हानें तो मौत
ऊपरांऊं पड़धाई कोनी मिलै
कै थारी
पाटईंऊं पड़ताईं
होज्या नानी रांड ।
कंवा नैं तो
थे हो
लिछमी रा पूरा
पूत—
अकल रो
दिवाळो निसरग्यो
दीसै
थे म्हावाळा हो
जूत ।
कितणाक रोवै
टाबर टीकर—
कितणीक रोवै
नार अभागण
जिका नाथै
थारै मिर-माटी गारो
मरज्यावो नाक डबोर
ढकणीं मा—

धरख है
थारो मिनख जंवारो।
थारै हियै री
कयां फूटी—
इब मोत थारै सिर गाजै
कै सायरां ठीक इज कैयी
मौत आयो गादड़ो
गांव कानी भाजै।
ओजूं बी
म्है गयी गैलनै
देदूयां—
जे—ये—ल्यो
आगै री सुद
नी—तो
ल्यावैला कागला हाडी
माचैलो
इस्यो जुद।

म्हैं अबीजी चढ़ रयी हूं...

□ मण्डलदत्त व्यास 'पथिक'

रूंख
थारै ग्यान रो
ओ !
पसरियोड़ो आर-पार
लोक-परलोक
दिगदिगन्त (च्यारु कूंट)
जिणंरी छांव नीचे
निपजती ही जारयी है
करुणा भर्योड़ी कूंपळां
फूल साहित रा रंगीला
जूनें जुग री जाजमां में
झटक नें
नुवी मसनद री बिछावतां
इण छांव नीचे सैं मिळै है।
अर म्हैं,
बेलड़ी लड़थड़ावती
जड़ पड़ी
लिपट नै
ऊंची चढ़ण री चाह लियां
उग रयी हूं।
फूल री फाटी मुंफाड़ां

कूपळां नुवी नुवी है
तात रा बाहु लचीला
खुरदरे थारे तणे पर
सिरकती बळ खावती
म्हैं अबीजी चढ़ रयी हूं ।

सीळी झील

□ प्रेम शेखावत 'पंछी'

चांद आधो टूट'र
हमेस घुब जावै है झील री छाती में
जरूरी तो नीं है हर नाव रै वास्ते
एक किनारा रो अस्तित्व ।
मत सोचो !
झूंठा वायदां रा चिनार
कै अबै इण गूंगी झील में
कोई जुवार नीं है ।
टूटबा सूं पैली
थकीज्योड़ी लहरां इण भांत कह्यो कै—
सीळा सांसां री चिणगारियां इज
घणी नीं है
अधजळ्यो सिळो जळाबा नै ।
पण
अनाथ मजबूर्‌यां रो
एक ही कांटो घणो है—
जिंदगी भर हंसबा रुलाबा नै ।

एक कविता

□ नमोनाथ अवस्थी

ज्यूं ज्यूं बढ़ै है मिनख ऊपर
कम होवै है ठोर अर
छावण लागै है ब्यारूं मेर सूं संघर्ष,
अगाड़ी होवै है देखण हाळा रो फिकर
अर पड़दा रै मांय सूं
उफणै है डरावणी खबरां।

मिनख कई बार
झूंठा सांच सूं डर'र भागै है।
पण सनमान अर जिनगाणी री एप्यासी
थाम लेवै है बीं रो हाथ—

जद मन पैसी बार,
जाण सकै है क
टैम घणो थोड़ो है अर काम ज्यादा।
इण चाल चूक मं
नी तो बो सोवै अर नी किणी नै सोवण दे।

इण ठोर सूं ई
अेक पगडण्डी मुड़ै है
जठै मिनख
अेक चतुर बैरुपिया री नाई लागै है।

मनड़ो

□ कैलाश 'मनहर'

आंसू आसूं भीज्यो मनड़ो
दरदा दरदां छीज्यो मनड़ो
मौत मायली आय मिलै कद ?
जिनगानी सूं खीज्यो मनड़ो…

रातां रातां रोवै मनड़ो।
बीज प्यार रो बोवै मनड़ो
कोई तो हिमलास बंधावै
बाट जिणा री जोवै मनड़ो…

खिचग्यो थारै मांई मनड़ो
बुरी करी छी कांई मनड़ो
मरवा नै छै प्यार बापड़ो
देखो थारै तांई मनड़ो…

जेठ-वैसाख

□ चमन वी० राव

बीजण चमकसी
सूरज मे,
बूढण पाणी—
परकास ।
टपकै बूंद-बूंद तन स
क्यू लागै
पिव प्यास ।

एक च्यूंटी तावड़ी

□ रामस्वरूप परेश

कुण बसेरी
तागळी-सा आगणा मे
एक च्यूंटी तावड़ी
जिनग्यानी थांदै अठै सूदी
गै जेज री जूती करै गूंदी
गूंळै चिपरी उजळी किरण
आगुवा सू पांपरै अंधारी डावड़ी
एक च्यूंटी तावड़ी

नित नुंवा गाभा बदळले अपणेस
माणपो दे पणेरा प्रीत रा उपदेश
एवड़-छेवट मिनख मोकळा
पण मिनख रै बीच लागू मावड़ी
एक च्यूंटी तावड़ी

छिपकल्यां रो डर पणेरो घैर
इजगरा रो पोळियो ळै पैर
बायरा रै सागै सागै चाल
हियारी सी गळपां कर सावड़ी
एक च्यूंटी तावड़ी

बारणा पर मंडरचा उड़ता मोर
आंगणां में लुखरघा डाकू-चोर
आखरां रा बदळग्या सैं अरथ
मांणखा नैं तोल बदळ ताकड़ी
एक च्यूंटी तावड़ी।

जेज री डोळी मतां डाकै

जेज री डोळी मतां डाकै।
प्रीत री पोळी मतां झांकै।

चांद सूं धूळ तू ल्यायो
समदरां लूण ही पायो
जमी सूं ले गिगन तांई
निस्फळ तू मतां थाकै
जेज री डोळी मता डाकै

जमी पर पग जमैं कोनी
गिगन मे तू थमैं कोनी
सुरग नैं ता'र म्हे ल्यास्यां
अणूंती बात मत भाकै
जेज री डोळी मतां डाकै

कठै इतियास तू बणरयो
कठै भूगोल तू भणरयो
किणी रै घाव नैं सींता
के थारी आंगळी पाकै
जेज री डोळी मतां डाकै

घुसी रा धूंजिया रीता
दर्द पण लाग्य अणचीता
तू मांडै मांडणा कूळं
चौक मे धापड्यां पापं
जेज री डोळी मतां डाकै

मरुधर बीच

□ रमेशचन्द्र शर्मा 'इन्दु'

बादळ पाणी दे या ना दे म्हां पाणी तलवारां में ।
रही जवानी सदा उफणती मरुधर बीच कटारा मे ।।

भूखो नाहरियो मर जासी, पण मांग जुगाळी कौण करै ।
चातरूडो प्यासो मर जासी चूच तलावां कौण धरै ।।
राज-थली रो रगत अस्यो रे, आख्या पाणी कौण भरै ।
जुग जुग पड्या अकाळ घणां पण मूछ्या नीची कौण करै ।।
कै वैरया रो रगत पियो कै कूद पड्या अंगारा मे ।।
रही जुवानी सदां उफणती...।।

घोघा वाप्पा, कुम्भा, सांगा, अण खायां जुग मौत लड्या ।
गोरा-बादळ, दुर्गा-दादो बूद रगत तक लड्या भिड्या ।।
छपना भोग तज्या म्हेला रा, अपणां हाथां जौर करयो ।
चूडावत नैं हाडा राणी सीस काट नैं सूंप दियो ।।
मेवाड पती (राणा) रो पाणी कोनी मायो नद्दी नाळा मे ।।
रही जुवानी सदां उफणती...।।

धिरया विपत रा बादळ मुड मुड़ सत री बाट तजी कोनी ।
जीवन दान दियो जुग जुग नैं मागी भीख कदां कोनी ।।
सदा लोहडो गळै लगायो, सोना री आस करी कोनी ।
दई राम सो लई बाजरी भाता री बाथ भरी कोनी ।।

मात पालणं मरण मिखायो भगणो कौण हजारां मे ।।
रही जुवानी सदां उफणती... ।।

घणा खून री नद्यां भवाई, आज पसीनो भावेला ।
सूखा रेतां रा टीबा मा गीदा धान उगावेला ।।
मारु रा राग घणा गाया, फमळा रा गीत सुणावेला ।
जुग-जुग रो साथ सदां दीयो या जुग री साथ निभावेला ।
भुज-दण्डा रो जोर करां भावां गंगा मरु-सारां मे ।।
रही जुवानी सदां उफणती...।।

गीत

□ रामनिवास सोनी

चाल अगाड़ी चाल बटाऊ थनें चालणो पड़सी ।
हिम्मत हारयाँ नहीं सरेला थांरी जूण सुधरसी ।।

मारग रे काँटां भूटां री करले नेक पिछाण ।
सुख रा साथी मिलें मोकळा दु:ख रा हेत अजाण ।।
जीवन लांबो खेत उमर भर थनें लाटणो पड़सी ।।
चाल अगाड़ी... ।।

जमी उगाळे आग गिगन सूं बळझळ खीरा उपड़े ।
मोटा टोळ करे अरड़ाटा मौत मानवी झकड़े ।।
भाग भरोसे रे मत भोळा पीड़ बांटणो पड़सी ।।
चाल अगाड़ी... ।।

बपूं आकासी निजरां ताके छोड पराई आस ।
स्वाती बूंद ओस रे टपकै कियां बुझेला प्यास ।।
प्रीत पुराणी पथ कंटीलो थकें काटणो पड़सी ।।
चाल अगाड़ी... ।।

आदमीं अर आदमीं

□ मोहम्मद सदीक

आदमीं रै आदमी झंरूटिया भरै ।
चूंट लेवै चामड़ी चरूटिया भरै ॥
खींच लेवे खालड़ी भंरूंटिया भरै ।
म्हारे म्हारा आदमी झंरूंटिया भरै ॥

रूपां-रूड़ो मानखो तो सामने मरै ।
काची काची कूंपळां सै ऊगती डरै ॥
कूकड़े ज्यूं आदमो अकूरड़ी चरै ।
माटी रा खिलूणा अठ्ठै टूटिया करै ॥

लागी देख लाय जठ्ठै लोगड़ा डरै ।
फूसका रै ढेर माथै आग क्यूं धरै ॥
हीये मां लो धाव किसी वातस्यूं भरै ।
आसरो उजास बठ्ठे रूठिया करै ॥

ठूंठ हाळी ठोड़ किसी मींझरां झरै ।
बाकेरो बखाण किसी पीड़ ने हरै ॥
हाजमा-हजूर थारे आदमो जरै ।
पीड़ा ने पळोस पाछे सूटिया करै ॥

जामणी रा जाया हाय खून स्यूं भरै ।
लोई रो तळाव देख पाळ रे परै ॥
काळजे मे हूक उठयां नैण तो झरै ॥
होणे हाथा आरसी जे छूटिया करै ॥
पाणी रे पतासे नाई फूटिया करै ॥"

रोजीना रामा'ण

सूने-सूने पीजरे रा खाली खाली खण है
भोळै भोळै चेरां माथे
दुखड़ां रा वण है ।
घूघरां मे गूंज कोनी
कोरी भण-भण है ।
बांझडी ने बेटा अर-हीजड़ां रा गण है ।
सूने-सूने पीजरे रा खाली खाली खण है ॥

आसा री उडार म्हारी
आकासां मे छा'री है ।
माड़ी नीत आदमीं री
आदमी ने खा'री है ।
लागे जाणे फीफरां में
सांस जम्मी जा'री है
भूवाजी मल्लार म्हारे
आंगणे मे गा'री है
रोजीना रामा'ण अठ्ठे पग-पग रण है ।
बोले जिकै मूंडै माथै मोटा-मोटा घण है ॥

काचरो है कातरो—रे
ध्यान राख घात—रो
फाड़ देवै दूध ओ तो
आदमी री जात—रो

थोड़ो-घणो मोल करै
सामलै री लातरो—
बाजरी रा सिट्टा कोनी—सांपलां रा फण है .

धोळी धोळी वातां बिच्चे
काळा काळा तिल है
धोरा हाळी धरती माये
सांपलां रा बिल है ।
काळजे री ठोड़ अठ्ठे
खाटू हाळी सिल है
कीडी ने तो कण कोनी—हाथीड़ां ने मण है ।
कामधेनू कोनी ईंरा खाली खाली थण है ।

मिलण री वेळा आई रे

□ बुलाकीदास बावरा

आज मिनख रै माथै माथै पाग सवाई रे।
मिलण री बेळा आई रे।

दबियोड़ी ही ओग रेत स्यूं।
दुवक्योड़ा हा ताळ;
इण विध आधी आई ही
कै जीणों हो बेहाल;
पण बीती बा रैण, प्रभाती राग सुहाई रे।
मिलण री बेळा आई रे।

आशा रे इण तम्बूरे रा
कसबा लाग्या तार;
घड़ी हरख री पूठी आई,
दु:ख नै दिवो विसार,
आयो रे जनराज, मना री करो सफाई रे।
मिलण री बेळा आई रे।

क्यूं करड़ांवण करै सावणिया ?
थारी बीती बार;
नाळपा स्यूं परणीजै मुरवा,
थारा दिनड़ा चार;

धमक उठयो नहरथा रो पाणी, अम्बर ताँई रे।
मिलण री बेळा आई रे।

तू मालक थारी मेहनत रो,
थारी किसमत आला;
नुंवो जमानो थारै घर में—
फेरै जस री माळा;
रगड़ा-झगड़ा छोड़, उठो सै लोग लुगाई रे।
मिलण री बेळा आई रे।

उलट घूंघटो आ बोलेली,
बळधां ने दो छोड़;
छुक-छुक करते टेक्टरियें स्यूं
सैंदो नातो जोड़;
मिट जासी सो लोई-चून्यो, घणी कमाई रे।
मिलण री बेळा आई रे।

बीज घणा रे, खाद घणो है
थांरी हिक्मत नाचै;
इण माटी रे हाथां माथे
कुदरत मैंदी राचै;
थारै आगण सुगनी नाचै, साख सुहाई रे।
मिलण री बेळा आई रे।

ठिकाणां लेखकां रा

अर्जुनसिंह 'अरविन्द', काली पलटन रोड, टोंक।
अर्जुनसिंह शेखावत, प्र० अ०, उ० प्रा० विद्या० फालना गाँव, पाली।
ईश्वरसिंह कुलहरि, प्र० अ०, रा० मा० विद्या० ढांढण, सीकर।
डॉ० उदयवीर शर्मा, प्र० अ०, रा० मा० विद्या० बड़वासी, झुंझुनू।
ओमदत्त जोशी, स० अ०, रा० मा० विद्या० बाघसूरी, अजमेर।
कल्याण गौतम, डिंगल साहित्य सदन, चौतीना कुवा, बीकानेर।
कुन्दनसिंह 'सजल', स० अ०, रा० मा० विद्या० पाटन, सीकर।
कैलाश मनहर, स्वामी मोहल्ला, मनोहरपुर, जयपुर।
गिरधारीसिंह राजावत, रा० मा० विद्या० कोलिया, नागौर।
चमन श्री. राव, म० अ० रा० मा० विद्या० कानोड, उदयपुर।
जयसिंह चौहान 'जौहरी', जौहरी सदन, कानोड़, उदयपुर।
दीपचन्द सुथार, रा० उ० प्रा० विद्या० नं० १, मेड़ता सिटी, नागौर।
दूर्दसिंह काठाल, व० अ०, रा० उ० मा० वि० देवगढ मदारिया, उदयपुर।
नमोनाथ अवस्थी, ख. वैश्य प्रा० वि० हीदा की मोरी, रामगंज, जयपुर।
नन्दकिशोर चतुर्वेदी पो० पाछुन्दा, वाया बेगू, चितौडगढ।
डॉ० नृसिंह राजपुरोहित, पुरोहित कुटीर, पाडप, बाड़मेर।
प्रेम शेखावत 'पछी', पो० नागल कोजू, वाया इटावा भोपजी, जयपुर।
प्र० ना० कौशिक, प्राचार्य, बिहाणी शिक्षण महाविद्यालय, श्री गंगानगर।
ब्रजलाल स्वामी, रा० उ० मा० विद्या० मालारामपुरा, श्रीगंगानगर।
बुलाकीदास 'बावरा', सूरसागर के पास, बीकानेर।
भगवतीलाल व्यास, व्याख्याता, तिलक टी. टी. कॉलेज, डबोक, उदयपुर।
भोलालाल व्यास, राज० मा० विद्या० अजीत।
मगरचन्द दवे, स० अ०, रा० मा० विद्या० हरजी, जालौर।
मीठालाल खत्री रा० प्रा० विद्या० सांडवाव, जालौर।
मुरलीधर शर्मा 'विमल' रा० मा० विद्यालय, मेडता शहर।
मोहम्मद सदीक, रानी बाजार, बीकानेर।
मंडलदत्त व्यास, रा० उ० प्रा० विद्या० नं० २, मेडता सिटी नागौर।
रूपसिंह राठौड़, स० अ०, रा० उ० प्रा० विद्या० वास घासीराम, झुंझुनू।
रमेशचन्द्र शर्मा 'इन्दु' रा० उ० मा० विद्या० गोह, वाया खेरली, अलवर।
रामनिवास सोनी, भगतजी की पोल, मेड़ता शहर, नागौर।
रामस्वरूप परेश, पीरामल उ० मा० विद्या० बगड, झुंझुनू।
रामेश्वरदयाल श्रीमाली, प्र० अ०, रा० मा० विद्यालय, जवाली, पाली।
लेखराम सोनी, रा० उ० मा० विद्यालय, मालारामपुरा, श्रीगंगानगर।
वासु आचार्य, बाहेती चौक, बीकानेर।
श्यामसुन्दर भारती, रा० उ० मा० विद्यालय, गुढा बालोतान, जालौर।
श्रीनन्दन चतुर्वेदी, १४/३१६, बजाज खाना, डाकोतपाड़ा, कोटा-६।
सांवर दइया, जेल रोड, बीकानेर।
सुरेन्द्र अंचल, रा० उ० मा० विद्या० भीम, उदयपुर।
सुरेश पारीक शशिकर, स० अ०, रा० मा० विद्या० हुरडा, भीलवाड़ा।
शार्नसिंह चौहान, व० अ०, रा० उ० मा० विद्या० टाडगढ़, अजमेर।